CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकइसवीं सदी में भोजपुरी

संपादक :
नागेन्द्र प्रसाद सिंह
प्रो. ब्रजकिशोर
कृष्णानन्द कृष्ण

भोजपुरी साहित्य संस्थान, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकइसवीं सदी में भोजपुरी

(चिन्तन-प्रधान निबंध संकलन)

संपादक :
नागेन्द्र प्रसाद सिंह
प्रो॰ ब्रजकिशोर
कृष्णानन्द कृष्ण

भोजपुरी साहित्य संस्थान
श्रीभवन, मुहम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-6

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

● प्रकाशक :
भोजपुरी साहित्य संस्थान
श्रीभवन, मुहम्मदपुर लेन
महेन्द्रू, पटना-6

● संस्करण :
पहिल : अक्टूबर, 1999

● सर्वाधिकार : सम्पादक

● मूल्य :
रु० 51/- (एकावन रुपया मात्र)

● वर्ण-संयोजन :
जे० एम० कम्प्यूटर्स
लोहानीपुर, कदमकुआँ
पटना-800 003
फोन-(0612) 681850

● मुद्रक :
स्वास्तिक प्रिंट्स
पथ 4, काजीपुर क्वार्टर्स
पटना - 800 004

EKAASSVIN SADI MEN BHOJPURI

(Collection of Essays in Bhojpuri)

Editors : Nagendra Prasad Sinha, Prof. Brajkishore & Krishnanand Kishna

Price : Rs. 51/- (Fiftyone) only

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगरासन

काल (समय) के गति अनन्त ह जवन आज भविष्य बा, ऊ काल्ह वर्त्तमान बनी; बाकिर जब ऊ आई, त ओकर जमीन उहे होई, जवन आज वर्त्तमान बा । जवन आई, ऊ अपना संगे कुछ अइसन लिहले आई, जवन आज नइखे; बाकिर ऊ वर्त्तमान का सभ कुछ के पूरा-पूरी नष्ट ना कर सकी । ई प्रकृति के नियम ह, जवन कवनो समाज, संस्कृति आ भाषा-साहित्य खातिरो ओतने साँच बा । अइसे महाप्रलय के बात त अलगे बा ।

बीसवीं शताब्दी बिदा माँग रहल बा । एकसवीं शताब्दी दुआर पर खड़ा बा- दस्तक दे रहल बा । पूरा विश्व जीवन का हर क्षेत्र में एकइसवीं शताब्दी का स्वागत खातिर चिन्तित बा । अपना एह अतिथि का योग्य स्वागत खातिर सभे ओकरा रूप-रंग, चाल-चलन, बात-सुभाव आ रूचि-अरूचि का विषय में आपन-आपन परिकल्पना क रहल बा । जीवन का हर क्षेत्र में एकरा असर के बारे में लोग के चिन्तन चल रहल बा।

स्वाभाविक बा कि भोजपुरी समाज, संस्कृति, भाषा आ साहित्य के प्रगतिशील अगुआ लोग एह विश्व-चिन्तन का यज्ञ में आपन आहुति डाल रहल बा ।

'एकइसवीं सदी आ भोजपुरी' में अइसने 12 गो मनस्वी चिन्तक लोग के भोजपुरी समाज, संस्कृति, भाषा, साहित्य के विभिन्न विधा आ स्तरन पर आयोजित चिन्तन के सारांश के संकलन ओह लोग का आलेख के रूप में संकलित कइल गइल बा, जवन सुधी पाठक लोग का सोझा विचार-विमर्श खातिर प्रस्तुत बा ।

कवनो आवश्यक नइखे कि संकलन के एह चिन्तन के व्यक्तिगत स्थापना से शत-प्रतिशत राउर सहमति होई; बाकिर व्यापक सामूहिक चिन्तन खातिर जमीन बनावे में ई प्रस्थान-बिन्दु के काम करी- ई विश्वास बा ।

एकइसवीं सदी भोजपुरी समाज, संस्कृति, भाषा आ साहित्य का सोझा जवन चुनौती ले के आ रहल बा, ओकर मुकाबला क के अपना समाज, संस्कृति भाषा आ साहित्य के पहचान कइसे अक्षुण्ण राखल जाय, एहू दिसाईं ई संकलन उपयोगी सिद्ध होई ।

हमनी के विश्वास बा सुधी पाठक आ भोजपुरी विद्वान, साहित्यकार आ अध्येता लोग आपन प्रतिक्रिया से अवगत कराई ।

त आईं, बीसवीं शताब्दी के विदा करीं आ एकइसवीं सदी के स्वागत के तइयारी करीं ।

पटना —संपादक

विजयादशमी, 1999

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रम

● **आधार लेख**

भोजपुरी आ एक़इसवीं शताब्दी के चुनौती : नागेन्द्र प्रसाद सिंह 5

● **पत्रकारिता**

भोजपुरी पत्रकारिता आ एकइसवीं सदी : प्रो॰ ब्रजकिशोर 13

● **कहानी**

एकइसवीं शताब्दी में भोजपुरी कहानी के स्वरूप : कृष्णानन्द कृष्ण 26

● **लघुकथा**

भोजपुरी लघुकथाः विकास आ संभावना : सूर्यदेव पाठक 'पराग' 37

● **उपन्यास**

भोजपुरी उपन्यास आ एकइसवीं सदी : रूपश्री 44

● **निबंध**

एकइसवीं सदी के विधा, निबंध : जीतेन्द्र वर्मा 48

● **कविता**

एकइसवीं सदी में भोजपुरी कविता : दीप्ति 54

● **दलित साहित्य**

अगिला सदी में दलित-साहित्य मुख्य धारा बनी : उमा वर्मा 56

● **समाज**

एकइसवीं शताब्दी आ भोजपुरी समाज : राकेश प्रवीर 59

● **नैतिकता आ साहित्य**

एकइसवीं सदी में भोजपुरी समाज, नैतिकता आ साहित्य : रूचिका रंजन 63

● **शिक्षा**

एकइसवीं सदी गवाह बनी : सुप्रिया तृप्ति 67

● **संगठन**

एकइसवीं सदी में भोजपुरी संगठन, समाज आ साहित्य : रंजन कुमार 69

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधार लेख

भोजपुरी आ एकइसवीं शताब्दी के चुनौती

□ नागेन्द्र प्रसाद सिंह
उपाध्यक्ष, विश्व भोजपुरी सम्मेलन (बिहार इकाई)

बीसबीं शताब्दी अपना अन्तिम चरण में बा - आईं एकरा विदाई के तइयारी कइल जाय। दुआर पर एकइसवीं शताब्दी दस्तक दे रहल बा - एकरा स्वागत के मन बनाईं। संक्रांति का एह घड़ी में विचार करीं -बीसवीं शताब्दी भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के का उपलब्धि दिहलस आ का कमपायी रह गइल। साथ ही, एहू पर विचार करीं कि भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति खातिर आ रहल एकइसवीं शताब्दी कवन सदेशा अपना अँचरा का खूँट में बन्हले रउरा दुआर पर खड़ा बा, प्रवेश का अनुमति के इन्तजार क रहल बा। एकइसवीं शताब्दी अपना साथे कुछ चुनौतियो (challange) ले के आई आ ओकर समाधान रउआ से चाही। रउआ ओकरा चुनौती पर का करब आ कइसे अपना अस्मिता के रक्षा करत विकास का राह पर ओकरा कदम-से-कदम मिला के चलब ? जब एकइसवीं शताब्दी दुअरा आइए गइल बा, त ओकर स्वागत करहीं के पड़ी -आइल मेहमान के आदर-सत्कार खातिर अपना मन-प्राण आ साधन का साथे जुट जाईं। समय बहुत कम बाँचल बा। एह से तनी विचार क लीं।

बीसवीं शताब्दी भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति का विकास के दिसाईं बहुते महत्वपूर्ण रहल बा। इयाद करीं कि सिपाही-विद्रोह (सन् 1857 ई., जवना के 'भारत का स्वाधीनता के पहिल संघर्ष' होखे के गौरव प्राप्त बा, में बिधुनाइल भोजपुरिया समाज शोक मनावत रहे), का बाद सन् 1899-1902 ई. का बीच डॉ. जी. ए. ग्रियर्सन जइसन भाषाविज्ञानी भोजपुरी भाषा, कैथी लिपि, समृद्ध लोकसाहित्य आ भोजपुरिया संस्कृति के उद्धार, अध्ययन, अनुरक्षण आ मान्यता खातिर संघर्ष करत रहलन। अपना वृहत्काय 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' के प्रथम खण्ड आ द्वितीय खण्ड (दोसरका भाग) के कुल 250 पृष्ठ के शोधपरक सामग्रियन आ ए हैण्डबुक टू कैथी कैरेक्टर' (सन् 1881 ई.) का माध्यम से ऊ भोजपुरी के जवन सम्मान, मान्यता आ आधार दिअवलन, ऊ केहू भोजपुरिहा ना भुलाई। डॉ. ग्रियर्सन का एह काम का बाद त भोजपुरिया 'महाबीर' लोग के अपना बल-बउसाव के आत्म-ज्ञान भइल आ भाषा-साहित्य का हर विधा आ संस्कृति का हर पहलू पर रचनात्मक आ शोधात्मक काम शुरू हो गइल। सन् 1912 ई. में भोजपुरी के राष्ट्रीय कवि पुण्यश्लोक रघुवीर नारायण के अमर गीत 'बटोहिया' के आविर्भाव भइल, सन् 1919-25 ई. का बीच लोककलाकार भिखारी ठाकुर के लोकप्रिय तमाशा 'बिदेसिया' लउके लागल, महात्मा गाँधी के प्रयोग-स्थली चम्पारण का सत्याग्रह का साथ ही भोजपुरी कलकत्ता से दिल्ली तक का विशाल क्षेत्र में स्वाधीनता आन्दोलन के जबान बन गइल। एक ओर डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, डॉ. उदयनारायण तिवारी आदि अनेको भाषावैज्ञानिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा के रूप-स्वरूप के समझे-समझावे के दिसाईं लागल रहे लोग, त दोसरा ओर भोजपुरी लोकसाहित्य के समृद्ध खजाना के खोज, संकलन आ विवेचन में पं. रामनरेश त्रिपाठी, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, रामइकबाल सिंह, डॉ. रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक', डॉ. कुबेरनाथ मिश्र आदि विद्वान मेहनत-मशक्कत करत रहे। एही बीच सन् 1940-42 ई. के बीच महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के 'जोंक', 'नवकी दुनिया', 'मेहरारून के दुरदसा' आदि आठ गो एकांकी (नाटक) लिखा के प्रकाशित हो गइल। पूरा भोजपुरी अंचल पं. रामविचार पाण्डेय, रमाकांत द्विवेदी 'रमता', श्यामबिहारी तिवारी 'देहाती', सतीश्वर सहाय 'सतीश', अर्जुन कुमार सिंह 'अशांत', अनिरूद्ध, महेन्द्र शास्त्री, प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, रवीन्द्र भ्रमर, जगन्नाथ, वसन्त कुमार, हरिराम द्विवेदी, उमाकांत वर्मा, मोती बी. ए., धरीक्षण मिश्र, मुँहदुब्बर, लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप' आदि कवि-गीतकार लोग का काव्य-स्वर से गूँजत रहे। सन् 1947 ई. में भोजपुरी कहानी के जनम भइल - विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त का 'केहू से कहब मत' आ अवधविहारी सुमन (अब दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती) का 'जेहल के सनदि' आदि कहानियन का प्रकाशन से। एकरा बाद का आधा शताब्दी (उत्तरार्द्ध) में त लगभग 250-300 कथाकार लोग, जवना में कुछ नाँव बा डॉ. विवेकी राय, डॉ. मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध', डॉ. वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, मधुकर सिंह, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, पाण्डेय सुरेन्द्र, कृष्णानन्द 'कृष्ण', प्रो. ब्रजकिशोर, पी. चन्द्रविनोद, डॉ. अशोक द्विवेदी, रामलखन विद्यार्थी, विजेन्द्र अनिल; के लगभग 4,000 कहानी प्रकाशित हो चुकल बा। भोजपुरी के पहिल उपन्यास 'बिन्दिया' (श्री रामनाथ पाण्डेय) के अवतरण सन् 1956 ई. में भइल रहे आ अब तक 40-50 गो छोट-बड़ उपन्यास प्रकाशित बा, जवना में श्री पाण्डेय कपिल, विक्रमा प्रसाद, अरूण मोहन भारवि, गणेशदत्त किरण आ डॉ. विवेकी राय के योगदान सराहनीय बा। सन् 1954 ई. में भोज़पुरी के पहिल प्रबंधकाव्य 'कुँअर सिंह' (स्व० हरेन्द्र देव नारायण) आइल आ अब तक छोट-बड़ 50 गो प्रबंधकाव्य प्रकाशित हो चुकल बा, जवना में स्व. दुर्गाप्रसाद सिंह 'नाथ' के 'रामायण', दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती के 'बउधयन', स्व. रघुनाथ शरण शुक्ल 'कुबोध' के 'के' आ गणेशदत्त किरण के 'महाभारत' के विशेष महत्त्व बा। एकांकी आ नाटक का क्षेत्र में जगदीश सहाय 'असीम', सुरेश कांटक, सीतारामचन्द्र शरण 'राम', श्रीनिवास मिश्र आ डॉ. रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' के नाँव आदर के संगे लिहल जा सकेला। भोजपुरी में निबंध आ समीक्षा लिखे के परिपाटी कुछ अबेर से शुभ भइल फिर भी सर्वश्री कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', जगन्नाथ, सत्यवादी छपरहिया, हरिशंकर वर्मा, डॉ. जितराम पाठक, डॉ. विश्वरंजन आदि कुछ अइसन नाँव बा, जे लोग एह विधा के समृद्ध कइले बा। भोजपुरी भाषा के लगभग दस गो व्याकरण बा, जवना में डॉ. रामदेव त्रिपाठी के 'भोजपुरी व्याकरण' आ विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव के 'भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा' विशेष रूप से उल्लेखनीय बा- आ पाँच गो कोश-ग्रंथ, जवना में स्व. स्वामीनाथ सिंह, स्व. सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, श्री हरदेव बाहरी के कोश महत्वपूर्ण बा, प्रकाशित आ प्रशंसित बाड़न स। भोजपुरी पत्रकारिता का दिसाईं 'अँजोर' (सन् 1959-78 ई.) 'भोजपुरी कहानियाँ (सन् 1964 ई.), भोजपुरी (सन् 1952 ई.) 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका',

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भोजपुरी अकादमी पत्रिका', 'भोजपुरी कथा कहानी', 'भोजपुरी ललकार' आ 'घर-गाँव' के योगदान महत्त्वपूर्ण बा। एकरा अलावे पच्चीसो वार्षिक, अर्द्धवार्षिक, मासिक आ अनियतकालीन पत्र-पत्रिका प्रकाशित होत रहल बा। भोजपुरी के पढ़ाई अधिस्नातक से एम. ए. स्तर तक हो रहल बा, बाकिर अबहीं ऊ असुविधाजनक स्थिति में बा।

शताब्दी का अंत में जे कुछ महत्त्वपूर्ण कमजोरी भोजपुरी भाषा-साहित्य-संस्कृति का सोझा बा, ऊ संक्षेप में, बा- 1. ललित साहित्य में उच्च कोटि के रचना; 2. शास्त्रीय ग्रंथन के रचना; 3. पाठ्यपुस्तकन के निर्माण; 4. व्यावसायिक प्रकाशन के व्यवस्था ; 5 भोजपुरी भाषी जनता में अस्मिता के संचार ; 6. भोजपुरी पढ़ाई के सुव्यवस्था; 7. भोजपुरी के मातृभाषा के रूप में मान्यता; 8. साहित्य अकादमी में मान्यता; 9. भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल कइल ; 10. भोजपुरी क्षेत्र के पिछड़ापन दूर करे खातिर उद्योग आ विशेष रूप से, कृषि आधारित उद्योग के स्थापना; 11. भोजपुरी भाषी राष्ट्रन से सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ावल।

बीसवी शताब्दी का समाप्ति का अवसर पर आत्मविवेचन कइला पर निःसंकोच रूप से कहल जा सकेला कि -

1. भोजपुरी अपना के सक्षम भाषा का रूप में स्थापित क चुकल बा ;

2. साहित्य के रचना हो रहल बा,

3. भोजपुरी के आपन हर विधा में धुआँधार सांस्कृतिक परम्परा बा, जवना के सोर बहुत गहिर बा ;

4. भोजपुरी अपना मूल भाषा-क्षेत्रे में ना, बलुक संपूर्ण देश के कोना-कोना आ कई अन्य देशन-नेपाल, मॉरिशस, फीजी, ट्रिनिडाड आदि 17 गो देशन में बोलल-समझल आ पढ़ल-लिखल जाता;

4. भोजपुरी क्षेत्र राष्ट्रीय विकास में पिछुआइल भइला का कारण कृषि, उद्योग, शिक्षा, प्रतिव्यक्ति आय, जीवन-स्तर आ रोजी-रोजगार में कमजोर बा, जवना का कारण भ्रष्टाचार, उग्रवाद, अपराधकर्म आ आतंकवाद पसर रहल बा;

5. राष्ट्रीय अउर बिहार आ उत्तरप्रदेश के पूँजीवादी, जातिवादी सरकार भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, क्षेत्र आ निवासियन के लगातार उपेक्षा क रहल बा। अइसन आभास होत बा कि आवेवाली एकइसवीं शताब्दी एही बिन्दुअन पर समाधान खोजे के चुनौती का संगे आ रहल बा।

भोजपुरिया परम्परागत रूप से एगो वीर जाति रहल बा, बाकिर भोजपुरिया संस्कृति में गंभीरता, तटस्थता, संतोष, शांतिप्रियता, मूल्य-भीरुता, भाग्यवाद आ सादगी के मूल्य अतना गहिर ले व्यापल बा कि ऊ अपना उपेक्षा, शोषण आ हक के संगठित आन्दोलन के अबहीं टाल रहल बा। बाकिर ई स्थिति बदली - जरूरत बा भोजपुरी क्षेत्र में संगठन, नेतृत्व, जन-जागरण आ संघर्ष के कार्यक्रम के, जवन स्वाभाविक रूप से विकसित होई। बीसवीं शताब्दी में जामल-बढ़ल लोग, भोजपुरी सेवी संगठन-संस्था एह काम के अंजाम ना दे सकता, ना दी; बाकिर एह उपेक्षित शोषित-पीड़ित पीढ़ी का बाद के जामल-बढ़ल पीढ़ी एकइसवीं शताब्दी में अपना भाषा, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा रोटी के सवाल के जबाव खोज लिही, चाहे एकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर जइसन संघर्ष करे के पड़े ।

भोजपुरी क्षेत्र, भोजपुरिया आबादी आ भोजपुरिया संस्कृति का दिसाईं बीसवीं शताब्दी बहुते महत्वपूर्ण रहल । शताब्दी का प्रारंभ से सन् 1947 ई. तक भोजपुरिया आबादी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में बढ़-चढ़ के हिस्सा लिहल । चम्पारण के भूमि त महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक आन्दोलन के प्रयोगशाला ही बन गइल, जवना का सफलता का बाद पूरा भोजपुरी क्षेत्र में स्वतंत्रता के लहर दउड़ गइल । नमक सत्याग्रह होखे, अवज्ञा आन्दोलन होखे भा सन् 1942 ई. के आन्दोलन हो, भोजपुरिया लोग अपना तन-मन-धन से एह सभ में जीवे-जांगर लागल रहे । ई भोजपुरी क्षेत्र के गण्डक नदी के कछारे रहे, जहाँ गोरा लोग के साथे लड़ के ओह लोग के मार के गण्डकी माई के बलि चढ़ावल गइल । आजादी के पहिले भोजपुरिया क्षेत्र मुख्य रूप से कृषि-प्रधान क्षेत्र रहे आ लगभग 75% आबादी कृषि पर निर्भर करत रहे । सभ ग्रामीण गृह-उद्योग नष्ट हो चुकल रहे । बेरोजगारी, अशिक्षा, गरीबी आ तरह-तरह के शोषण-उत्पीड़न, जवना में जमीन्दारन आ सेठ-साहुकारन के जुल्म शामिल रहे, अपना चरम पर रहे। गरीबी में भी संतुष्ट रहेवाला भोजपुरिया लोग धरम-करम आ अंधविश्वास में फँसल रहे । दिन भर खेत-खरिहान में काम, भोर-साँझ माल-मवेशी के सेवा, रात के कीर्त्तन-भजन आ मनोरंजन-ईहे जिनिगी आम रहे । परम्परागत वर्णाश्रित व्यवस्था में बन्हाइल कसमसात समाज आ सुख-सुविधा आ धन-सम्पति खातिर छछनत लोग । आजादी का बाद के पचास बरिस में देश के विकास भइल, बाकिर गरीब पहिले से अधिक गरीब भइलन । आर्थिक लाभ समाज के कुछ अवसरवादी लोग बटोर लिहल । आबादी दुगुना बढ़ गइल । नेता, अफसर, ठीकेदार आ अपराधी लोग के चउकड़ी विकास के सभ लाभ लुट लिहल आ आम आदमी के संकट बढ़ल । खेती पर दबाव बढ़ल । गाँव के विकास पर जे खर्चा होखे के रहे, ऊ रस्ते में लुटा गइल । अपराध, उग्रवाद आ आतंकवाद के जनम एही घोटाला, भ्रष्टाचार, महँगाई आ बेरोजगारी का कोख से भइल । शताब्दी का अन्तिम दशक में पूँजीवादी-साम्राज्यवादी विश्व-व्यवस्था के वैश्वीकरण हो रहल बा आ भोजपुरी क्षेत्र सहित पूरा राष्ट्र 'पूंजीपतियन के बाजार' बने का ओर बढ़ गइल बा । एही बीच देश में विज्ञान आ तकनीकी के भी विकास भइल; बाकिर ओकर उपयोग आम आदमी खातिर कुछ बहुत ना हो सकल । नैतिकता के भाव रोजे-रोज घटत जा रहल बा । गरीबी, बेकारी, अशिक्षा आ मूल्यहीनता का एह माहौल में भ्रष्टाचार, अपराधकर्म, आतंकवाद आ उग्रवाद पछिला सभ प्रतिमान के तूड़ के नया-नया रूप-रंग में नया ऊँचाई बना रहल बा । सामाजिक परिवर्त्तन का प्रति वचनबद्ध संगठन विभ्रम का स्थिति में पड़ के लगभग मूक-दर्शक बन गइल बाड़न । प्रतिक्रियावाद रोज नया-नया साजिश रच रहल बा । विज्ञान आ तकनीकी के विकास आदमी के फालतू, बिकाऊ मूल्यहीन आ मशीन बने खातिर बाध्य क रहल बा, जवना का कारण 'तेज-रफ्तरी' जीवन का हर क्षेत्र में जिये खातिर आवश्यक हो गइल बा ।

अइसे त भविष्यवाणी कइल ज्योतिषी लोग के काम ह, बाकिर मानव समाज के जवन विकास अबले भइल बा; इहाँ ओकर जेने-जइसन-जतना गति बा, ओकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के देख के कवनो समाजशास्त्री एकइसवीं शताब्दी के सामाजिक-आर्थिक स्थितियन के परिकल्पना मोटा-मोटी क सकेला आ ईहे परिकल्पना मानव-निर्मित साहित्य आ व्यवहृत भाषा के विषय में भी कइल जा सकत बा। विश्व का स्तर पर पूँजीवाद के संकट ओकरा में निहित कारणन का वजह से बढ़ी आ समाजवाद के ऊ ताकतो बढ़ी जवन पूँजीवाद के विनाश खातिर एकताबद्ध होके प्रतिरोधी आक्रमण करत रही। ना पूँजीवाद के समूल विनाश होई आ ना विश्व समाजवादी व्यवस्था बन सकी। एह स्थिति से कवनो राष्ट्र, मानव-समुदाय आ ओकर क्रिया-कलाप अलग-थलग ना रह पाई। चेतना के लगातार विकास होई। सुख-सुविधा के साधन बढ़ी, बाकिर ओकरा उपभोग खातिर भी संघर्ष चलत रही। जिन्दगी के रफ्तार बढ़ी। नया-नया मूल्यन के सृजन होई। 'प्रतियोगिता' जीवन के कार्य-शैली बन जाई -सभे मृगतृष्णा में दउड़त- हाँफत रही। अपराधकर्म अपना रूप आ रंग-ढ़ंग में बढ़ी। संचार-माध्यम, आवागमन के सुविधा आ चेतना के विकास आदमी के जानकारी बढ़ाई, बाकिर भावानात्मक विकास के कुन्द करी। पूँजीगत वर्ग आ सर्वहारा वर्ग परिमाण में सिमट जाई आ मध्यम वर्ग के आबादी में 75 प्रतिशत परिमाण हो जाई। स्वाभाविक बा कि संघर्ष में मध्यम वर्ग सर्वहारा के मित्र बना के पूँजीपति वर्ग पर लगातार हमला करत रही, पूँजीवाद के संकट बढ़त-घटत रही।

जइसे-जइसे एकइसवीं शताब्दी के बरिसन के संख्या आगे बढ़ी, ओइसे-ओइसे भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति में परिवर्त्तन आई, जवना के परिकल्पना एह तरह कइल जा सकेला-

भाषिक-परिवर्तन :

1. भोजपुरी के विलम्बित ध्वनिग्राम प्रभावित होई आ एकर प्लुत् संबंधी उच्चारण-चरित्र नष्ट होई; जइसे- 'कऽहल', 'कहऽल' आ 'कहलऽ' का बदला 'कहल' आदि।

2. भोजपुरी शब्दन के अतिरिक्त स्वर समाप्त होखी; जइसे- 'काहाँ', 'केवना', 'कतुना' का बदला क्रमशः 'कहाँ', 'कवना' आ 'केतना' हो जाई।

3. संबंधकारकन के चिन्ह में कुछ विलोप हो जाई; जइसे -'हमका' का बदले 'हमार' आदि।

4. लिंग-विभेद-सूचक संयोजकन आ क्रिया-रूपन के प्रचलन बढ़ी; जइसे- 'रानी क/के बेटी' का बदले 'रानी की बेटी' आ 'गाय चरत' का बदले 'गाय चरतिया' आदि।

5. वाक्य-रचना के भोजपुरियन घट के हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषा के वाक्य-रचना के ओर मुखातिब होई, ताकि ऊ अधिका लोगन खातिर सम्प्रेष्य बन सके। अइसन स्थिति के ठोस उदाहरण अबहिएँ मिले के शुरू हो गइल बा।

6. भोजपुरी के परम्परागत शब्द शब्दकोश के शोभा बढ़इहें आ अनिवार्य आवश्यकता का कारण नया-नया शब्द दोसरा-दोसरा भाषा से अपनावे के पड़ी आ ऊ धीरे-धीरे अपना मूल भाषा के ध्वन्यात्कता का साथे उच्चरित आ उल्लिखित होई; जइसे-ट्रैक्टर, 'पावर', 'फोटो', 'बस', 'बम' आदि। अब 'टरकटर', 'डागदर' आदि के चलन घटी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7. संस्कृत भाषा के उपसर्गन आ प्रत्ययन से शब्द बनावे के आ अर्थ फरकावे के प्रवृत्ति बढ़ी ।

एह सभ का बावजूद भोजपुरी जइसन लमहर परम्परावाली आ व्यावहारिकता आश्रित विकासवाली भाषा नष्ट ना होखी, बलुक ओकरा में नया-नया गुण-धर्म के विकास होई आ ओकरा आम स्वीकृति मिली ।

भोजपुरी साहित्य में बदलाव :

1. भोजपुरी साहित्य के आम चेतना के अपना परम्परागत ग्रामीण परिवेश के छोड़ के नया विकसित हो रहल ग्रामीण परिवेश आ ओकरा समस्या का ओर मुड़े के होई । भोजपुरी साहित्य नगरीय-चेतना का ओर अधिकाधिक मुड़ जाई ।

2. भोजपुरी साहित्य में प्रकृति-तत्त्व घटी, औद्योगिक आ व्यावसायिक तत्त्वन के विकास उत्तरोत्तर होखी ।

3. भोजपुरी साहित्य का केन्द्र में जवन आम आदमी खड़ा रहल ह, ऊ थोड़ा बायाँ ओर घसक जाई आ तेजी से बढ़ रहल मध्यम वर्ग, जवन केन्द्रीयता खातिर आकुल-व्याकुल बा, केन्द्रीयता पावे का ओर बढ़ जाई । उच्च वर्ग पर आक्रमण तेज होई।

4. भोजपुरी साहित्य में पहिले कथा-विधा— कहानी, उपन्यास आ लघुकथा - आ आगे चल के नाटक - खास क के एकांकी - सबसे प्रमुख विधा बन जाई । कविता में कलात्मक ताम-झाम झड़ी आ 'नई कविता', 'नवगीत' आ 'लघुकविता' के विकास होई । संभवतः पारम्परिक महाकाव्य के संभावना समाप्त होखी आ कहीं उत्तरार्द्ध में महाकाव्य के विकास होखबो करी, त ऊ आम आदमी आ मध्यमवर्गीय चेतना के इर्द-गिर्द खड़ा होई- विज्ञान आ तकनीकी विकास के समेटेले ।

5. भोजपुरी साहित्य में वस्तुपरकता अधिका बढ़ी, कल्पना आ आदर्शवाद के मूल्य के देवाल ढह के धीरे-धीरे खण्डहर बनत लउकी ।

6. भोजपुरी साहित्य का भाषा में सार्वजनिकता आ सर्वस्वीकृति के प्रवृत्ति धीरे-धीरे बढ़ी । बंद दरवाजा-खिड़की खुले के शुरू करी आ बजरमूठ छूटे लागी । कसावट आई आ बेडौलपन के कटाई-छँटाई धीरे-धीरे चलत रही ।

7. भोजपुरी साहित्य एह काल-खण्ड के विकासमान शिल्प के चेतना से प्रभावित हो के अपना वर्त्तमान शिल्प-दृष्टि के संशोधित-परिवर्द्धित करी, ताकि युगानुकूल पाठकीय सहयोग मिले ।

8. भोजपुरी जइसन पुरान भाषा के लोकसाहित्य आ अब तक के साहित्य के संकलन, अनुरक्षण, अध्ययन आ पुरातात्त्विकरण के ओर ध्यान जाई ।

9. भोजपुरी भाषा-आ साहित्य के पढ़ाई के लोकप्रियता बढ़ी आ देश-विदेश में एकर सम्मान बढ़ी ।

संक्रमण का एह बिन्दु पर जवन परिकल्पना कइल जा रहल बा, ओकरा पर वैयक्तिक मनोवाद आ अतिशय अन्ध-आशावाद के इल्जाम लगावल जा सकेला । तटस्थता, प्रतिबद्धता-विहीनत्ता आ निषेधात्मकता के अपेक्षा, भोजपुरी के एगो ईमानदार सिपाही से कइल त व्यर्थे बा, बाकिर आवेवाली शताब्दी के जवन चारित्रिक विशेषता विकसित होखे के आसार बा आ भोजपुरी भाषी जाति (race) आ ओकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवट के जवन विश्वास हमरा बा, ऊ कबहीं निषेधात्मक आ ऋणात्मक नइखे । यदि भोजपुरी-भाषी जाति जियत-जागत रही आ यदि एह चुनौतियन के सामना सफलतापूर्वक क सकी, त निश्चित रूप से भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के विकास होई- ई मरी कबो ना आ अपना के समय का अनुकूलो बनावे में ई संकोचो ना करी । जे कुछ लोग आधुनिक युग में भोजपुरी का सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव के प्रति अचरज आ निषेध के दृष्टि राखत बा, ओह लोग के अपसोस होई। मॉरिशस, फीजी, नेपाल आदि हमनी का सोझा बा आ ओकरा में पछिला सई-दू सई बरिस में आइल परिवर्त्तन के अध्ययन हमरा विश्वास आ आशावादिता के बढ़ावे खातिर पर्याप्त बा ।

एकइसवीं शताब्दी का एह चुनौतियन के सामना करे आ अपना मातृभाषा भोजपुरी, भोजपुरी साहित्य आ भोजपुरी संस्कृति के नष्ट होखे से बँचावे खातिर भोजपुरी-भाषी जनता, भोजपुरी साहित्यकार आ भोजपुरी के संस्कृतिकर्मी लोग के फेंटा बान्ह के तइयार होखे के होई आ ई सभ काम करे के संकल्प लेबे के होई-

1. भोजपुरी भाषी जनता का अपना परिवार के युवा पीढ़ी के भोजपुरी बोले, हित-मीत का साथे भोजपुरी में पत्राचार करे आ बिना संकोच के गौरव का साथे कवनो समाज में भोजपुरी भाषा में बातचीत करे के संकल्प लेवे के होई ।

2. भोजपुरी-भाषी जनता के भोजपुरी के उपेक्षा का खिलाफ, एकरा मान्यता खातिर होयेवाला जन-संघर्ष में गोलबंद हो के तन-मन-धन से जुटे खातिर तइयार रहे के होई । ई काम आवेवाला युवा-वर्ग के तइयारी पर निर्भर करी, बाकिर एकर जमीन त आज के आगे बढ़ल लोग के बनावे के पड़ी ।

3. भोजपुरी का साहित्यकार लोग के आपन खिड़की-दरवाजा खोल के हर आवेवाला परिवर्त्तन के गुण-दोष का आधार पर उदारतापूर्वक स्वीकार करे के चाहीं।

4. भोजपुरी साहित्य के अपना परिवेश के यथार्थ के खुला मन से देखे-परखे के चाहीं आ काल का माँग के अनुसार विषय, विधा, भाषा आ शिल्प का दिसाईं सजग-सचेत होके साहित्य-सृजन करे के चाहीं । पुनरूत्थानवाद के त्याग आ प्रगतिशीलता का प्रति प्रतिबद्धता एकर क्रियाशील सूत्र बन सकेला ।

5. भोजपुरी संस्कृति के उदारवादी हो के अपना अन्दर ई शक्ति विकसित करे के होई कि ऊ ओह सभ परिवर्त्तन आ विकास के अपना में आत्मसात् क ले, जे पच सके आ ओह सभ तत्वन आ साजिशन के विरोध करे, जवन ओकरा संस्कृति के अपसंस्कृति का गड़हा में ढकेलत होखे। एह दिसाईं पहिले के परम्परा का प्रति आग्रह आ मोह के एगो सीमा तक छोड़े के होई । यदि अइसन उदारता के मानसिकता ना बनावल जाई, त भोजपुरी संस्कृति, आधुनिकता का दिसाईं ओइसहीं सिकुड़ जाई, जइसे आज जनजातीय संस्कृति के स्थिति बा । अचरज मत करीं कि 'धोती-मिरजई-टोपी, का बदला 'पैंट-शर्ट' आ गइल । शादी-बिआह के संस्कार के क्रम एक्क महीना से घट के एक दिन में सिमट गइल आ लोकगीत का बदला 'सिनेमा गीत' का तर्ज पर गीत गवाये लागल । ई सभ परिवर्त्तन समय आ स्थिति के माँग ह । खुला मन से स्वीकार करीं, तबे विकास जमीनी होई । मन ना माने, त चुप रहीं । ई केहू एक आदमी का चहले, ना रूकीं । चिंता क के आपन स्वास्थ खराब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करब आ अपना के संदर्भहीन बना लेब ।

विस्तार में एह आ दोसरो-दोसरो बिन्दुअन पर लमहर बातचीत हो सकेला; बाकिर मूल उत्प्रेरणा एही निरूपण के उद्घाटित करी । आ एकरो के बार-बार चउगेठी ।

काल अनादि ह । एकर गति शाश्वत बा । ई अनन्त बा । सृष्टि के सबसे अधिका विकसित चेतन-संरचना मानव ह । ऊ एह अजस्र काल-प्रवाह के एगो आयाम का रूप में मान लिहले बा आ हर क्रिया-प्रतिक्रिया में एकरा उपस्थिति आ योगदान के उपयोग करेला । ऊहे आदमी एह काल-प्रवाह के शताब्दियन, दशाब्दियन, बरिसन, महीनन, दिनन, घंटन, मिन्टन, सेकेण्डन आ पलन का गणित में अपना अध्ययन, मनन, विश्लेषण आ परिणाम निकाले खातिर बँटले बा । एह से ई सभ विभाजन मानवीय चेतना के सुविधावादी काम ह । एह से काल-प्रवाह में कवनो अन्तर ना आवेला । जवन अन्तर देखावल जाला, ऊ मानव-चेतना के गणितीय विस्तार ह । काल-विकास के इतिहास के गति चक्रित ना होला । ई गति क्षैतिज होला । पृथ्वी पर जवन संरचना बा, ऊ कबहीं ना पूर्णतः नष्ट भइल बा आ ना आगहूँ नष्ट होई । हँ, विविध कारकन का कारण क्रिया-प्रतिक्रिया का संघाती रगड़न का कारण वर्तमान रूप गुण में परिवर्त्तन होई - केहू के नीमन लागे भा ना लागे, बाकिर ओकरा कमोबेश ओकरा परिवर्त्तित रूप-रंग के स्वीकार करे के होई । जे स्वीकार क के अपना के ना बदली, हवा के रूख के ध्यान ना राखी, ऊ टूट जाई, मिट जाई, इतिहास बन जाई । भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति का भीतर अइसन जीवन्त तत्व मौजूद बा, जे एकरा के मरे ना दी । एकरा में कवनो परिवर्तन के स्वीकार करे के उदारता सांस्कृतिक रूप में विद्यमान बा, जवन एकरा के परिवर्त्तन के अपनावे के मानसिकता आ साहस प्रदान करी ।

भोजपुरी एगो वीर जाति के भाषा ह । ई एकइसवीं शताब्दी के चुनौतियन के माकूल जवाब के तलाश करी आ ओह से संघर्ष करत जिही, जागी आ विकसित होई। विश्वास का साथ एकइसवीं सदी के स्वागत करीं आ अपना भाषा, साहित्य आ संस्कृति के रक्षा के प्रति संकल्पित बनीं ।

—संपर्क

सर्वश्री जयदुर्गा प्रेस परिसर, नयाटोला, पटना-800 004

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी पत्रकारिता आ एकइसवी सदी

—प्रो. ब्रजकिशोर

कवनो भाषा के साहित्य के निर्माण आ विकास में, ओह भाषा-क्षेत्र के संस्कृति आ समाज के स्वरूप के उजागर करे में, ओकरा के परिष्कृत करे में पत्र-पत्रिकन के बहुत अधिक योगदान होला। रचनाकार आ पाठक-वर्ग का बीच में एगो पुरहर पुल के काम पत्रिकन के होला। जब कवनो लोकभाषा बोली से भाषा का रूप में निखरेले त एह निखार-सँवार के गति तेज करे के जिम्मेवारी पत्र-पत्रिकन का निबाहे के पड़ेला। पत्र-पत्रिकन के अहम भूमिका नया-नोंचर साहित्यकारन के प्रोत्साहन देवे आ आगे बढ़ावहूँ में होला।

कवनो राष्ट्र के निर्माण, विकास आ लोकतंत्र के स्वरूप बनावे के बड़हन दायित्व मीडियो पर बा चाहे ऊ इलेक्ट्रानिक मीडिया होखे, भा प्रिंट मिडिया। पत्रकारिता के मूल आधार हवे प्रिंट मीडिया जवना के दूगो स्वरूप में हिगरावल जा सकत बा - साहित्यिक पत्रकारिता आ समाचार-सूचना प्रधान पत्रकारिता। साहित्यिक पत्रकारिता का माध्यम से साहित्य के विभिन्न विधा में लिखल विचार का जरिये समाज निखरेला आ समाचार-पत्रन का जरिये रोज-रोज घटत विभिन्न क्षेत्रन के घटनन के मूल्यांकन आ सामाजिक-राष्ट्रीय सरोकार पर ओकनी के प्रभाव के आकलन का जरिये चेतना के विस्तार होला। भोजपुरी पत्रकारिता अबहीं मुख्य रूप से साहित्यिक पत्रकारिता का दायरा में बा आ भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति आ समाज के बनावे-सँवारे में लागल बा।

भोजपुरी भाषा एगो विशाल क्षेत्र में बोलल जाला जवन बिहार, उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश में फइलल बा। भारत के महानगरन में त भोजपुरीभाषी काफी संख्या में बड़लें बाड़न, देश के कोना-कोना में रोजी-रोटी कमाए का सिलसिला में एह लोगन के फइलाव बा। देश के बहरो कई-एक देशन में भोजपुरी बोले वालन के पर्याप्त संख्या बा, आ कतहीं-कतहीं त ई मुख्य भाषा का रूप में व्यवहार में बिआ। भोजपुरी पत्र-पत्रिकन के प्रकाशन कमोबेश हरेक क्षेत्र में भइल बा आ हो रहल बा।

एह सदी का पहिला चरण में भोजपुरी कविता हिन्दी के नामी पत्रिकन में छपे लगली स जइसे हीरा डोम के 'अछूत की शिकायत' नाँव के भोजपुरी कविता 'सरस्वती' के सितम्बर 1914 अंक में छपल बाकिर **'बगसर समाचार'** नाँव के पहिलका तिमाही पत्र 1915 में निकलल शुरू भइल। पहिले ई हस्तलिखित निकले बाकिर बाद में काशिका प्रेस में छप के निंकले लागल। ई सरस्वती पुस्तकालय, बक्सर से प्रकाशित होत रहे आ एकर सम्पादक रहलें स्व. जयपरकास नारायन। पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय का अनुसार तीन साल ले निकलला का बाद 1918 में एकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशन बन्द हो गइल । एकरा बाद जनपदीय आन्दोलन से प्रभावित होके राहुलजी के कर्मक्षेत्र सारन जिला में भोजपुरी के गतिविधि तेज भइल आ अधिवेशन के जोर पकड़े लागल । 1948 का बरसात में पंडित महेन्द्र शास्त्री जी का सम्पादन में 'भोजपुरी' नाँव के दूमाही पत्रिका कदमकुआँ (पटना) से निकलल । एह तरह से एही से देश में भोजपुरी पत्रकारिता के शुरूआत भइल । एकर दोसर अंक ना निकल सकल । एह अंक में रघुवीर नारायण के आत्मकथा, मनोरंजन जी के फिरंगिया पर संस्मरण, भोजपुरी सम्मेलन (गोपालगंज) के अध्यक्ष के रूप में दिहल राहुल जी के भाषण, विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त के कहानी 'केहू से मत कहेब', राहुल जी के किताब 'जय यौधेय' पर इन्द्रासन सिंह के समीक्षा आदि अनेक स्तरीय रचना छपल रहली स। महेन्द्र शास्त्री जी के कई एक रचना कल्पित नाँव से छपल आ लेखक का नाँव पर 'हम' आ 'तूँ' छापे के पड़ल ।

बक्सर से अवध बिहारी 'सुमन' (अब दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती) का सम्पादन में 'कृषक' नाँव के साप्ताहिक पत्रिका 1949 में निकलल जवन 4 पेज के होत रहे । एकर सहायक सम्पादक रहले फागू राय विशारद। एकरा पर छपत रहे – 'किसान मजूर भाइन के हपतवारी अखबार ।' ई साप्ताहिक 1950 ले निकलल आ एकरा बाद बन्द हो गइल । एकर 'लोकगीत अंक' बहुत सुन्दर निकलल रहे । बाद में फागू राय जी पटना आ गइले आ इहवें सिद्धनाथ प्रेस खोललन बाकिर 'कृषक' के प्रकाशन दुबारे ना शुरू हो सकल ।

1952 में आरा से 'भोजपुरी' मासिक पत्रिका के प्रकाशन शुरू भइल जवना के शुरुआती पाँच गो अंक के सम्पादन प्रो० विश्वनाथ सिंह जी कइलीं । एकर प्रवेशांक अगस्त 1952 में आइल जवना में 40 गो पृष्ठ रहे। छठा अंक से एकर सम्पादक रघुवंश नारायण सिंह जी हो गइलीं। ई पत्रिका 1958 तक आरा से निकलल । चार साल का बाद रघुवंश बाबू एकरा के पटना से 1963 से 1965 ले निकललीं । तीसरका हाली "भोजपुरी" फेनु 1973 से 1974 तक ले पटना से रघुवंश बाबू का सम्पादन में निकलल । 'भोजपुरी' पत्रिका महेन्द्र शास्त्री जी 1948 में निकलले रहीं आ फेनु निकाले के मनसा रहे । रघुवंश बाबू जब एही नाँव से मासिक पत्र निकालल शुरू कर दिहलीं त शास्त्री जी खिसिअलीं बाकिर फेर आपन सहयोग देवे के तइयार होत 'भोजपुरी' में लिखलीं–

अब खिसिआइल बाटे नाहक
हमहूँ बनब, बनाइब गाँहक

आ आपन आशीर्वाद देत शुभकामना व्यक्त कइलीं–

हे बाबू रघुवंश जी, लिहीं हमर आसीस
सुखी बनाईं देस के, जीहीं लाख बरीस ।

एह तरे 'भोजपुरी' का सभकर पुरहर सहयोग मिले लागल आ एह में राहुल सांकृत्यायन, डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, शिवपूजन सहाय, त्रिलोचन शास्त्री, रामदरश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिश्र, ठाकुर प्रसाद सिंह, डा. रामसुमग सिंह, अब्दुल कयूम अन्सारी आदि लोग भोजपुरी में लिखल । भोजपुरी कविता आ गद्य के रूप सँवारे में एह पत्रिका के योगदान हरमेसा याद क़इल जाई । ई पत्रिका भोजपुरी में लिखे-पढ़े के ललक जगवलस आ भोजपुरी के रचनाकारन में एगो आत्मसम्मान के बिरवा रोपलस । 1960 तक के समय के भोजपुरी-पत्रिकारिता में 'भोजपुरी के युग' मानल जा सकत बा । एकर 'लोक साहित्य विशेषांक' बहुत सुन्दर निकलल रहे । जब-तब भोजपुरी साहित्य सम्मेलनन का अवसर पर एकर विशेषांक निकले, जवना के खास आकर्षण होत रहे ।

अप्रील 1960 में भोजपुरी परिवार, कदमकुआँ, पटना से तिमाही पत्रिका 'अँजोर' के प्रकाशन शुरू भइल जवना के सम्पादक रहीं पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय आ सहायक सम्पादक रहीं अविनाश चन्द्र विद्यार्थी । ई पत्रिका खूबे जस कमाइल आ पाण्डेय जी एकरा के लगातार 1977 तकले नियमित रूप से निकालते गइलीं । बाद का बरिसन में साल में एकर दूगो अंक छपे । पाण्डेय जी कवि, कहानीकार आ नीमन निबन्धकार रहीं बाकिर अपना रचनन के कवनो संग्रह ना छाप के 'अँजोर' के आजीवन प्रकाशित करत रह गइलीं । 'अँजोर' का सम्पादक मण्डल में बड़-बड़ साहित्यकार लोगन के नाँव रहे । लेखक लोगन के पुरहर सहयोग मिलत रहे एकरा । एह में कविता, कहानी, शोध-निबन्ध आदि स्तरीय रचना छप स । अँजोर में छपल भोजपुरिया रचनाकारन खातिर प्रतिष्ठा के बात मानल जात रहे । अनइस-बीस बरिस ले अँजोर कइला का बाद ई पत्रिका तबहीं बन्द भइल जब पाण्डेय जी के निधन हो गइल । एह में एगो स्तम्भ रहे-बायन, जवना में दोसरा भषन के रचना छपत रहे । अंजोर के कहानी-अंक आ रघुबंश बाबू के स्मृति अंक अनूठा रहे । ई पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी के तप आ त्याग के फल रहे कि अतना बरिस ले अँजोर के प्रकाशन नियमित्त होत रहल । अबहीं ले दोसर कवनो भोजपुरी पत्रिका का लगातार अतना दीर्घ काल तक निकलत रहे के गौरव नइखे मिल सकल । भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी से डा. स्वामी नाथ सिंह 'भोजपुरी कहानियाँ' के प्रकाशन शुरू कइलें जवन काफी लोकप्रिय भइल बाकिर समग्र साहित्य का दृष्टि से 'अँजोर' के जस ना घटल । कहल जा सकेला कि 1960 से 1980 ले 'अँजोर' के युग रहल।

15 अगस्त 1960 के भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव भानु का सम्पादन में महादेवा, आरा से 'गाँव घर' नाँव के पाक्षिक पत्रिका के प्रकाशन शुरू भइल आ ई 1962 तक लगातार निकलत रहल । बादो में भानु जी एकर अंक जब-तब निकालत रहलीं बाकिर ओमें कवनो नियमितता ना रहल ।

जून 1964 में छपरा से 'माटी के बोली' नाँव के मासिक पत्रिका निकलल जवना के सम्पादक रहीं सतीश्वर सहाय बर्मा सतीश, बच्चू पाण्डेय आ डा. विश्वरंजन । प्रवेशांक में 36पृष्ठ रहे । कुछ समय बन्द रहके 'माटी के बोली' जुलाई 1969 से विश्वनाथ प्रसाद का सम्पादन में निकले लागल । कुछ महीना ले निकल के इहो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्द हो गइल ।

'भोंजपुरी साहित्य' नाँव के मासिक पत्रिका जुलाई 1964 से आरा से निकलल शुरू भइल । एकर सम्पादक रहीं डॉ. जितराम पाठक । 56 पृष्ठ के ई पत्रिका 1968 ले निकल के बन्द हो गइल । बाद में बक्सर भोजपुरी साहित्य मण्डल के मुखपत्र का रूप में 'भोजपुरी साहित्य' के प्रकाशन 1975 से 1977 ले भइल । एकरा बाद ई पत्र एकदमे बन्द हो गइल ।

भोजपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर के मुखपत्र का रूप में 'लुकार' नाँव के एगो चक्रमुद्रित अनियतकालिक पत्रिका निकलल जवना के प्रवेशांक के सम्पादक रहीं डॉ. बच्चन पाठक सलिल जी । लुकार 1965 से 1977 तक ले निकलल । एकर दूगो अंक चर्चित भइल - दुर्गाशंकर सिंह नाथ अंक आ मनोरंजन बाबू पर निकलल विशेषांक। एकर कुछेक अंक गंगा प्रसाद अरूण का सम्पादन में बादो में निकलत रहल । चक्रमुद्रित भइला से एकर प्रसार बहुते सीमित रहे । एकर एकतीसंवा अंक गंगा प्रसाद अरूण का संपादन में जून 1999 में निकलल बा ।

'भोजपुरी वार्त्ता' आनन्द मार्ग के पत्र हवे । 'भोजपुरी समाचार' का नाँव से जयदारी का सम्पादन में एगो साप्ताहिक पत्रिका 1964 में निकलल जवन आचार्य प्रतापादित्य का सम्पादन में 'भोजपुरी वार्त्ता' का रूप में गोरखपुर से पाक्षिक रूप में 1964 से 1966 तक निकलल आ बाद में साप्ताहिक हो गइल । बाद में इहे पत्रिका अर्द्ध-साप्ताहिक रूप में मिस कौट, मोतिहारी से छपे लागल । दैनिक पत्र का रूप में 'भोजपुरी वार्त्ता' के प्रकाशन कुछ दिन ले पटना से भइल । आनन्द मार्ग पर सरकारी प्रतिबन्ध लगला से ई बन्द हो गइल । फेरू एकर प्रकाशन जनवरी 1993 से मासिक रूप में पटना से विनोद कुमार देव का सम्पादन में शुरू भइल । एह में हर तरह के सामग्री छपल शुरू भइल । समसामयिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक घटनाक्रम पर गम्भीर टिप्पणी आ लेख का जवरे भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि विषयन पर कलम चलल । तत्काल एकर प्रकाशन बन्द बा । एगो मजबूत संगठन, आफसेट प्रेस के साधन आदि का रहते ई पत्रिका नियमित ना रह सकल । एकर कहानी-विशेषांक दमगर रहे । फेरू एकर 'कविता अंक' अप्रील 99 में आइल ।

दहियावाँ, छपरा से 1968 में सर्वानन्द का सम्पादन में 'जागल पहरूआ' नाँव के एगो 4 पृष्ठ के साप्ताहिक पत्रिका शुरू भइल । एकर प्रकाशन प्राउटिस्ट फोरम आफ इण्डिया का ओर से होत रहे । कुछ अंक छपला का बाद ई बन्द हो गइल । सारन जिला के राधा मोहन राधेश आ सिपाही सिंह श्रीमन्त का सम्पादन में 'भोजपुरी जनपद' नाँव के एगो पाक्षिक पत्रिका फरवरी 1968 में बनारस से छपे लागल जवन 1970 से 1972 ले मासिक रूप में निकल के बन्द हो गइल । 1977 से 1981 ले एकर चार-पाँच गो अंक छपल । अइसहीं 'काशिका' नाँव के एगो पाक्षिक 1969 में बनारस से निकलल शुरू भइल आ कुछ समय चल के बन्द हो गइल । एकर सम्पादक विनोद चन्द्र सिन्हा रहस । फेरू एकर प्रकाशन 1979 में गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से भइल आ कुछेक अंक का बाद बन्द हो गइल । डॉ. रामनाथ पाठक प्रणयी आ देवकुमार मिश्र अलमस्त का सम्पादन में 'हिलोर' नाँव के एगो मासिक पत्रिका देववाणी शोध मन्दिर, आरा से प्रकाशित भइल । एकर कुल्ह दूगो अंक छप पावल।

समाचार-साप्ताहिक का रूप में 'भोजपुर टाइम्स' के प्रकाशन न्यू एरिया, कदम कुआँ, पटना से 1971 में शुरू भइल । एह में बड़ साइज के आठ पृष्ठ रहे । एकर सम्पादक-प्रकाशक रहस ब्रह्मानन्द मिश्र । एक बरिस ले निकलला का बाद ई बन्द हो गइल आ बाद में 'भोजपुरी संवाद' नाँव से एकर प्रकाशन शुरू भइल बाकिर कुछे दिन का बाद इहो बन्द हो गइल । जनवरी 1971 में राधामोहन राधेश का सम्पादन में छपरा से 'पहरूआ' शुरू भइल बाकिर ढेर दिन ले ना ठनकल । 'टटका' नाँव के पाक्षिक पत्र रमाशंकर पाण्डेय का सम्पादन में आरा से 1972 में निकलल जवन 1976 से 'टटका राह' का नाँव से प्रकाशित होखे लागल आ कुछे दिन का बाद बन्द हो गइल ।

अगस्त 1972 में सरायकेला अनुमण्डल भोजपुरी समाज किओर से डॉ. सलिल का सम्पादन में 'ललकार' (मासिक) छपल शुरू भइल जवना के नाँव 1978 में 'जनता ललकार' हो गइल । कुछ दिन बन्द रहला का बाद 1982 से ई फेरू छपे लागल । कुछ साल ले जनता के ललकरला का बाद एकरो बोलती बन्द हो गइल । मार्च 1973 में सीवान से विमल कुमार विमलेश का सम्पादन में एगो पत्रिका 'माटी के गमक' निकलल । बाद में पाठक लोगन का एह पत्रिका के गमक तीन महीना पर भेंटे लागल । करीब दस साल ले अनियमित रूप में ई पत्रिका निकलत रहल । चितरंजन जी 1973 में आरा से एगो पाक्षिक पत्रिका 'चटक' के सम्पादन-प्रकाशन शुरू कइले जवना के नाँव 1976 में 'चटक-मटक' हो गइल । इहो पत्रिका लमहर अवधि ले जीयत ना रह सकल ।

1975 में जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना से मासिक 'लोग' के प्रकाशन शुरू भइल । एकर सम्पादक रहलें पाण्डेय कपिल आ नागेन्द्र प्रसाद सिंह । बाद में पाण्डेय कपिल सम्पादन से हट गइलन आ 1979 से ई पत्रिका 'भोजपुरी उचार' का नाँव से नागेन्द्र प्रसाद सिंह का सम्पादन में निकलल । ई भोजपुरी पत्रिकन के एगो स्तर बनावे के कोशिश कइलस । कुछ साल ले निकलला का बाद एकर प्रकाशन स्थगित हो गइल ।

जुलाई 1975 में भोजपुर से तिमाही 'गोहार' के प्रकाशन शुरू भइल जवना के सम्पादक राकेश कुमार सिंह आ सह-सम्पादक नागेश्वर पाठक रहस । मुजफ्फरपुर से मार्च 1976 में 48 पृष्ठ के एगो अनियतकालीन पत्रिका 'अहेरी' निकलल जवना के सम्पादन अवधेश नारायण शाही आ शम्भुशरण राय कइले रहस । मुजफ्फरपुर से एगो कहानी-प्रधान मासिक 'भोजपुरिहा' के प्रवेशांक जनवरी 1976 में ओमप्रकाश सिंह का सम्पादन में आइल । एकर दोसर अंक ना निकल सकल ।

जनवरी 1976 में 'उरेह' के पहिलका अंक भोजपुरी संस्थान, पटना के मुखपत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का रूप में आइल। 32 पृष्ठ के ई अनियतकालिक पत्र 1980 तक ले पाण्डेय कपिल का सम्पादन में निकलत रहल । 'उरेह' निश्चित रूप से भोजपुरी पत्रकारिता के एगो स्तरीय राह बनवलस ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना सातवाँ दशक के महत्त्वपूर्ण घटना रहे, जवना के सउँसे भोजपुरी जगत बड़ा उछाह से स्वीकार कइलस आ भोजपुरी आन्दोलन का गति मिलल । एकरा मुखपत्र का रूप में *'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'* के अनियतकालिक प्रकाशन मई 1976 में शुरू भइल । एकर दोसर अंक अक्तूबर 1977 में छपल । दूनू अंकन में शोध सामग्री प्रकाशित भइल आ सम्पादक डा. वसन्त कुमार जी रहस । सम्पादक मण्डल में भोजपुरी के अनेक वरिष्ठ साहित्यकार लोग रहे । अप्रील 1980 से ई पत्रिका तिमाही रूप में चार अंक ले निकलल आ एह में शोधपरक निबन्धन का जवरे रचनात्मक साहित्यो छपे लागल । एकर प्रधान सम्पादक ईश्वरचन्द्र सिन्हा आ पाण्डेय कपिल जी रहलीं । जनवरी 1985 से सितम्बर 1985 तक पाण्डेय कपिल का सम्पादन में चार अंक निकलल । दिसम्बर 1986 में रघुवीर नारायण जन्म शताब्दी अंक, दिसम्बर 1987 में भिखारी ठाकुर जन्म शताब्दी विशेषांक, आ अक्तूबर 1988 में सम्मेलनाध्यक्ष विशेषांक छपल । जनवरी 1990 से ई पत्रिका मासिक रूप से लगातार निकल रहल बा । अबहीं एकर सम्पादक पाण्डेय कपिल जी बाड़न । नियमित रूप से निकलेवाली ई पत्रिका भोजपुरी पत्रकारिता के एगो मील-स्तम्भ बा आ प्रचुर रचनात्मक साहित्य एह में छप चुकल बा । खाली 1995 में एह पत्रिका में 20 गो कहानी, 21 गो समीक्षात्मक निबन्ध, 7 गो शोध -निबन्ध, 12 गो लोकसाहित्य आ लोकसंस्कृति सम्बन्धी निबन्ध, 4 गो ललित निबन्ध, दूगो विचारात्मक, एंगो एकांकी, एगो नाटक, 4 गो लघुकथा का अलावा लगभग एक सौ कविता, गीत, गजल छपल । हर साल अतना रचनन के ई पत्रिका परोस रहल बिआ ।

1977 के जनवरी में पटना से हवलदार त्रिपाठी सहृदय आ भैरवनाथ पाण्डेय का सम्पादन में 'भोजपुरी समाचार' नाँव के मासिक बुलेटिन भोजपुरी अकादमी का ओर से निकलल । भोजपुरी अकादमी जब सरकारी हो गइल तब 'भोजपुरी समाचार' के प्रकाशन रूक गइल । मार्च 1977 में डा. रामनाथ पाठक प्रणयी का सम्पादन में आरा से 'कलश' के प्रकाशन शुरू भइल । अक्तूबर 1977 में ब्रजकिशोर दीक्षित ब्रजेश का सम्पादन में सीवान से तिमाही पत्रिका 'मोजर' निकलल जवन दू अंक का बाद बन्द हो गइल । अगस्त 1977 में अगरवा, मोतिहारी से रजनीकान्त राकेश का सम्पादन में 'डहर' निकलल जवना के नाँव 1980 में 'डगर' हो गइल । जयदुर्गा प्रेस, पटना से तैयब हुसेन पीड़ित एगो अनियतकालिक पत्रिका 'डेग' के सम्पादन-प्रकाशन कइलन । कुछेक अंकन का बाद ई सब पत्रिका बन्द हो गइली स । 'डहर' आ 'डेग' से जमपंथी चेतना के जगावे के उतजोग कइल गइल रहे ।

बनारस से 'भोजपुरी कहानियाँ' कहानी-मासिक का रूप में 1964 से निकलल शुरू भइल आ रामबली पाण्डेय जी आ बाद में गिरिजाशंकर राय गिरिजेश का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादन में 1977 ले छपत रहल । ई सबसे ढेर छपे आ बिके वाली पत्रिका रहल तबो ना चल सकल । एकरा बन्द हो गइला से भोजपुरी कहानी का विकास में बाधा पड़ल जवना के दूर करे खातिर तेज जर्नल्स, महेन्द्रू, पटना से प्रो. ब्रजकिशोर का सम्पादन में **'भोजपुरी कथा-कहानी'** के प्रकाशन जनवरी 1978 से शुरू भइल । ई 1984 ले लगभग नियमित रूप से छपत रहल । प्राध्यापक अचल के उपन्यास 'सुन्नर काका', चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के भोजपुरी के पहिलका बाल-उपन्यास 'खैरात' एह में धाराधाहिक छपल । एकरा 'महिला-कथाकर अंक' के सम्पादन रूपश्री जी कइले रहस । बाद में ई पत्रिका कभी-कभार लउकल । फेरू 1995 से अनियतकालिक रूप से साल में एगो या दूगो अंक केहू एगो कहानीकार पर केन्द्रित होके निकल रहल बा । हर अंक में कहानीकार के प्रकाशित कहानियन के समीक्षा, ओकर रचना प्रक्रिया आ अप्रकाशित सात-आठ कहानियन के समावेश हो रहल बा। कृष्णानन्द कृष्ण आ सूर्यदेव पाठक पराग पर केन्द्रित एकर वार्षिकांक काफी चर्चित रहल बा । 1998 आ 1999 में चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह आ रूपश्री पर विशेष अंक निकलल ।

दिसम्बर 1978 से **'भोजपुरी अकादमी पत्रिका'** के प्रकाशन पटना से शुरू भइल । 80 पृष्ठ के एह पत्रिका के प्रधान संपादक हवलदार त्रिपाठी सहृदय जी रहीं। बिहार सरकार भोजपुरी अकादमी के गठन कइले रहे आ अनुदान देत रहे बाकिर तबहूँ एकरो नियमित प्रकाशन में दिक्कत होत रहे । एह से अप्रील 1981 से ई तिमाही होके प्राचार्य विश्वनाथ सिंह का संपादन में निकले लागल । कुछेक अंक का बाद सम्पादन के भार डा. रामदेव त्रिपाठी के दिहल गइल । ग्रांट का अभाव में इहो थउस के बन्द हो गइल । डा. चित्तरंजन प्रसाद का निदेशक भइला का बाद नागेन्द्र प्रसाद सिंह का प्रयास से 1995 से एकर प्रकाशन फेरू शुरू भइल बा आ साल में एगो दमगर अंक छप रहल बा । ई शोध-पत्रिका हवे आ एह रूप में एकर आपन खास पहिचान बन चुकल बा । डॉ. गुलाबचन्द प्रसाद अभय के निदेशक भइला का बादो उमेद बा ई पत्रिका लगातार निकली ।

दिघवा दुबौली (जिला गोपालगंज) से गौरीकान्त 'कमल' का सम्पादन में एगो जनवादी पाक्षिक पत्र **'लाल माटी'** निकलल । अक्तूबर 1979 में 6 पृष्ठ के एकर पहिलका आ आखिरी अंक छपल रहे । ढोंढ़स्थान (सारन) से अनियतकालिक पत्रिका **'पपीहरा'** के प्रकाशन 1978 का गरमी में शुरू भइल । वैद्यनाथ विभाकर एकर सम्पादक रहस । 1980 में आउर कई-एक गो पत्रिकन के जनम बिहार का भूमि पर भइल । परमेश्वर दूबे शाहाबादी का सम्पादन में वार्षिक पत्रिका **'साखी'** जमशेदपुर से निकलल, मार्च 1980 में तिमाही **'जोखिम'** मोतिहारी से साँवलिया विकल का सम्पादन में शुरू भइल, जुलाई में महेन्द्र गोस्वामी **'आपन गाँव'** (मासिक) के पहिलका अंक कुल्हरिया (भोजपुर) से निकललन । जुलाई 1980 में शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी का सम्पादन में **'भोजपुरी समाचार'** (मासिक) के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशन फेरू होखे लागल आ एकर कुछेक अंक निकलल । मुजफ्फरपुर से वाल्मीकि विरल का संपादन में 'माटी के गमक' निकलल ।

मार्च 1981 में छपरा से भोजपुरी साहित्य परिषद् का ओर से एगो मासिक पत्रिका 'झकोर' के प्रकाशन शुरू भइल । एकर संपादक रहस डा० धीरेन्द्र बहादुर चाँद आ ई आधुनिक भाव-बोध खातिर समर्पित पत्र रहे । 'झकोर' के गजल विशेषांक आ कहानी-विशेषांक खूब सराहना बटोरलस । एकरो ढेर अंक न निकल सकल । 1981 का फागुन में मतनपुरा जिला सीवान से मासिक 'कचनार' आ सिकठी जिला भोजपुर से मासिक 'तरई' के प्रकाशन शुरू भइल । 'कचनार' के सम्पादक प्रदीप कुमार प्रभाकर आ 'तरई' के अरूण भोजपुरी रहस ।

1982 में भी कई एकगो नया पत्रिका के शुरूआत भइल । जनवरी में महेश्वराचार्य का सम्पादन में 48 पृष्ठ के तिमाही पत्रिका 'दियरी' नैनीजोर जिला भोजपुर से निकलल जवना के प्रकाशक सुप्रसिद्ध लोकगायक सुदर्शन तिवारी शाहाबादी रहस । मार्च 1982 में भलुनी धाम (रोहतास) से नन्दजी दूबे का सम्पादन में धर्म, दर्शन आ अध्यात्म सम्बन्धी तिमाही पत्रिका 'माई के बोली' के शुरूआत भइल । एह साल के एही महीना में कहानी प्रधान तिमाही पत्रिका 'चाक' के प्रवेशांक रतनपुरा (छपरा) से आइल । एकर सम्पदक रहस रामनाथ पाण्डेय आ वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय । एही साल पतरातू से 'भोजपुरी परिवार पत्रिका' छपल जवन ब्रजभूषण मिश्र, विपिन बिहारी चौधरी आ अनिरूद्ध दूबे द्वारा सम्पादित रहे ।

1984 में जहवाँ हरिद्वार (उत्तर प्रदेश) से सच्चिदानन्द शुक्ल का सम्पादन में 'भोजपुरी सनेस' (बाद में नाँव 'भोजपुरी आंगन') निकले लागल ओहिजा बिहार के धरती से भी कई एक पत्रिकन के कोंपल फूटल । पटना से कुशवाहा कुसुम का सम्पादन में 'पुजारिन' आ छपरा से डा. हरिकिशोर पाण्डेय आ रमण जी का सम्पादन में भोजपुरी के पहिलकी समीक्षा पत्रिका 'कसौटी' के प्रकाशन शुरू भइल । छपरे से भोजपुरी के पहिलकी बाल-पत्रिका 'नौनीहाल' निकलल । एही साल आरा से मोहन मिश्र का सम्पादन में 'आपन भाषा' आ छपरा से रामाज्ञा विकल आ जौहर शफियाबादी का सम्पादन में 'कलेवा' के अंक निकलल ।

1987 से साहेबगंज (मुजफ्फरपुर) से 'कोइल' के प्रकाशन होखे लागल । एकर सम्पादक डा. ब्रजभूषण मिश्र आ प्रबन्ध सम्पादक डा. धीरज कुमार भट्टाचार्य रहस । 1991 ले 'कोइल' निकलत रहल । एही साल कुमार विरल का सम्पादन में मुजफ्फरपुर से 'हीरामन' शुरू भइल जवन के दूसरका अंक 1988 में छपल आ फेरू ना निकल सकल । 1987 का साल पटना से एगो आउर प्रगतिशील चेतना के समर्पित पत्र 'भोजपुरी कलम' पशुपतिनथ सिंह का सम्पादन में निकले लागल । लगभग दू साल ले 'भोजपुरी कलम' निकलत रहल ।

जनवरी 1990 में मिठ्ठी (जिला सीवन) से एगो तिमाही 'बिगुल' के प्रकाशन शुरू भइल जवना के सम्पादक बानीं सूर्य्देव पाठक पराग । तीन अंक का बाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बिगुल' के विशेषांक निकाले के शुरूआत भइल। चार अंक ले लगातार कविता विशेषांक छपल आ 160 गो कवियन के उजागर कइलस। जून 1993 में बिगुल के, भोजपुरी शिरोमणी श्री अक्षयवर दीक्षित का व्यक्तित्व-कृतित्व पर विशेषांक निकलल। एकरा बाद के तीन अंक लघुकथा विशेषांक का रूप में छपल।

सितम्बर 1991 में पटना से मुहम्मद जब्बार आलम का सम्पादन में 'कलँगी' के प्रकाशन शुरू भइल। ई वामपंथी चेतना के समर्पित पत्रिका रहे। एकर पाँच-छव गो अंक छपल आ 1993 के आसपास ई बन्द हो गइल। जुलाई 1991 में बोकारो से रामनारायण उपाध्याय तिमाही 'ईंगुर' के प्रकाशन-सम्पादन शुरू कइले। जबतब एकर अंक अनियमित रूप से निकलेला। ओही साल बक्सर से 'जगरम' के प्रकाशन विजयानन्द तिवारी शुरू कइलन। एकर पाँचवाँ अंक लोकसाहित्य विशेषांक का रूप में निकलल जवना के काफी सराहना भइल। एकर छठा अंक अगस्त 1995 में निकलल जवन वयोवृद्ध कवि-आलोचक-नाटककार श्री कमला प्रसाद मिश्र विप्र के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर केन्द्रित बा। जगरम अनियमित रूप से निकल रहल बा।

नवम्बर 1991 में देवघर से अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन (पटना) के मुख पत्र 'भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका' के प्रकाशन तिमाही रूप में शुरू भइल। रासबिहारी पाण्डेय का सम्पादन में ई पत्रिका लगभग नियमित रूप से निकलत रहल बा। ई पत्रिका एगो आन्दोलन चलावे के कोशिश कइलस कि ऋ, ङ, ञ, ण, श, ष, क्ष आदि के प्रयोग भोजपुरी में ना कइल जाव। 1998 ले ई तिमाही निकलल बा। पाण्डेय जी का निधन के प्रभाव एकरा नियमितता पर ग्रहण लगा सकत बा।

प्रभंजन भारद्वाज का सम्पादन में बक्सर से 'लहार' के प्रकाशन 1992 का अन्त में शुरू भइल। एकर चार-पाँच अंक छप चुकल बा। मई 1994 में 'भोजपुरी लहर' के प्रवेशांक कविता-विशेषांक का रूप में आइल। बक्सरे से निकलेवाली एह पत्रिका के सम्पादक बाड़न-डा. चन्द्रधर पाण्डेय कमल। एकर दोसर अंक 1995 में निकलल।

भोजपुरी प्रसार परिषद्, चरिहारा, मशरक (सारन) से 1995 में 'उगेन' नाँव के तिमाही पत्रिका के प्रकाशन शुरू भइल। एकर सम्पादक हीरालाल अमृतपुत्र बाड़न। पत्रिका स्तरीय रूप से निकल रहल बा। फरवरी 1995 में एगो आउर पत्रिका पनपल-'गमक' बाकिर वीरगंज (नेपाल) में। जमालपुर से 'बटोहिया' के तिमाही रूप में प्रकाशन हो रहल बा। 1995 में एकर दूगो अंक छपल। एकर कहानी-विशेषांक चर्चित भइल। 1998 से, भगवान सिंह भास्कर तिमाही 'बयार' निकाल रहल बाड़न। 'कविता' नाँव के एगो त्रिमाही जगन्नाथ जी का सम्पादन में पटना से जुलाई में निकलल बा।

एह आलेख में अबले बिहार से निकले वाली भोजपुरी पत्रिकन के लगभग 50 साल (1948-98) के विवरण भर दिहल बा। कुछेक पत्रिकन के छोड़के अधिकांश के कुछे अंक निकल पावल बाकिर एह से एकनी के महत्व कम कके आँकल उचित ना कहाई। एह सभ का माध्यम से जवन सामग्री छप के सोझा आइल, ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्य के समृद्ध कइलस आ भोजपुरी आन्दोलन के तेज करे में आपन आहुति दिहलस । भोजपुरी के पढ़ाई बिहार में एम. ए. तक होखे लागल बा आ हर साल पचास-साठ किताबो छपि के आ रहल बा ।

बिहार से बाहरो भोजपुरी पत्रिकन के प्रकाशन भइल आ हो रहल बा । अइसन पत्रिकन में 'भोजपुरी कहानियाँ' बनारस से 1964 से 1977 ले निकलल आ भोजपुरी कहानी के भंडार भरलस । एकर लोककथा अंक, व्रत कथा अंक, शहीद अंक आ पौराणिक कथा अंक बहुत सुन्दर निकलल रहे । जनवरी 1965 में इलाहाबाद से ब्रजेन्द्र भारती का सम्पादन में 'हमार बोल' (मासिक), बनारस से 1968 में रामबली पाडेय का सम्पादन में तिमाही 'पुरवइया' राधेश का सम्पादन में बनारस से 1968 में भोजपुरी जनपद, 1969 में बनारस से विनोद चन्द्र सिन्हा का सम्पादन में पाक्षिक पत्र 'काशिका', छिन्दवाड़ा । (मध्य प्रदेश) से भोलानाथ सिंह का सम्पादन में मासिक 'भोजपुरी समाज', वीरगंज (नेपाल) से 'सनेस', कचरापाड़ा, पं. बंगाल से 'भिनुसार' (संपादक रवीन्द्र कुमार वर्मा), वीरगंज (नेपाल) से 'समाज', कलकत्ता से 'भोजपुरी मिलाप', आ 'भोजपुरी माटी', इलाहाबाद से 'चोट', (संपादक शशिभूषण लाल), हजरतगंज (लखनऊ) से 'सनेहिया' (संपादक राकेश कुमार सिंह), गोरखपुर से 'सोनहुला माटी', वीरगंज (नेपाल) से 'गमक' आदि अनेक पत्रिका निकलली स । लखनऊ से श्रीमती राजेश्वरी शांडिल्य का सम्पादन में मासिक पत्र 'भोजपुरी लोक' के नियमित प्रकाशन हो रहल बा । कलकत्ता के 'भोजपुरी माटी' अनियमित निकलते बा । बलिया से डा. अशोक द्विवेदी का सम्पादन में 'पाती' एने लगातार छप रहल बा आ स्तरीय रूप से निकल रहल बा । विश्व भोजपुरी सम्मेलन के मुखपत्र 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' तिमाही पत्रिका का रूप में डॉ. अरूणेश नीरन का सम्पादन में काफी सज-धज से निकल रहल बा।

एह विवरण से भोजपुरी पत्रकारिता के कुछ समस्या सोझा आ रहल बा आ ई सवाल बार-बार मन के मथ रहल बा कि काहे ई कुल्हि पत्रिका दू-चार अंक निकल के बन्द हो गइली स? एह सवाल पर गंभीरता से सोचे-विचारे के जरूरत बा । एह सवाल के उत्तर में भोजपुरी पत्रकारिता का भविष्य के दशा-दिशा निर्धारित हो सकेला । आखिर कवन-कवन समस्या भोजपुरी पत्रिकन के लील के असमय मार रहल बिआ ? संक्षेप में कुछ विचार राखल जरूरी बुझात बा ।

संगठन के सहयोग से भा आर्थिक दृष्टि से मजबूत संस्थन से निकलेवाली पत्रिकन के आयु अपेक्षाकृत ज्यादा रहल बा जइसे भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, भोजपुरी माटी, भा समकालीन भोजपुरी साहित्य । भोजपुरी का प्रति अत्यधिक निष्ठा का चलते केहू व्यक्ति-विशेष निजी भा सहयोग-मदद लेके धन के जोगाड़ कर लिहलस त ओकर पत्रिका कुछ ढेर अवधि ले चलल भा चल रहल बा जइसे उरेह, भोजपुरी कहानियाँ, भोजपुरी कथा-कहानी, भोजपुरी उचार भा पाती । अधिकांश पत्रिका बिना कवनो योजना के आ अर्थ के जुगत बइठवले शुरू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल - त थउसला का अलावा ओकर दोसर नियति का हो सकत रहे ! भोजपुरी आन्दोलन में आपन पहिचान सुनिश्चित करे के ललक जहाँ-तहाँ से पत्रिका निकाले के प्रेरणा त दिहलस बाकिर एक अंक भा दू अंक का बाद गाड़ी आगे ना खींचा सकल । पत्रिका निकाले वाला लोग घोर अव्याावसायिक दृष्टि अपनावल, पत्रिका के मुफ्त बाँट के खपा देवे के चलन चलावल आ गाँहक बनावे का प्रति घोर उदासीनता बरतल । गँहकी का लगे ले पहुँचे के कवनो रास्ता बनावे के कोशिश पिछला पचास बरिस ले कतहीं से केहू ना कइलस । नतीजा भइल कि एक-दू कविता-रचना छपवा लेवे वाला कवि-लेखक से लेके साधारण भोजपुरी नेही लोग तक मुफुते में पत्रिका पावे के हक बूझे लागल आ ना मिलला पर ओरहन देवे लागल । ई बहुते जरूरी बा कि मुक्तहस्त से पत्रिका के बाँटल बन्द कइल जाव आ गाँहक बनावे के जरिया बनावल जाय । कवनो जिला से कवनो पत्रिका छपत बा त गुटबन्दी छोड़ के सभे ओकरे के पुष्ट बनावे आ हर स्तर पर ओकर सहयोग करे । हजार-पाँच सौ नियमित गाँहक जुटा लिहला पर लघु पत्रिकन के अकाल मउवत बेशक कम हो जाई।

पत्रिकन का अपेक्षित रचनात्मक सहयोग नइखे मिलत । जे लोग हिन्दी में लिखत बा, ऊ समाचारपत्र भा मासिक पत्र से हर रचना पर कुछ पारिश्रमिक पा लेत बा । भोजपुरीभाषी अइसन हिन्दी लेखक बहुत बाड़न । भोजपुरी पत्रकारिता अबहीं तप आ त्याग खोजत बिआ-अपना लेखकन के कुछ दे नइखे पावत । अइसन कवनो छोट-बड़ हिन्दी लेखक के जयजयकार बन्द करे के जरूरत बा, जे भोजपुरी लिखे से कतरात बा आ बहाना बनावत बा । एह लोगन का उपेक्षा का चलते स्तरीय रचनन के अभाव हो रहल बा काहे कि भोजपुरी के समर्थ लेखको लोग हिन्दी कावर भाग रहल बा । ई प्रवृत्ति भोजपुरी पत्रकारिता खातिर घातक बा ।

घोर अव्यावसायिक भइला का वजह से विज्ञापन नइखे मिलत आ ना विज्ञापन जुटावे के कोशिश होत बा। विज्ञापन सर्कुलेशन का आधार पर भेंटेला आ भोजपुरी भाषी के संख्या सत्तरह-अठारह करोड़ भइला का बादो कवनो पत्रिका के असली सर्कुलेशन चार अंक के मुँह नइखे देख पावत । अइसन हालत में विज्ञापन त दान आ दया का रूप में मिल सकत बा - ऊहो हर अंक खातिर ना । एह स्थिति से उबरे खातिर मिल -बइठ के उपाय ढूँढे के चाहीं । भीख मांग के या पेट काट के कुछे अंक निकल सकत बा । एकरा के सेवा का संगे-संगे व्यावसायिक रूप दिहल जरूरी बा । जे संस्था, संगठन भा व्यक्ति पत्रकारिता से अबहीं जुड़ल बा, ओह सबका बीच भी टकराव कम आ सहयोग के भाव ज्यादा उपजे के चाहीं ।

पत्र-पत्रिका काहे खातिर निकलेली स ? समाज आ साहित्य के बढ़न्ती खातिर, सूचना आ रचना के आम पाठक तक पहुँचा के ओह सभ के मन के सँवारे आ संवेदनाग्राही बनावे खातिर ! ई लक्ष्य तबे पूरा होई जब पत्र-पत्रिकन के पहुँच आम पाठक तक होई । एह खातिर एगो सिलसिला बनावे के पड़ेला, एगो रास्ता सिरजे के पड़ेला जवना से चल के पत्र-पत्रिका अपना पढ़निहारन का लगे पहुँचेली स । ई रास्ता के सिलसिला ना होई तब सब मेहनत आ खरचा अकारथ जाई । अबहीं ले ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रास्ता बनावे के कवनो ढंगगर कोशिशो नइखे भइल। अधिवेशन आ जलसा कौतूहल पैदा करेला बाकिर ओकरा के टिकाऊ बनावे खातिर आउरो बहुत कुछ कइल जरूरी होला। का बात बा कि दक्खिनी भषन के छोट-छोट किताब हजारन का संख्या में हाथोहाथ खप जाली स आ हमनी किहाँ दूइयो चार सौ किताब खपावे में आन्ही आवेला! निस्सन्देह एकर मूल कारण बा भाषा का प्रति हमनी के उपेक्षा, उदासीनता आ रागात्मक सम्बन्ध के कमी। गाँव-ज्वार में किताबन से लगाव पैदा नइखे हो सकल; फुरसत में कुछ पढ़-लिख के आपन जानकारी बढ़ावे के हमनी आदते नइखीं डलले। भोजपुरी आन्दोलन जबले ई आदत पैदा करेके कोशिश ना करी तबले भोजपुरी क्षेत्र अइसहीं दीन-हीन आ सोझबक बनल गरीबी के मार झेलत रही। शिक्षा के कमी एह दशा के बरकरार राखे के बड़हन वजह त बड़ले बा बाकिर जे शिक्षित बा, ऊहो तनी-मनी पढ़े-लिखे के आदत कहवाँ डलले बा भा डाले के कोशिश कइले बा ? इहो सोचे के बात बा कि किस्सा तोता मैना, सोरठी बृजाभार जइसन किताब काहे हजारन का संख्या में छपत आ खपत रहल बा ? पत्र-पत्रिकन आ किताबन के खपत खातिर रास्ता बनावे के पड़ी आ लोगन के ध्यान खींचे खातिर एह कुल्हि के आवरण, छपाई आदि के मनलुभावन बनावे के पड़ी। बीसवीं सदी का अन्तिम दशक में एने ध्यान गइल बा आ अब पत्र-पत्रिकन के साज-सज्जा गवें-गवें सुन्दर बने लागल बा। कम्प्यूटर आ ऑफसेट के छपाई एह में हाथ बँटा रहल बा। ई समय का साथ आउर निखरत जाई आ कुछेक बरिस बाद आवरण से लगायत भीतरी साज-सज्जा भी देखनउक हो जाई।

भोजपुरी क्षेत्रो में शिक्षा के प्रचार-प्रसार तेजी से हो रहल बा, साक्षरता के प्रतिशत काफी बढ़ल बा आ जनता के रूझान में गुणात्मक बदलाव अब साफ चिन्हाये लागल बा। ई बदलाव घर-परिवार, गाँव-जवार आ पूरा समाज में लउक रहल बा। एकर गति अगिला दशक में बहुते तेज हो जाई आ जनसाधारण में जवन सहज-सपाट सुभाव के कारण घोर उदासीनता रहल बा अपना तरक्की, विकास आ हक का प्रति, ऊ खतम हो जाई आ अपना व्यक्तित्व के निर्माण का ओर सभे ध्यान दी। नजरिया का बदलते नजारा बदल जाई आ तब सूचना पावे के अधिकार आ जरूरत महसूस होखे लागी। इहे जरूरत भोजपुरी जनमानस में प्रिंट मीडिया का प्रति प्रेम आ ललक पैदा करी। छप रहल भा आगे छपे वाली पत्र-पत्रिकन आ किताबन के खपत बढ़ी यदि बिक्री के सही चैनल बन जाई।

एकइसवीं सदी के पहिलके दशक में भोजपुरी भाषा के स्थिति में बदलाव आई। धीरे-धीरे भोजपुरी क्षेत्र के लोगन का अपना क्षेत्रीय विकास, सड़क, पानी, बिजली के चिन्ता सतावे लागी आ ऊ लोग अपना हक खातिर जबर्दस्त आन्दोलन खड़ा कर दी। एह से राजनेता लोग, जे अबहीं खाली अपना निहित स्वार्थ खातिर जनता के जाति-पाँति में अझुरा के उल्लू बना रहल बा, चेती आ जनते का सँगें कदम-ताल मिला के चले लागी। एही बीचे एह आन्दोलन का कोख से अइसन पत्र-पत्रिकन के जनम होई जवन सही अर्थ में पत्रकारिता के व्यापक अर्थ में चरितार्थ करिहेंसन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी पत्रकारिता तब जनता के आवाज बन के उभरी । बीसवीं सदी का अन्त में जे विसंगतियन के जनम हो चुकल बा, ओकनी के घाव पाक के फूट जाई आ तब एगो निरोग-स्वस्थ सुसंगत समाज के संरचना होई जवन सही साहित्य आ सहीं पत्रकारिता के अवलम्ब बनीं । भोजपुरी भाषा आपन हक पा ली आ ना त ऊ आज खानी सरकार का हाथे अपमानित होई आ ना अपने लोग का सोझा उपेक्षित रही। भाषा का स्तर पर ओकर पढ़ाई स्कूल, कॉलेज आ विश्वविद्यालय में होई । साहित्य अकादमी से एकरा मान्यता मिली आ अष्टम अनुसूची में दर्ज कइल जाई । पटने-लखनऊ ना बलुक दिल्ली भी भोजपुरी भाषा आ भोजपुरी क्षेत्र के मुँह जोही। भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति आ समाज के अस्मिता के उभार का सँगे भोजपुरी पत्रकारिता के अस्मितो आपन पहिचान बना ली । तब अइसन कवनो घटना, विषय भा बात ना बाँच जाई जवना के चरचा आ विश्लेषण से पत्र-पत्रिका अछूता रहिहेंसन। भोजपुरी क्षेत्र में लोकतंत्र के आ एह क्षेत्र के लोक के रक्षक आ आवाज बनि के पत्र-पत्रिका सार्थक होइहें सन आ आपन महत्व बनइहें स । इलेक्ट्रानिक मीडिया के खूबे प्रचार-प्रसार होई बाकिर एह से एकइसवीं सदी में प्रिंट मीडिया के गरिमा तनिको कम ना होई ।

अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक कारणन से भोजपुरी मूल के जे लोग देश का कोना-कोना में रोजी-रोटी कमाए खातिर पसरल बा, भा विदेशन में रहि-बसि के धनार्जन कर रहल बा, ओह सभ आदमी के ध्यान भोजपुरी क्षेत्र के आ भोजपुरी समाज के पूरा विकास करे का तरफ जाई आ ऊ लोग तन-मन-धन से एह काम में जुटे के चाही । ओह लोगन का सेवा के एगो लमहर माध्यम पत्र-पत्रिके बनिहें सन ।

अपना विचार आ मत के प्रचार खातिर पत्रिका एगो साधन होले आ कवनो आन्दोलन आ क्रान्ति खातिर नीकहन हथियार । देश में असन्तुलित विकास का चलते जवन विषमता क्षेत्रीय स्तर पर पैदा हो रहल बा ऊ देश के विकसित, अविकसित आ विकासशील क्षेत्रन में बाँट दी आ एह क्षेत्रन का बीच एगो टकराहट उत्पन्न होई । इहे टकराव भोजपुरिहा के सहजपन के ललकारी आ एही ललकार के गूँज का भीतर से भोजपुरी अस्मिता निखर के सभका सोझा आई आ तब एकइसवीं सदी के दूसरका दशक के बाद के समय राष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी आ भोजपुरियन के होई । भोजपुरी पत्रकारिता एकर माध्यम बनी ।

बिहार के धरती अपना पिछड़ापन का बावजूद एगो क्रांति भूमि रहल बिआ । भोजपुरी-आन्दोलन के जवन रूप आज लउकत बा ओह में बिहार अगुआ रहल बा, आ आगहूँ रही । बिहार से 1948 से 1998-99 ले बहुते पत्रिका निकललीसन; आगहूँ निकलिहे सन । चाहे जे भी दिक्कत आ बाधा आवे, भोजपुरी पत्रकारिता के भविष्य उज्ज्वल बा आ नियोजित सामर्थ्य अपना के अगिला सदी में ई आपन सार्थकता साबित कर दी -ई निश्चित रूप से कहल जा सकत बा ।

—संपादक, भोजपुरी कथा-कहानी, पटना-6
आ उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी कहानी

एकइसवीं सदी में भोजपुरी कहानी के स्वरूप

–कृष्णानन्द कृष्ण

बीसवीं शताब्दी अपना अन्तिम चरण में चल रहल बा। एकर साँस उखड़ रहल बा। कुछुए महीना बाद एके छलांग में हमनी के एकइसवीं सदी में पहुँच जाएब। कुछ लोग के एकर कयासो ना होई कि सदी बदल गइल । बाकिर आवेवाली सदी में सबकुछ बदल जाई। आज जे जवन रूप में बा ऊ काल्ह ना रहे आ ना आवेवाला दिन में रहीं। कवनो समाज भा देस में आवेवाला बदलाव सबसे पहिले ओकरा सामाजिक आ आर्थिक परिवर्तन में परिलक्षित होला । एकरा बाद ओकर प्रभाव ओकरा भाषा साहित्य आ संस्कृति प पड़ेला । कवनो समाज के अध्ययन खातिर ओकरा भाषा आ संस्कृति के अध्ययन बहुते जरूरी होला । साथे-साथे ओकरा साहित्य के भीतरे आइल बदलावन के भी रेखांकित करे के चाहीं । एही जा हमार कोशिश बा कि भोजपुरी कहानी लेखन के विकास में एकइसवीं सदी में कवना स्तर पर बदलाव होई एकरा संभावना पर विचार कइल जाव । एह पर विचार करे के पहिले भोजपुरी कहानी के परम्परा आ ओकरा विकास यात्रा के रेघरिआवल जरूरी बुझाता । एह से पहिले हम एही विन्दु प विचार कइल चाहब ।

आधुनिक विश्व साहित्य में कहानी सबसे बेसी लोकप्रिय विधा के रूप में आपन खास पहचान बना चुकल बिया । कथा-कहानी के इतिहास ओतने पुरान बड़ुए जतना आदमी के । पहिले जब आदमी के विकास ना भइल रहे, लिखे-पढ़े के परम्परा शुरू ना भइल रहे, ओह घरी खिस्सा-कहानी कहे-सुने के परम्परा रहे । समय-संदर्भ के साथे-साथे आदमी के विकास भइल आ अभिव्यक्ति के तरीको में बदलाव आइल । खिस्सा-कहानी जे मुँहा-मुँही आपन यात्रा तय करत रहे अब लिखित रूप में आवे लागल रहे । भारतीय साहित्य में वेद, उपनिषद्, पुराण, महाभारत, कथासरित-सागर, ब्राह्मण-कथा, जैन आ बौद्ध कथा के अलावे कथन के बड़हन भंडार लोगन के कंठ में लोक-कथा के रूप में आजो मौजूद बा । जुग-जुग से यात्रा करत लोक-कंठन में बसल एह कथन के गहिराई से जँचला-परखला पर ओह घरी के समाज, सामाजिक व्यवस्था, रीति-रेवाज, संस्कृति, राजनैतिक, आर्थिक स्थितियन आ जातीय चेतना के पता चलेला जवन परम्परा के समझे में बड़ा मददगार होला ।

भोजपुरी में कहानी लिखे के शुरूआत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन के साथे-साथे भइल । ओईसे बातचीत के क्रम में शास्त्री सर्वेन्द्र पति त्रिपाठी जी एक बार बतवले रहीं कि विजयानन्द त्रिपाठी के एगो भोजपुरी कहानी 'साँच सपना' बीसवीं सदी के पहिला दसक में छपल रहे बाकिर छपल रूप में पहिले-पहिल 'जेहल क सनदि' (अवध बिहारी सुमन अब दण्डीस्वामी विमलानन्द सरस्वती) आ 'केहू से कहब मत' (विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त, भोजपुरी-सं० -आचार्य महेन्द्र शास्त्री-1948)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो सामने बा। 'जेहल क सनदि' के भूमिका में सुमन जी लिखले बाड़न कि जब 1941 में उनकर भेंट जेल में बौद्ध विद्वान नागार्जुन से भइल तब उनुका से प्रोत्साहन मिलल आ उ भोजपुरी में कहानी लिखे के शुरू कइलन। एह आधार पर ई कहल जा सकत बा कि भोजपुरी कहानी के शुरूआत 1942 के आस-पास भइल होई। भोजपुरी क्षेत्र के लेखक जे ओह घरी हिन्दी लेखन में सक्रिय रहे ओकरा सामने सामाजिक-राजनैतिक स्तर पर होत उथल-पुथल के आधार रहे। 1857 के दबावल गइल सिपाही विद्रोह के आग भीतरे-भीतरे करसी के आग अइसन धुंआत रहे जे अब ऊपरे लउके लागल रहे। लोगिन के दिल में फिरंगियन के प्रति नफरत आघिन के नदी उफान लेत रहे। लोगन के भीतरे राजनीतिक चेतना अँखुआये लागल रहे। भारतीय समाज दैविक आ भौतिक दबाव से गुजरत कुछ करे के तमन्ना अपना मन में पाले लागल रहे। 1934 के भूकम्प के हादसा, ओकरा बाद साहित्य के स्तर पर अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के गठन आ कथा-सम्राट प्रेमचंद के ओकर अध्यक्ष चुनाइल बहुते बड़ घटना रहे। एकरा बाद त एक प एक स्वदेशी आन्दोलन, स्वामी सहजानन्द सरस्वती के किसान आन्दोलन, सन् 1942 के क्रांति आन्दोलन, आ दोसरका विश्वयुद्ध के घटना सब के प्रभाव लोगन के सोचे समझे के नया राह आ नया दिशा देवे लागल रहे। 1947 में जब देश के आजादी के मुनादी भइल त सऊँसे देश के भीतर एगो अजबे उत्सव के लहर धउर गइल रहे। देश के आजादी के साथे-साथे इहाँ के नक्सा बदलल, इतिहास-भूगोल बदलल, जमीन-आसमान बदलल। एकर सबसे जादे असर हिन्दी आ ओकर सहयोगी भषन प पड़ल। एह सब दबावन के असर ओह घरी के रचनन में स्पष्ट रूप से देखे के मिल जाला। भोजपुरी कहानी लेखन के नेंव में एही वैचारिक बदलाव आ सामाजिक स्थितियन के पोख्ता आधार रहल बा आ एही रूप में 'जेहल क सनदि' के ऐतिहासिक महत्व बड़ुए।

देश के आजाद भइला के बाद लोगन के सिर पर आजादी के निशा अइसन छवलस कि लोग सब कुछ भुला गइल। आँख के आगा जीवन-जगत के जे यथार्थ रहे ऊ सपना के समुन्दर में डूब गइल रहे। लोग अपना भीतर उत्साह सँजोवले अपना आदर्शन आ जीवन मूल्यन के बचावे में लागल रहे। एह सब हलचलन के पूरा प्रभाव भोजपुरी क्षेत्र के रचनाकारन प पड़ल। भोजपुरी कहानी के सामने हिन्दी कथा साहित्य के पोख्ता आधार रहे। एह से भोजपुरी कहानी लोककथा के केंचुल हालिये उतार के फेंक देलस आ भोजपुरी में मूल्यवादी आ आदर्शवादी कहानियन के शुरूआत भइल। एकरा साथे-साथे भोजपुरी में ऐतिहासिक, अध्यात्मवादी, आ सामाजिक यथार्थ के कहानियन के सृजन शुरू हो गइल रहे। एह सब के अलावे भोजपुरी कहानी के सबसे बड़ खूबी जे उजागर भइल उ ई रहे कि बिना कवनो भटकाव के भोजपुरी कहानियन में भोजपुरी जनपद आ ओकरा यथार्थ के विषय-वस्तु के रूप में अपनावे लागल गइल रहे। यानि कि भोजपुरी कहानी अपना के सीधे सामाजिक यथार्थ से जोड़ ले ले रहे। 'जेहल क सनदि' में कएगो अइसन कहानी बा जवन अपना समय के सामाजिक यथार्थ के दस्तावेज बड़ुए। एह संग्रह के अधिकांश कहानी आदर्शवादी आ सुधारवादी बाड़ी स। 'मलिकार' कहानी में तिलक-दहेज प्रथा, 'कतवारू दादा' में बाल-वृद्ध विवाह आ 'आत्मघात' में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सामाजिक कुव्यवस्था प चोट कइल गइल बा। 'परमपद' में गॉव के भीतर के राजनीति आ मठ-महंथन के चरित्र के पर्दाफाश कइल गइल बा। खेदूराय अइसन लोग आपन सरबस मठिया में दान कके भूखे मरके परमपद पावता आ हरदेवाचारी अइसन लोभी आ ढकोसला में जीयेवाला महंथ खेदूराय धर्मभीरू अइसन लोग के धन के भोग-भोगत परमपद पावत बा।

ऐतिहासिक, आदर्शवादी, अध्यात्मवादी आ भाग्यवादी कहानी लिखे में वृन्दावन बिहारी जी के कवनो जोड़ नइखे। 'होड़', 'दूराही', 'अकेले' आ 'अर्द्धांगिनी' कहानियन के एह क्रम में देखल जा सकेला। 'अर्द्धांगिनी' भोजपुरी के पहिला शोक-कहानी बड़ुए। पूर्वदीप्ति के सफल प्रयोग आ मनोवैज्ञानिक गहराई कहानी के अलग ऊँचाई दे जात बा।

सन् पचपन के आवत-आवत आदमी के जीवन-मूल्यन में भइल बदलाव अब सामाजिक स्तर पर उद्घाटित होखे लागल रहे। पुरान मूल्यन के अनदेखी आ पहिले से चलल आवत परम्परा के गँवे-गँवे नकारे के प्रक्रिया शुरू भइल रहे। परम्परा से जुड़ला के पिछड़ापन के निसानी मानल जाये लागल रहे। नया-जीवन मूल्यन के खोज होखे लागल रहे। इहे अकुलाहट आ बेचैनी लेखक के अपना अभिव्यक्ति में बदलाव ले आवे के मजबूर करत रहे। सामाजिक कुरीतियन आ बुराइयन प जमके प्रहार एही घरी शुरू भइल। नया शासन लागू भइल। सामाजिक व्यवस्था में बदलाव आइल त भोजपुरी कहानी में ओकर चित्रण शुरू भइल। अलग-अलग समस्या प अलग-अलग नजरिया से कहानी के सृजन भइल। पाडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के कहानी 'गुरुदक्षिणा' बेरोजगारी से पैदा भइल सामाजिक विसंगति के कहानी बा त 'बेटी के बिआह' में गाँव के समस्या के उठावल गइल बा। पाडेय नर्मदेश्वर सहाय कहानी में समाज के अंतरा में पसरल छोट-छोट चटख घटनन के अपना अभिव्यक्ति के माध्यम बनवले बाड़न। उनका कहानियन के 'लीगल फिक्शन' कहल जा सकत बा। इनका कहानियन में 'मुसलमानिनि', 'नवरतन' आ 'हरताल' के देखल जा सकेला। 'हरताल' गँवई दाव-पेंच आ अँखुआत ग्रामीण चेतना के कहानी बड़ुवे। भोजपुरी के कहानी 'प्यार के मरम' मे मनगाँव के सुन्नर सुभेख रूप देख के प्यार के मरम जाने खातिर गाँव में बिलम जाता। एह कहानी में सबकुछ आदर्शवादी भइला का बादो ई अहसास होत बा कि भोजपुरी कहानी में कुछ बदलाव हो रहल बा। एह मनौवैज्ञानिकता के दबाव, आधुनिक भाव-बोध, संपूर्ण मनोवैज्ञानिक गहराई के साथे अपना संपूर्णता में रामेश्वर सिंह काश्यप के कहानी 'मछरी' में उपस्थित भइल बा। वैचारिक स्तर पर ई अइसने संक्रमण के स्थिति रहे जवना घरी सामाजिक सोच में शून्यता के स्थिति पैदा होखे लागल रहे। एह संक्रमण के दबाव के चलते भारतीय समाज में बदलाव के प्रक्रिया सुगबुगाये लागल रहे। एह आवत बदलाव के पकड़े के कोशिश कई स्तर पर भइल बा। लोगन के व्यवहार बात, कथनी-करनी के विरोध भास, गाँव के लोगन के मानसिकता के दोगलापन, धूर्त्तई, पाखंड आ तिकड़म के भरपूर चित्रण डॉ० विवेकी राय आ मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' के कहानियन में भइल बा। डॉ० राय के कहानी में गँवई जिनगी के निचोड़ सोगहग भाव से उभर के आइल बा। ऊ चाहे तिलक दहेज के लेके लिखत गइल 'कच्चा गुलाब' होखे आ 'मदारी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भा सरकारी तंत्र में घुसल गड़बाड़ियन के ऊपर व्यंग्य करत 'भूखे भजन ना होइ गोपाला', होखे, गाँव संपूर्णता में मौजूद बा । 'खेल' कहानी गँवई परिवेश से उभर के एगो संपूर्ण दार्शनिक भावबोध के गहराई में खतम होत बा । घेरवना के भरल-पूरल संसार बबूर के झांगी से एकदम साफ हो जात बा । बाँच जात बा धरती के धूर । एह परम सत्य के जनला के बादो हमनी का समाज में चोरी, बेइमानी आ कमजोर पर लगातार अत्याचार, अनाचार होते आवत बा । एकर चित्रण डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी बेसुध के कहानियन 'उपर-झाँपर', 'अंकोर', आ 'भईंसि के दूध', कहानियन में भइल बा । 'भईंसि के दूध' कहानी एगो कमजोर वर्ग के आदमी दूबर के सपना के कहानी बा जवन साहूकार के करजा में डूब जात बा । ई सपना एगो अकेले दूबर के नइखे बलुक हिन्दुस्तान के करोड़ो दूबर के बा जवन साहूकार के कर्ज में डूब के छितरा जात बा।

भोजपुरी कहानी अपना विकास के सीढ़ी तय करत अपना में बदलाव ले आवे के कोशिश करे लागल रहे । भोजपुरी कहानी के सामाजिक यथार्थ से शुरू भइल यात्रा अब सामान्य जन भा सर्वहारा वर्ग के दुःख-दर्द के आपन कथ्य बनावे के शुरू क देले रहे । हिन्दी कहानी में एह घरी दूगो साफ धारा काम करे लागल रहे । पहिलका धारा के अगुआई प्रेमचन्द खेमा के लोग करत रहे त दोसरा खेमा के अगुअई करत रहन जैनेन्द्र कुमार, ईलाचन्द्र जोशी, यशपाल आदि । भोजपुरी कहानी में हिन्दी अइसन कवनो फरिछ रेखा त ना रहे बाकिर भीतरे-भीतरे भोजपुरी कहानी दू फाँक में बँट गइल रहे । एक खेमा में सामाजिक यथार्थ के चित्रण के आग्रह त दोसरा में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, भावात्मक संवेदना के जोर रहे। ई समय उहे रहे जब हिन्दी में नई कहानी के आन्दोलन अपना पूरा उठान पर रहे । साथे-साथे आँचलिक कहानी आपन पहचान बनावे खातिर जद्दोजहद करत रहे । एह सब आन्दोलन से भोजपुरी भाषा-भाषी लेखक सीधे-सीधे जुड़ल रहले बाकिर एकर पूरा प्रभाव भोजपुरी कहानी लेखन प ओइसन ना पड़ल । एकर सबसे बड़ कारण रहे भोजपुरिया लोग के राष्ट्रप्रेम आ राष्ट्रभाषा के प्रति असीम अनुराग । इहे कारण भइल कि भोजपुरी साहित्य पिछुआ गइल । नयी कहानी के प्रभाव में छिट-पुट कहानी त लिखइली स जरूर बाकिर ओकर कवनो साफ रेघारी भोजपुरी कथा आन्दोलन में ना लउके ।

सन् 1960 में पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के संपादन में जब 'अँजोर' के प्रकाशन के शुरूआत भइल त एगो जबरदस्त सुगबुगाहट भोजपुरी लेखन में पैदा भइल । एही आस-पास में भोजपुरी कहानी लेखन में एगो भारी उलट-फेर भइल । एकर कारण रहे अंतर्राष्ट्रीय स्तर प पसरल चीन के साम्राज्यवादी सीमा विस्तार के नीति । एह राजनीति से पूरा भारतीय जन-जीवन आ भारतीय सीमा रेखा ले प्रभावित भइल । चीन के साथ सीमा संघर्ष पूरा भारतीय परिवेश के बदल देले रहे । सउँसे राष्ट्र में राष्ट्रीयता के लहर धउर गइल रहे । एह सामाजिक परिवेश आ राष्ट्रवाद से भोजपुरीजन आ साहित्यो अछूता ना रह सकल । राष्ट्रभावना से ओत-प्रोत कहानियन के सृजन खूब धड़ल्ले से भइल । पत्र-पत्रिकन के विशेषांक निकलल । डॉ० विवेकी राय के 'बम बूटा पेकिंग प खूँटा, कृष्णानन्द कृष्ण के 'पियवा बसेला परदेश' आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सपना साँच हो गइल', रामनाथ पांडेय के 'पहिचान', रामेश्वर प्रसाद वर्मा के 'दूध के लाज', लवशर्मा 'प्रशान्त' के 'गुमराह', रूपश्री के 'शहीद के अरमान' आ मदन मोहन वर्मा के 'पनढकउआ के राति' आदि कहानियन के देखल जा सकेला ।

सातवाँ दशक के उत्तरार्द्ध माने 65,66 आ 67 के साल, समाज खातिर आ खास क के भारतीय समाज खातिर ई तीन साल बड़ा कसमकस के रहे । भयंकर अकाल आ सूखा लोगन के जड़ से हिला के रख देले रहे । बरिसन से राजनीति में माथ प बइठल कंगरेसिया राज के एकछत्र राज चरमरा के टूट गइल रहे । जेकरा चलते राजनीति में भयंकर बदलाव आइल । एह परिवर्त्तन के असर पूरा मुलुक के लोगन के सोचे समझे के तरीका प पड़ल । एकर ई फायदा भइल कि लोगन के लरूआइल चेतना में उभार आइल आ आर्थिक, सामाजिक आ राजनैतिक स्तर पर बरिसन से जकड़ल पुरान जड़ता टूटल आ गैरकांग्रेसवादी सरकार मध्यावधि चुनाव के बाद अस्तित्व में आइल । मध्यावधि चुनाव के बाद के समय उहे समय रहे जवना घरी जीवन के हर क्षेत्र में उच्छृंखला आपन पैर पसारे लागल रहे । जीवन के हर क्षेत्र में भष्ट्राचार के पैसार अब धीरे-धीरे जादा उजागर होखे लागल । जीवन-जगत से लगायत सरकारी कार्यालय में भष्ट्राचार, चोरी-घुसखोरी आ भाई-भतीजावाद के जोर देखाई देवे लागल रहे । चुनाव जीते खातिर कवना-कवना तरह के तिकड़म लोग भिड़ावेला एकर सबसे सशक्त उदाहरण बा रामनाथ पांडेय के कहानी 'छग्गन मिस्तिरी', बच्चन पाठक 'सलिल' के 'स्वर्ग में चुनाव', दिवाकर लाल 'अंकुर' के 'ओट देवता', मधुकर सिंह के 'नया संस्कार' आ प्रो० ब्रजकिशोर के 'दल बदलू के डायरी' । एह सब के अलावे रामनाथ पांडेय के कहानियन में अपना समाज के ओकरा गतर-गतर में पेहम भइल भ्रष्टाचार आ चोरी-घुसखोरी के विरोध हर स्तर पर नजर आवेला । 'अँजोरिया छपिटात रहे' में नायक के मानसिक द्वंद आ मनोवैज्ञानिक गहराई काफी बा । पति-पत्नी के संबंध के लेके लिखल गइल कहानी 'दुरपतिया' आ 'सतवन्ती' के देखल जा सकेला । 'सतवन्ती' कहानी में लेखक समाज में फइलल असमानता आ ओकरा से उपजल भूख आदिमी के तन बेंचे पर मजबूर क देला । मनबोध के ई कहल कि 'ना रे पुने होखी । अदमी के परान बचवला से लमहर कवनो दोसर पुन ना होखे' सफेदपोश समाज के चरित्र के कलई खोल के रख देत बा । एही कुरीतियन के कोख से जामल भ्रष्टाचार के लेके बहुते कहानियन के सृजन भइल । डॉ० स्वर्णकिरण के कहानी 'गुलाब आ कँटइला' में समाज में फइलल छल आ प्रपंच के जाल में फँसल आदमी लाचार छटपटा रहल बा । समाज में पसरल कुरीति ऊँच-नीच, भेद-भाव के विरोध परम्परागत ढंग से अपना सीमा में रहके कइल गइल बा । 'पह ना फाटल रहे' कहानी के हीतलाल अइसन लाखो लोग आजो अपना मन में जमीन के आस लेले मिसिर अइसन भूमिपति के षड़यंत्र के शिकार हो रहल बा । आ सरकारी तंत्र ओकरे पछ में चुपचाप खाड़ हो जात बा । समाज में घटत तरह-तरह के घटनन आ जिनिगी के चढ़ाव उतार-आ आदमी के बीच के सम्बन्धन के लेके, प्रेम, रोमांस आ भ्रष्टाचार के आधार बनाके ओकरा के मनोवैज्ञानिक गहराई देवे के काम डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय के कहानियन में भइल बा । गाँव से लगायत नगर के परिवेश इनका कहानियन के कथ्य बनल बा । एक तरफ 'लोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसर गइल' अइसन कहानी बा त दोसरा ओर 'सून मॉग' आ 'जन बिसारेब' अइसन कहानी बा। 'पुरान घड़ी' कहानी में अवकाश प्राप्त आदमी के तुलना पुरान घड़ी से करत लेखक आर्थिक तंगी में जीयत परिवार के बीचे संबंधन में उभरत तनाव के उकेरे के सफल कोशिश कइले बा। ऊँहवे पाण्डेय सुरेन्द्र के कहानी 'हिन्दू सुग्गा' अतीत में जीये वाली बड़ी बी के आ सुग्गा के माध्यम से साम्प्रदायिक सद्भाव जगावे के कोशिश कइले बा। गाँवन के बदलत परिस्थिति आ संदर्भन के सटीक मूल्यांकन संजीदगी के साथे कामता प्रसाद ओझा दिव्य के कहानी में भइल बा। 'बसन्ती', 'झूठ-सांच', आ 'चिटुकी भर सेनुर' आ 'अन्हरिया के फूल' कहानियन में गाँव, गाँव के कुरूप साँच संपूर्णता के साथे उपस्थित भइल बा। 'झूठ-सांच' में जहाँ समाज में भष्टाचार के जनक ढोंगी साधुअन के चरित्र के पर्दाफाश कइल गइल बा त 'चिटुकी भर सेनुर आ अन्हरिया के फूल' में गाँवन में अमरलती अइसन पसरल तिलक, दहेज प्रथा के ऊपर व्यंग्य विद्रूप के रूप में उभर के आइल बा। उँहवे चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कहानियन में आज के गाँवन के सही तस्वीर देखे के मिलेला आ संवेदनहीन होत जात आदमी के मरत अत्मो के दरसन होला। 'बड़प्पन' आज के संवेदनशून्यता के स्थिति के कहानी बा। जहाँ डाक्टर मुरदो के सूई देके फीस वसूल लेता ओहिजा गनिया ई जनला के बादो कि भाड़ा ना लेला प घर में खाना ना बनी भाड़ा नइखे लेत एगो आदर्श उपस्थित करता जहाँ आदमीयत के झुकत सिर उठ जात बा। ईश्वरचन्द्र सिन्हा के कहानी 'भैरवी क साज' बनारस के पृष्ठभूमि पर लिखल एगो सशक्त कहानी बड़ुए जवना में अपना समय अपना समाज के जीवंत चित्र उकेरल गइल बा। ई कहानी जयशंकर प्रसाद के 'गुण्डा' आ भगवती चरण वर्मा के 'दो बाँके' के इयाद करा जाले।

हिन्दी नयी कहानी के काल खण्ड सन् 56 से 65 तक पसरल बा। एही आस-पास भोजपुरी कहानी में अभिव्यक्ति के नया रास्ता तलाशे के शुरूआत हो गइल रहे। नयी कहानी अपना के पुरान कहानी से वैचारिक धरातल आ जिनिगी के यथार्थ के अंकन के आधार प अलगावे ले नयी कहानी आदर्श आ उपदेश के मुद्दा के कहानी मे नकारत रहे। नयी कहानी के बारे में राजेन्द्र यादव के विचार बा कि काल के प्रवाह में, व्यक्ति समाजिकता के बोध आ स्थिति आज के कहानी के विषय-वस्तु बड़ुए। कथाकार व्यक्ति के ओकरा समग्रता में देखे के आग्रह करेला, व्यक्ति के ओकरा सामाजिक परिवेश, मानसिक अंतर्द्वन्द आ व्यवहारिक जीवन के तकाजन या अउर अन्य आवश्यकतन के एगो संश्लिष्ट प्रक्रिया के रूप में पावे के चाहेला। एही से कहानी के कवनो तत्त्व निमित्त भा आलंबन बन के ना खुद आश्रय या विषय-वस्तु बन के आवेले आ एकरे साथे नयी कहानी अपना के परम्परित कहानी से संवेग, कथ्य, आ शिल्प के स्तर पर अलगा करेले, साथे-साथ नई कहानी परम्परागत रूढ़ियन के तुड़के जिनिगी के नया जमीन प नया मूल्य स्थापित कइलस। भारतीय समाज के मध्यवर्गीय आ गाँव मे रहेवाला निम्न मध्यवर्गीय समाज आजादी के बाद पनपलं भ्रष्टाचार के सबसे बड़ शिकार भइल। एह बदलत परिस्थितियन में टूटत सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यन के बीचे उभरल क्रूरतम नारकीय स्थिति के सहे खातिर ऊ मजबूर भइल बा। एही यथार्थ परिस्थितियन के संवेदनात्मक परिणति नई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी में भइल बा ।

भोजपुरी में नई कहानी के शुरूआत हिन्दी नई कहानी के प्रभाव में भइल । भोजपुरी में एकरा खातिर कवनो साफ रेघारी नइखे लउकत । भोजपुरी नई कहानी के शुरूआत 'भोजपुरी साहित्य' (डा० जितराम पाठक) के कहानी विशेषांक से मानत चितरंजन लिखले बाड़न- आजके कहानी अनुभव आ समझदारी के कहानी ह.आ अइसन कहानी भोजपुरी में भी लिखात बाड़ी स । उदाहरण खातिर 'आग के लहरि'। (जितराम पाठक), 'सिउटहल' (रामनाथ पाण्डेय) 'धीम आवाज' (विजय मोहन सिंह) आ 'मुआर' (मधुकर सिंह) के लिहीं । रउरा पढ़ीं त पाइब कि एह कहानियन के दुनियाँ गढ़ल दुनियाँ ना, अपना अनुभव के दुनियाँ बा जहाँ किछुओ नीमक में मिरिच नइखे लगावल गइल, कवनो रोमानी उछाह नइखे । ई सभ कहानी जीभ से ना आँख से कहल गइल बाड़ी स । नयी भोजपुरी कहानी भी मूल रूप से गाँव के कहानी ह बाकिर नया भाव बोध के कहानी ह । अब ई बोध भगजोगनी (सिउटहल) के भी भ गइल बा कि मुखिया कुल ऊपर-ऊपर छाली घींचत बाड़न स आ गाँव में सरज के पेंट पहिनले रामसेवक जी पहुँच चुकल बाड़न । घर, घर नइखे रह गइल कहीं कवनो उछाह नइखे । सबकुछ गड़बड़ हो गइल बा । सबलोग एक दोसरा से टूट रहल बा । कतना गड़बड़ हो गइल बा । कहे के कुछ, कहा जात बा कुछ । बाप अपना अधेड़ आ कुआंर बेटी के 'रामचरित मानस'.थम्हावत भूठ बोल देत बा कि 'मोट अक्षरवाला तहरा माई खातिर ले आइल रहली हँ । तहार माई पढ़िहें । (धीम आवाज, विजय मोहन सिंह) आ घुटन अतना अधिक बा कि आदमी अकबका के पूछत बा - साँचो रे, दुनिया में अइसन कवनो दवाई नइखे जे अदिमी खाके जिनगी भर बउराइल रहित (मुआर, मधुकर सिंह)। ई दुनियाँ घुटन आ निरासा के दुनिया ह जहाँ हम खाली देखनिहारे रहब' ('आजि के लहर' जितराम पाठक) कहके कुछ लोग अपना के ढाँढ़स देता आ कुछ लोग 'जो ससुर खा जो 'मुआर' (मधुकर सिंह) कह के मुँह फेर ले तारे । एह काल के प्रतिनिधि कहानीकारन में उमाकान्त वर्मा, कान्हजी सिंह तोमर, मधुकर सिंह, जवाहर सिंह, ऋृषिश्वर, मधुरकमल, रूपश्री, प्रो० ब्रजकिशोर बाड़न । उमाकान्त वर्मा के कहानी 'सुखिया' नया भाव बोध आ प्रस्तुति के साथे भोजपुरी में संपूर्णता से नई कहानी के रूप-भाव के साथे प्रगट भइल । एह कहानी में सुखिया के चरित्र के उदात्तीकरण करत लेखक सुखिया से वहावत बा- 'भगत खातिर सरीर के किनल आ बेंचल के मोल का ह ? भइ चले, हैजा से गाँव बँचल रहे आ गरीब के आपन गरीबी से दूर करे खातिर रोपेआ मिलत रहे त माई सुखिया हमेशा हर रात कवनो बाँह में जाके बरन आ समय से परे बँधे में कबहीं ना हिचकी । 'सामाजिक विद्रूपता के आजो अलगे हटके जवाहर सिंह के कहानी 'अपना घर के अदिमी' में आदमी के भीतर के काइयाँपन उजागर भइल बा । कइसे आदमी घरो के आदमी के अपना स्वार्थ में नोकर के दर्जा दे देला एह कहानी में उभर के आइल बा। चाचा के मक्कारी आ धूर्तता खूबे उजागर भइल बा । दोसरा ओर मधुकर सिंह के कहानी 'जुग' वर्ग-चेतना के प्रतिनिधि कहानी बा । नई कहानी से आपन रचनाशीलता के शुरूआत करेवाला कथालेखकन में, जेकर रचनासृजन के गति आजुओ अवरूद्ध नइखे भइल, प्रो० ब्रजकिशोर आ रूपश्री के नाँव लिहल जा सकेला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

। प्रो० ब्रजकिशोर के 'दलबदलू के डायरी' 'बालू के भीत', 'लहोक' आदि कहानियन के देखल जा सकेला । रूपश्री के कहानियन में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के साथे-साथे सामाजिक विषमता, सामान्य जन के भीतर पनपत आक्रोश आ निम्नमध्यवर्ग के लाचारी के चित्रण खूब सटीक भइल बा । 'मन के चेहरा' आ 'मकड़ा के जाला आ फोड़ा के टीस' में शिल्प के कसाव आ मनोवैज्ञानिक गहराई के प्रयोग भइल बा । 'खोंता से बिछुड़ल पंछी' निम्नवर्गीय राजकुमारी के सोझबकई आ मान के कथा बा। एकरा अलावे एह खेमा के कहानीकारन में गणेशदत्त किरण, अरूण मोहन भारवि, बिन्दु सिन्हा, रामेश्वर प्रसाद, रामेश्वर प्रसाद वर्मा, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा आ घनश्याम मिश्र के नाँव प्रमुख बा ।

नई कहानी आन्दोलन के बाद हिन्दी में अकहानी, सहज कहानी, सक्रिय कहानी, समान्तर कहानी, प्रगतिशील कहानी आ जनवादी कहानी से लगायत समकालीन कहानी ले आन्दोलन भइल । बीच में आंचलिक कहानी लिखाइल बाकिर भोजपुरी कहानी आन्दोलन के अझुरहट से अलगा अपना राहे चलत रहल । बीच में कुछ सुगबुगाहटो भइल बाकिर कवनो तेजी ना आ पावल । जनवादी कहानी आंदोलन के प्रवक्ता 1978 में आपन कहानी संग्रह 'निदान' लेके रजनीकांत 'राकेश' अइले बाकिर भोजपुरी जगत में ओह आन्दोलन के कवनो प्रभाव पाठकन पर ना पड़ल आ ई धारा आंदोलन के रूप में एहीजे थम के रूक गइल ।

भोजपुरी में समकालीन कहानी के शुरूआत सातवाँ दशक के उत्तरार्द्ध में शुरू हो गइल रहे । समकालीन के लोग अपना-अपना समझ आ गति से समझे बूझे के कोशिश करत रहे। मधुरेश के विचार से समकालीनता-'समकालीन होखे के अर्थ खाली समय के बीच होखला से नइखे । समकालीन होखे के अर्थ समय के वैचारिक आ रचनात्मक दबावन के झेलत ओकरा से पैदा भइल तनाव आ टकराहट के बीचे अपना सर्जनशीलता के जरिए अपना होखे के प्रभावित कइल होला' त रघुवीर सहाय समकालीनता के 'मानव भविष्य के प्रति पक्षधरता के रूप में देखले, कवि धूमिल समकालीनता के सबसे बड़ पहचान ओकरा आक्रमकता में तलशले । नागेन्द्र प्रसाद सिंह, समकालीनता के 'काल' बोध आ काल चेतना से जोड़ के देखे के आग्रही बाड़न । साँच पूछीं त समकालीनता के काल बोध से मुक्त होके चेतना के स्वर पर सर्वकालिक होखे के चाहीं काहे कि प्रवहमान आ गतिशील भइल ओकर स्वभाव बा। समकालीनता अपना समय अपना समाज के सत्य के मूल्य ओकरा जीवन-मूल्य के चेतना के स्तर पर एह ढंग से स्थापित करेले कि ऊ सर्वकालिक हो जाला । समकालीनता के कालबोध से मुक्त भइले प प्रेमचन्द आ कबीर आजो प्रासंगिक आ समकालीन बाड़े । समकालीनता के तलाश खाली वस्तुगते ना होखे के चाहीं शिल्प-शैली के स्तरो पर होखे के चाहीं । आज रचनाकार जहाँ जड़ होत स्थापना आ मूल्यबोध प कठोरता से प्रहार करत ओकरा के तुड़त बा त दोसरा ओर अपना जीवन के अनुभवन से कथा-साहित्य के नया सौंदर्य शास्त्रो गढ़ले बा जे ओकरा के दोसरा से हिगरा के एँगो विशिष्ट पहचान देला । ई विचार कवनो अंतिम साँच नइखे ।

समकालीन भोजपुरी कहानियन के बीचे से गुजरला के माने बा अपना समय-सत्य के पीड़ादायक जंगल से गुजरल । जहाँ आम आदमी अपना अस्तित्व के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्षा खातिर, आपन नष्ट होत सांस्कृतिक विरासत के बचावे खातिर लगातार उपभोक्तावादी अपसंस्कृति के, वैश्वीकरण के बढ़त दबाव के बीचे पीसात, लहुलुहान भइल बा। एह बदलत जीवन परिस्थिति, समकालीन जीवन दृष्टि आ मूल्य बोध के समकालीन कहानीकार रचनात्मक स्तर पर अपना कहानियन में उठावे के कोशिश कइले बा। समकालीन भोजपुरी कहानी में हमनी के जिनिगी के हर छोट-बड़ घटनन आ लड़ाइन के अभिव्यक्ति भइल बा। विचार के धरातल पर सामाजिक कुरीति, अंधविश्वास, सामन्ती व्यवहार, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, अपराध आ नैतिक मूल्यहीनता के खिलाफ आम आदमी के लड़ाई के समकालीन कहानी तेज कइले बा।

समकालीन भोजपुरी कहानी लेखन प नजर डालल जाय त वरीय रचनाकार से नवका पीढ़ी तक सृजनरत कहानीकारन के एगो लमहर कतार बा जे अपना लेखन से भोजपुरी कहानी के भंडार भर रहल बा। समकालीन भोजपुरी कहानी में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, विसंगति, ग्रामीण परिवेश के बदलत भयावह तस्वीर, भूमि संघर्ष, आ नक्सलवादी आन्दोलन के दौर मुख्य रूप से कथा लेखन के आधार भूमि रहल बा।

समकालीन भोजपुरी कहानी में जीवन के दारूण स्थितियन के चित्रण बड़ा बेलौस ढंग से कइल गइल बा। सर्वहारा वर्ग के स्थिति बहुते खराब भइल बा। इहाँ तक कि ओकरा पैर के नीचे के जमीनो आपन नइखे रह गइल जवना के ऊ आपन कह सके। नागेन्द्र भट्ट के कहानी 'ढूँठ पेड़ आ हरिअर पतई' में एही बदलत परिस्थितियन के अंकन कइल गइल बा। प्रो० ब्रजकिशोर के कहानी 'एगो आउर अभिमन्यु' निम्नवर्गीय समाज में अपना जीवन के बेहतरी के प्रति पनपत सजग चेतना वाला नवहा गंभीरा के कहानी बा जवन भ्रष्ट पुलिस प्रशासन, पूँजीवादी मानसिकता आ सामंती प्रवृत्तिवाला लोगन के मिलीभगत के शिकार होके अभिमन्यु अइसन शहादत के प्राप्त होता बाकिर जे चेतना के ऊ लोगन में जगवले रहे ऊ मधिम नइखे होत। तैयब हुसैन के कहानी 'बासु' में एह चेतना के थोड़ा अउरी फैलाव होत बा। मध्यवर्गीय चेतना आ ओकरा में घुस आइल गंदा राजनीति आ भ्रष्टाचार प जम के प्रहार विजेन्द्र अनिल के कहानियन में भइल बा। सरकारी घोषणा आ ओकरा ढुलमुल नीति आ गँवई समाज के विसंगतियन पर पी० चन्द्रविनोद के कहानियन में प्रहार भइल बा। कृष्णानन्द कृष्ण के कहानियन के बारे में आपन विचार प्रकट करत नागेन्द्र प्रसाद सिंह लिखले बाड़न-'सामाजिक कहानियन में बदलत मानसिकता आ मूल्यन के चारो ओर पनपत जातिवाद, सामंती अत्याचार, हत्या, बलात्कार, अपराध कर्म, बेरोजगारी आदि के विषय बनावल गइल बा त राजनैतिक कहानियन में आज के भोजपुरिया क्षेत्रे के ना बलुक सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में राजनैतिक मूल्यहीनता, दाँव-पेचं, हिंसा आ अपराध कर्म का साथ लगाव, व्यक्तिगत सम्पति अर्जित करे के लिप्सा के वर्णन बा त दोसरा ओर एकरा विरोध में समाजवाद खातिर संचालित वामपंथी दल के वर्ग से वर्ण में संतरण के स्थिति आ तद्जन्य भटकाव पर क्षोभ व्यक्त कइल गइल बा। 'मूस बिलाई के खेल'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में एही भटकाव का ओर ईशारा कइल गइल बा ।' गाँवन के जिनेगी में पसरल पेचीदगी के इजहार डा० अशोक द्विवेदी के कहानियन के मूल आधार बा। 'बकसऽ ए बिलार' कहानी में गाँव में जड़ जमवले अन्धविश्वास ओकर पोषक चउधरी अइसन लोग, ओह में फँसल टिसुरी आ गँवई दाँवप्रेच के कथा बड़ा कुशल ढंग से बिनल गइल बा । कहानी आखिर में चरम स्थिति प पहुँचत बा जब टिसुरी चऊधरी आ शोखा लोग के हाथ प तीन गो रोपेया धके कहत बाड़न कि अब हमरे बकस दी सभे। सुधा वर्मा के कहानी 'देवाल' के नायक परम्परा के मोह में जकड़ल ओकरा रक्षा में ओकरे साथ सती हो जात बा । ऊहवें बरमेश्वर सिंह के कहानी 'भूत' में पौराणिक कथा के सहारे जाति व्यवस्था व प्रहार कइल गइल । कथा नायक जब यमराज के पूछत बा कि पहिले रउवा बताईं कि भूखा के कवन जात होला त ऊ खिसिया के ओकरे सराप देतारें की तें भूत हो जो । बाकिर ई सवाल आज ले अनुत्तरित बा । ओहिजे सुरेश कांटक के कहानी 'जनावर' में मध्यवर्गीय समाज में दनवा-दईत अइसन फैलल दहेज आ ओकरा में पीसात रंजू अइसन लइकिन के कहानी बा जवना में रंजू के ई फैसला कि हम अइसन जनावरन से शादी ना करब । जवना खातिर रूपिये पइसा सब कुछ बा। रंजू के साहस भरल निर्णय में समाज के एगो नया दिशा देवे के प्रयास कइल गइल बा । ब्रजकिशोर दूबे के कहानी 'सकदम' में एगो मध्यवर्गीय परिवार के पीड़ादायक दारूण स्थितियन के चित्रण भइल बा । नायक परम्परा के निबाहे के चक्कर में सकदम में पड़ल उहापोह के स्थिति में लोक-मर्यादा के सामने घुटना टेक देत बा ।

भोजपुरी कहानी के विकास-यात्रा के देखत संतोष व्यक्त कइल जा सकत बा । एक ओर पुरान खेवा के लिखवइयन में रामनाथ पाडेय, डॉ० विवेकी राय, जवाहर सिंह, मधुकर सिंह, पाडेय सुरेन्द्र, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, प्रभुनाथ सिंह, सत्यनारायण सिंह अइसन लेखक अपना लेखन में सक्रिय बाड़न त दोसरा ओर प्रो० ब्रजकिशोर, पी० चन्द्र विनोद, तैयब हुसैन, कृष्णानन्द कृष्ण, डॉ० अशोक द्विवेदी अइसन कथाकार कथा सृजन के ऊँचाई देबे में आपन योगदान दे रहल बाड़न । भोजुपरी कथा के भविष्य बरमेश्वर सिंह, विनय बिहारी सिंह, प्रकाश उदय, विष्णुदेव तिवारी, राकेश प्रवीर आ जीतेन्द्र वर्मा अइसन नवका पीढ़ी के कथाकारन के हाथ में दिनो-दिन पोढ़ हो रहल बा।

एकइसवीं शताब्दी में भोजपुरी कहानी के स्वरूप आ दिशा में बदलाव आइल निश्चित बा । काहे कि आज के युग के माँग के अनुरूप काल-चेतना आ स्पेश प आदमी के वर्चस्व बढ़ रहल बा, वैज्ञानिक खोज आदमी के भगवान के नीयरा पहुँचा रहल बा, विकसित देश आ पूँजीवादी देश विश्व बाजार आ वैश्विक भूमंडलीकरण के माध्यम से अपना बाजार के पैसार अविकसित देशन प थोप रहल बा। विश्व बाजार के पैसार से अविकसित देशन के सबसे पहिले अर्थव्यवस्था गड़बड़ाला त ओकर चूल हिल जाला; समाज-देश के ढाँचा छिन्न-भिन्न होखे लागेला। एकर प्रभाव भाषा-साहित्य आ संस्कृति पर जबरदस्त रूप से पड़ेला । भोजपुरी कहानी प एकर प्रभाव पड़ सकेला एह से एकर पड़ताल कइल जरूरी बा ।

सबसे पहिला प्रभाव आदमी के रहन सहन प पड़ी। आदमी के आचरण आ जीवन में खुलापन आ उच्छृंखलता के समावेश भइला के कारण कहानी साहित्य के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संरचना आ ढाँचा में बदलाव आ सकत बा । कहानी में विषय-वस्तु से लगायत शिल्प-शैली के स्तर पर बदलाव संभव बा । आदमी के जीवन के खुलापन आ उच्छृंखलता के तरह स्वच्छन्दता के प्रभाव बढ़ी । लंबा कहानियन के दौर खतम होके छोट-छोटे कहानियन के प्रचलन बढ़ी ।

पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण से प्रभावित समाज में नैतिक मर्यादा के कवनो लछुमन रेखा ना रह जाई । नैतिक-अनैतिक सब एके पाँत के चीज हो जाई एह सब के चर्चा कथा साहित्य में ओही रूप में आई ।

पूँजीवादी बुर्जुआ समाज के दबाव से समाज के बदलत स्वरूप में सबसे जादे प्रभावित दू वर्ग के लोग होई । मध्यम वर्ग आ निम्न मध्यम स्तर के लोग । मध्यवर्ग के उपर वाला लोग जइसे-तइसे अपना के उच्च वर्ग से जाड़ी आ निम्न मध्यमवर्ग के स्थिति बिगड़ी आ ऊ सर्वहारा वर्ग में जा के मिल जाई। सर्वहारा वर्ग के संख्या वृद्धि से सामाजिक बदलाव आ सकत बा। एह सामाजिक बदलाव के आधार आर्थिक ना होके स्वार्थ से प्रेरित जातिगत भावना के साथे-साथ आ बदला के भावना से भरल होई जेकर दूरगामी प्रभाव समाज के एकता, सद्भावना, भाईचारा, आदमीयत जइसन मूल्यन प पड़ी । साहित्य में पाश्चात्य देशन से आयातित प्रविधियन के पैसार होई ।

कथालेखन प एह सब बदलावन के प्रभाव पड़ी एकरा से इनकार कइल मुश्किल बा । कथ्य-कथानक, विषय-वस्तु के साथे-साथे शिल्पों में बदलाव आई उच्छृंखल जीवन पद्धति अइसन कहानी आपन सीमा विस्तार करत लघु उपन्यास के नियरा ले पहुँची जवना में कलात्मकता के अभाव रही । सीधा-सपाट वर्णन के भरमार रही । इहो संभावना बा कि लघुकथो के प्रचलन बढ़ो । बाकिर सब के बावजूद पाठक मन ओही रचना के पसन्द करी जवना में संवेदनशीलता आ आदमीयत्ता के बात होई । एह से ई उमेद कइल जा सकत बा कि सब बदलाव भइला के बादो कहानी, कहानी रही । बिना मानवीय संवेदना के पकड़ले कवनो रचना क्लासिक नइखे बन सकत ।

संपादक-'पुनः'
पथ-8बी., अशोक नगर
कंकड़बाग, पटना-800 020

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लघुकथा

भोजपुरी लघुकथा : विकास आ सम्भावना

❑ सूर्यदेव पाठक 'पराग'

लघुकथा के वर्तमान समय में लिखे जाये वाली अनेक गद्य विधन में महत्वपूर्ण स्थान बा । आज के व्यस्त आ बेचैन वैज्ञानिक युग में भारी भरकम उपन्यास आ लमहर कहानी पढ़े के जगह आम पाठक जिनगी में घटल कवनों बेधक घटना के छोट काया के कथारूप में पढ़के कवनो निष्कर्ष पर पहुँचे खातिर आकुल-व्याकुल लउकत बा । इहे कारण बा कि अपना छोट काया में रचाइल आ नावक के तीर जइसन भीतर तक बेधे के क्षमता रखेवाली लघुकथा आज हर भाषा में तेजी से विकास का ओर बढ़त जात बिया ।

लघुकथा के परिभाषा देत डॉ० किशोर काबरा के कहनाम बा - "लघुकथा संक्षिप्त आकार की वह प्रभावपूर्ण कथात्मक गद्य-विधा है; जो मानवीय संवेदनाओं के किसी एक अंश को अपनी चोटदार भाषा एवं कलात्मक शिल्प के द्वारा पूरी सघनता एवं तीव्रता से प्रकट करती है ।"[1]

लघुकथा के श्रेष्ठ लघुकथा के रूप में प्रतिष्ठित करे खातिर कुछ महत्वपूर्ण तत्वन के जरूरत पड़ेला जवनन के आत्मसात कइल कवनो सफल लघुकथाकार खातिर जरूरी होला । एह सम्बन्ध में श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के विचार बड़ा सटीक बा -"लघुकथा एगो कथा-विधा ह, जवना के नाँव में सटल 'लघु', शब्द ना खाली कथा-आकार के लघुता प्रदान करेला, बलुक ई कथा के विभिन्न तत्वन-कथ्य, घटनाक्रम, परिस्थिति, परिवेश, चरित्र, कथा-शिल्प, संवाद-योजना, कथा-रस-निष्पति, भाषा, काल-स्थान आयाम आ कथा-उद्देश्य- के लघुता प्रदान करेला, बाकिर ओकरा अपना लघुतो में कथा बनल रहल आवश्यक होला । एह सभ के सन्तुलित आ सम्यक् रूप से सहेज के पाठक का सामने प्रस्तुत क दिहलें लघुकथा के वास्तविक सफलता ह ।[2]

ऊपर के वक्तव्य से ई बात साफ हो जाता कि ई विधा सीप में समुन्दर के अँटावे के श्रमसाध्य आ साधनाजन्य कलात्मक सृजन ह । जे एकरा के अपना श्रम आ साधना से साध लेला ओकरा लघुकथा में नावक के तीर नियर बेधे के क्षमता आ जाला, जवन पाठक के भीतर सहजे पइठ के ओकरा दिमाग के तिलमिला देला । उहे लघुकथा उत्तम मानल जाले जवन अपना में ऐटम नियम विस्फोटक तत्त्व समाहित कइले होखे आ लघुकथा के अन्त में वैचारिक विस्फोट से पाठक भा श्रोता के सोचे पर मजबूर क देव ।

लघुकथा, समाज के विसंगतियन पर करारा चोट करेवाली लोकप्रिय विधा ह । एह बारे में डॉ० निशान्त केतु जी ठीके कहले बानी -"लघुकथा सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विसंगतियों का कलात्मक भंडाफोड़ शिल्प है । ये विसंगतियाँ उरेबीपन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असामंजस्य, अन्याय, कुरूपता, विद्रूपता, अमानवीयता, अस्वाभाविकता के परिसर से सम्बद्ध है। व्यंग्य-बोध इन्हीं विसंगतियों पर चोट करता है।[3]

वर्तमान जीवन में पल-पल घटेवाली घटनन के सटीक चित्र उकेरे में लघुकथा सभसे सशक्त विधा के रूप में मान्यता पा चुकल बिया ए में दू मत नइखें हो सकत।

लघुकथा के बीज वेदन के प्रतीक कथा, उपनिषदन के दृष्टान्त कथा, ब्राह्मणग्रंथन में आख्यान कथा, पुरान के अन्तर्कथा, बुद्ध के जातक कथा आ पंचतंत्र-हितोपदेश के छोट-छोट कथा में देखल जा सकेला। विश्व-साहित्य में काफ्का, चेखव, खलील जिब्रान, टालसटॉय, गोर्की जइसन विश्व प्रसिद्ध लेखकन के लिखल लघुकथा पावल जाला।[3]

हिन्दी में पहिले पहिल भवभूति मिश्र के एगो लघुकथा 'बची खुची सम्पति' सन् 1956 ई० में आइल, जवन ए विधा के पहिलका संग्रह होखे के गौरव पवलस। अभी ले एकरा स्वरूप के सैद्धान्तिक विवेचन शुरू ना भइल रहे। श्री कृष्णानन्द कृष्ण के अनुसार - "एकरा स्वरूप के सैद्धान्तिक विवेचन आ स्वतंत्र विधा का रूप में स्थापन पहिला बेर डॉ० जगदीश पाण्डेय अपना आलेख 'लघुकथा : स्वरूप मीमांसा' में कइले बाड़न।[4]

सातवाँ-आठवाँ दशक आवत-आवत हिन्दी में लेखन आ समीक्षा के दिसाईं लघुकथा आन्दोलन के रूप लेके आगे बढ़त रहल।

भोजपुरी लघुकथा के आरंभ आ विकास-उपलब्ध सामग्रियन के आधार पर भोजपुरी लघुकथा के पहिलका रूप आचार्य महेन्द्र शास्त्री का सम्पादन में सन् 1948 ई० में प्रकाशित 'भोजपुरी' पत्रिका में उनके छद्म नाँव से छपल 'का ऊ सोना ना रहे' में देखे के मिलत बा। एह बारे में श्री कृष्णानन्द कृष्ण के कहनाम बा - "एह लघुकथा-रचना के अगर आज के लघुकथा के कसौटी प कसल जाय त कथ्य, आकार आ प्रस्तुतीकरण के अंदाज से एकरा में लघुकथा होखे के बहुत तत्त्व मौजूद बा। हमरा समझ से एकरा के लघुकथा माने में कवनो हरज ना होखे के चाहीं।"[5]

एह तरे भोजपुरी के पहिलका लघुकथाकार आचार्य महेन्द्र शास्त्री के आ उनकर लघुकथा 'का ऊ सोना ना रहे' के पहिलकी लघुकथा मानल उचित बा।

काल-विभाजन-भोजपुरी लघुकथा के विकास पर विचार करे में सुविधा खातिर एकरा के तीन काल में बँटवारा कइल गइल बा- (क) प्रारंभ काल - सन् 1948-1960 ई०, (ख) मध्यकाल - सन् 1961-1980 ई० आ (ग) समकालीन - सन् 1981 से अबतक।[6]

(क) प्रारंभिक काल-भोजपुरी लघुकथा के प्रारंभिक काल में 'का ऊ सोना ना रहे' के अलावा कवनो दोसर लघुकथा देखे में ना आइल। हँ, 1952 ई० में श्री विश्वनाथ सिंह के सम्पादन में प्रकाशित 'भोजपुरी' में लघुकथात्मक कुछ छोटे-छोटे रचना जरूर अइली सँ, जवना में पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के 'गुरूदक्षिणा' आदि रचनन के भोजपुरी लघुकथा के नजदीक मानल जा सकत बा।

(ख) मध्यकाल - एह काल में भोजपुरी लघुकथा अपना विकास के लाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिखेरे लागल। ओकर पहिल फलक लउकल सन् 1964 ई० में जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् का ओर से प्रो० चन्द्रभूषण सिन्हा के सम्पादन में पनरहगो लघुकथाकारन के एकईसगो लघुकथन के संकलन 'छोटी मुटी गाजी मियाँ' नाँव से प्रकाशित भइला से। एह में डॉ० बच्चन पाठक 'सलिल', दिवाकर लाल 'अंकुर', जगदीश चन्द्र मिश्र, डॉ० सत्यदेव ओझा, डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', जय बहादुर सिंह, विधाधर शुक्ल 'विद्यार्थी', बालेश्वर राम 'यादव', रामवृक्ष राय 'विधुर', मे०चन्द्रभूषण सिन्हा, डॉ० विवेकी राय, कुमुद कुमार 'कमल', नरोतम पाण्डेय, विद्याभूषण प्रसाद आ अवधेश मुमार चौबे के लघुकथा प्रकाशित बाड़ी सँ। एह संकलन के बारे में आपन विचार प्रगट करत डॉ० सत्यदेव ओझा जी लिखले बानी - "हमरा एकर कईगो लघुकथा बेजोड़ लागत बाड़ी स। कहीं-कहीं कच्चापन भी बा लेकिन सत्य के झुठालावे के कोसिस कहीं नइखें।"

एह संकलन में आइल बालेश्वर राम 'यादव' के लघुकथा में रामस्वरूप तिवारी के हँसी आ ऊपरी नाटक के भीतर उनका करेजा के हाहाकार आ पतन के चीत्कार सुनाई पड़त बा। 'निर्भीक' जी के लघुकथा 'करम के खेल' में केतने 'विनोद' के रूदन-हताशा के गुप्त गाथा, बेबसी आ बेचारगी के लेखा-जोखा कइल बा। 'विधुर' जी के लघुकथा 'महँगू' खेतिहर हरवाहा के लाचारी आ ओकरा परबसता के ताजा दर्द के कहानी बा। जय बहादुर सिंह के 'नोकर' में पारिवारिक नोकर के अतृप्त आकांक्षा के उजागर कइल गइल बा। मे० चन्द्र भूषण सिन्हा के 'रोपेआ के चक्कर', 'अंकुर' जी के 'लालच के फल' आ 'विद्यार्थी जी के 'लालच' में धन के लालच में पड़ला पर होखेवाला किसिम-किसिम के छल-कपट के खुलासा कइल गइल बा। आदमी के हीन पक्षन के उजागर करेवाली एह लघुकथन के अलावा डॉ० सत्यदेव ओझा के लघुकथा 'ऊ दुनों' आ 'सवितरी' के पात्रन में आदमीयत अपना चरम विन्दु पर पहुँचल लउकत बा। जगदीशचन्द्र मिश्र के 'उमिर के फेर' आ 'बुद्धू सेठ' में समाज के बुद्धिमानी आ स्वार्थपरस्ती पर करारा व्यंग्य कइल बा। डॉ० विवेकी राय के लघुकथा 'तेलन में कड़ुआ तेल ह ई' में आदमी का बोरियत के बहुत सूक्ष्म चित्र उकेरल बा।

एह काल के लघुकथन के आगे बढ़ावे में जवना पत्र-पत्रिकन के योगदान रहल ओ में 'भोजपुरी कहानियाँ', 'जनता ललकार', अँजोर', 'उरेह', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', 'भोजपुरी कथा-कहानी', 'भोजपुरी माटी' आ 'पाती' आदि मुख्य बाड़ी सँ। एह काल के मुख्य लघुकथाकारन में सर्वश्री रामनाथ पाण्डेय, पाण्डेय सुरेन्द्र, प्रो० ब्रजकिशोर, कृष्णानन्द कृष्ण, भगवती प्रसाद द्विवेदी के नाँव लिहल जा सकेला।

(ग) समकालीन काल—ई काल भोजपुरी लघुकथा के विकास खातिर बहुते महत्त्वपूर्ण मानल जाई। एह काल-खण्ड में भोजपुरी लघुकथा एगो खास ऊँचाई तक पहुँचे में कामयाब भइल। पत्र-पत्रिकन में छपेवाली लघुकथन के अलावा 'लघुकथा विशेषांक', एकल संकलन आ सम्पादित संकलन के माध्यम से शताधिक लघुकथाकार अपना प्रतिभा के जौहर देखवले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् 1982 ई० में एह विधा के दोसरकी पुस्तक 'जमीन जोहत गोड़' प्रकाश में आइल, जवन श्री रामनारायण उपाध्याय के चालीसगो लघुकथा के एकल संग्रह हा। उपाध्याय जी के एह लघुकथन में शैलीगत कसाव आ शिल्प में सुघड़ता देखे के मिलत बा। ई अपना आस-पास घटत घटनन के लघुकथा के विषय बनवले बाड़े आ बहुत ईमानदारी से यथार्थ का स्वर के मुखर कइले बाड़े। युवा समीक्षक श्री निशान्तर के ई विचार सटीक बा - "रामनारायण उपाध्याय औसत आदमी के जिनगी में जे-जे दुख-तकलीफ के कारण बा, ओह सब कारणन के पर्दाफास कइले बाड़े। उनकर कुछ लघुकथा त उल्लेखनीय बन पड़ल बा जइसे - 'कचोट', 'सौदा', 'भूख', 'जतंरा के कीमत', 'लाजो के बराती', 'आत्म दरसन', 'समय के धरम', 'मान्यता', 'धारना', इत्यादि।'

जइसन की पहिले चर्चा कइल बा, समकालीन काल के पहिलहूँ कुछ लघुकथाकार पत्र-पत्रिकन के माध्यम से भोजपुरी लघुकथा के गतिशील बनावे में जुटल रहले। ओह रचनाकारन के लघुकथा में समकालीनता अपना कथ्य आ शिल्प- दूनू स्तर पर देखे के मिलत रहे। ओकरा अलावा कुछ आउर लघुकथाकार एह आन्दोलन में शामिल भइले आ नउवाँ दशक में प्रकाशित होखेवालीं पत्र-पत्रिकन में छपे लगले। अइसने लघुकथाकारन में से बारहगो चुनल लघुकथाकारन के पाँच-पाँच गो लघुकथन के एगो प्रतिनिधि संकलन सन् 1990 ई० में 'टुकी-टुकी जिनगी' नाँव से भोजपुरी साहित्य संस्थान, महेन्द्रू, पटना से प्रो० ब्रजकिशोर आ भगवती प्रसाद द्विवेदी के संयुक्त सम्पादन में प्रकाशित भइल। ई 'समकालीन भोजपुरी लघुकथा के पहिला प्रतिनिधि संकलन ह। एह में संकलित लघुकथाकार बाड़े - सर्वश्री रामनाथ पाण्डेय, प्रो० ब्रजकिशोर, कृष्णानन्द कृष्ण, पाडेय सुरेन्द्र, डॉ ब्रजभूषण मिश्र, ब्रजकिशोर दूबे, भगवती प्रसाद द्विवेदी, कुमार विरल, अतुलमोहन प्रसाद, बरमेश्वर सिंह, सूर्यदेव पाठक 'पराग' आ रूपश्री। एह में संकलित सभ लघुकथा वर्तमान समय में आवेवाली समस्यन के समेटत कथ्य आ शिल्प दूनू नजरिया से समकालीन लघुकथा के कसउटी पर सही उतरल बाड़ी सँ। पुस्तक के सम्पादकीय 'दू टुम' में एह तथ्य के खुलासा करत प्रो० ब्रजकिशोर जी लिखले बानी - "टुकी-टुकी जिनगी' में समय का सत्य के कथाकार लोग बड़ा ईमानदारी से उरेहले बा। शिल्प, कसाव, भाषा -कवनो दृष्टि से ई लघुकथा हिन्दी से उनइस नइखी सन। मुहावरा, कहाउत आ अर्थपूर्ण शब्द से कथ्य में जान आ गइल बा।"[7]

'टुकी-टुकी जिनगी' में कुछ अइसनो लघुकथाकार शामिल होखे से रह गइले जेकरा जुड़ला से एह संकलन के मात्रात्मक आ गुणात्मक विस्तार संभव रहे। ई लोग पत्र-पत्रिकन में लगातार लिखत-छपत रहले। अइसन स्थापित आ उदीयमान लघुकथाकार के एक मंच पर ले आवे के महत्त्वपूर्ण काम 'बिगुल'[8] (मासिक) के माध्यम से भइल सन् 1994-95 में। एकर तीनगो 'लघुकथा विशेषांक' प्रकाशित भइल जवना में नवासीगो लघुकथाकारन के एकहेगो लघुकथा संकलित कइल गइल आ साथ ही भोजपुरी लघुकथा पर दूगो आलेख श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के 'लघुकथा आ भोजपुरी लघुकथा' आ श्री अतुल मोहन प्रसाद के 'भोजपुरी में लघुकथा'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकलित बा। एह आलेखन में लघुकथा के सिद्धान्त पक्ष का साथ ही भोजपुरी लघुकथा पर विस्तार से चर्चा भइल बा। तीनों विशेषांकन के समेट के सन् 1994 में "तिरमिरी"[9] नाँव से एगो लघुकथा संकलन प्रकाशित भइल। ई संकलन अबले प्रकाशित सभ संकलन से ज्यादा लघुकथाकरन के समेट के भोजपुरी लघुकथा के विस्तृत फलक देबे में मददगार भइल। एह पुस्तक के सम्बन्ध में 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के प्रधान सम्पादक आचार्य पाण्डेय कपिल जी के विचार देखे लायक बा - "भोजपुरी में लघुकथा के अग्रसर विकास में 'बिगुल' नामक तिमाही के लमहर योगदान मानहीं के होई। सूर्यदेव पाठक 'पराग' के सम्पादन में प्रकाशित ई पत्रिका 1993-94 का दौरान लगातार तीन-तीन लघुकथा विशेषांक प्रकाशित कइलस जवना का माध्यम से भोजपुरी में नवासीगो लघुकथाकार उभर के अइले। आगे चल के 1994 में एह तीनों विशेषांकन के समेकित सामग्री 'पराग' का सम्पादकत्व में 'तिरमिरी' नाम से प्रकाशित भइल। भोजपुरी लघुकथा के विकास में 'पराग' जी के ई अवदान हर तरह से सराहे जोग भइल बा।"[10]

एह संकलन के लघुकथन के समकालीनता के चर्चा करत श्री कृष्णानन्द कृष्ण जी लिखले बानी -"जिनिगी के हर कोना-अँतरा के दुख-दर्द, दाँव-पेंच, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, नारी-यंत्रणा, लूट-पाट; हिंसा, बलात्कार, अपहरण, फिरौती आ आम आदमी के शोषण उत्पीड़न के सफल अभिव्यक्ति 'तिरमिरी' के लघुकथन में भइल बा।"[11]

भोजपुरी लघुकथा के विकास में 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के 1996 में प्रकाशित 'लघुकथा विशेषांक' के महत्वपूर्ण योगदान मानल जाई। एह में एकसठगो लघुकथाकारन के एकहेगो लघुकथा के समेकित कइल बा। एकरे पुस्तकाकार प्रकाशन 'एक मुट्ठी लाई' के नाँव से 1997 में भइल। एकर सम्पादन पाण्डेय कपिल आ कृष्णानन्द कृष्ण संयुक्त रूप से कइले बाड़े। एह पाँचवाँ संकलन के प्रकाशन से भोजपुरी लघुकथा के फलक आउर विस्तृत भइल आ एकरा माध्यम से कुछ अइसनो लघुकथा सामने आइल जे अबले कवनो पत्र-पत्रिका भा संकलन में शामिल ना हो सकल रहे। एह संकलन के एगो उल्लेखनीय पक्ष इहो रहल कि एह में भारतीय भोजपुरी लघुकथाकारन का साथे दूगो नेपालीय लघुकथाकारनो के लघुकथा शामिल कइल बाड़ी सँ। 'लघुकथा के कथा' (पाण्डेय कपिल) आ 'लघुकथा के रचनाविधान' (कृष्णानन्द कृष्ण) शीर्षक से दूगो उपयोगी सम्पादकीय आलेखन से संकलन के उपयोगिता बढ़ गइल बा।

एह तरह भोजपुरी लघुकथा विकास का ओर लगातार बढ़ रहल बिया। लघुकथाकार लोग पूरा मनायोग से एह क्षेत्र में जुटल बाड़े। पुस्तक-प्रकाशन के समुचित व्यवस्था के अभाव में बहुत लघुकथाकारन के पाण्डुलिपि फाइल में बन्द रहे खातिर अभिशप्त बाड़ी सँ। श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी के पाण्डुलिपि 'थाती' पर 1990 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से 'पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह पुरस्कार' मिल चुकल बा, बाकिर ऊ आजो ले प्रकाशित ना हो सकल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह पाँतियन के लेखको के एगो लघुकथा संग्रह के पाण्डुलिपि बन्द बक्सा में कैद बिया। पता ना, प्रकाशन के अभाव में केतने लघुकथाकारन के पाण्डुलिपियन के इहे स्थिति होई।

अबतक के भोजपुरी लघुकथन के लेखा-जोखा कइला पर एकरा विकास के संभावना आउर प्रबल लउकत बा। भोजपुरी के सैकड़न लघुकथाकार एकरा के आगे बढ़ावे में जीव-जाँगरे जुटल बाड़े। अब बिना संकोच के ई कहल जा सकेला कि भोजपुरी लघुकथा कवनो भाषा में लिखल जायवाली लघुकथा से कवनो मायने में कमजोर नइखे। खुशी के बात बा कि भोजपुरी क्षेत्र के हिन्दी में प्रतिष्ठित लघुकथाकारो भोजपुरी लघुकथा के सजावे सँवारे में लाग गइल बाड़े।

भोजपुरी लघुकथा क समीक्षो के क्षेत्र में अब अच्छा काम होखे लागल बा, जवना में कृष्णानन्द कृष्ण, प्रो० ब्रजकिशोर, नागेन्द्र प्रसाद सिंह के नाँव लिहल जा सकेला। भोजपुरी लघुकथा पर एगो समीक्षा-पुस्तक 'भोजपुरी लघुकथा : सिद्धान्त आ समीक्षा' (कृष्णानन्द कृष्ण) बहुत जल्दी आवेवाली बिया।

प्रकाशित होखेवाली नियत आ अनियतकालीन भोजपुरी पत्रिका-'समकालीन भोजपुरी साहित्य', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, 'भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका', 'पांती', 'भोजपुरी माटी', 'भोजपुरी लोक', 'उगेन', 'जगरम', ईंगुर', 'भोजपुरी लहर', 'लहर', भोजपुरी भारती पत्रिका, 'बयार', भोजपुरी कथा-कहानी आदि के माध्यम से भोजपुरी लघुकथा के प्रकाशन लगातार हो रहल बा। एह क्षेत्र में पुरनकी पीढ़ी के साथे नवकी पीढ़ी के लघुकथाकार तत्परता से लेखन में जुटल बाड़े आ वर्तमान समय के विसंगतियन -जाति-पाँति, साम्प्रदायिकता, घुसखोरी, हत्या, बलात्कार आ पुलिसिया जुल्म से लेके मानवीय मूल्यन के प्रतिष्ठित करेवाली घटनन के विषय बना के खूब लिख रहल बाड़े, जवना से एह संभावना के बल मिलत बा कि भोजपुरी लघुकथा विकास के राह पर उत्तरोत्तर आगे बढ़त रही।

बीसवीं शताब्दी के दरवाजा पर एकइसवीं शताब्दी के दस्तक साफ-साफ सुनाई पड़ रहल बा। बीसवीं शताब्दी के पाँचवाँ दशक में देश के आजादी का कोख से भारत के काट के पाकिस्तान के जनम आ राष्ट्रपति महात्मा गाँधी के निर्मम हत्या के साथ ही जातिवाद, साम्प्रदायवाद, आतंकवाद, बेकारी, बेजरोजगारी का भंवर में फँसल युवापीढ़ी में बढ़ल असंतोष, राजनीति अवसरवादिता आ 'रक्षको यंत्र भक्षक' के अक्षरशः चरितार्थ करत देशसेवाव्रती राजनीतिज्ञ के चारित्रिक गिरावट जइसन समस्यन के एकइसवीं शताब्दी का हाथे सउंप के बीसवीं शताब्दी बिदा ले रहल बिया।

लघुकथा भोजपुरी के एगो लोकप्रिय आ सशक्त विधाके रूप में पाठकन के बीच आपन जगह बना रहल बिया। स्वाभाविक बा कि एकरा एकइसवीं शताब्दी में आवेवाली खास क के भोजपुरी क्षेत्रन के विकास में आवेवाली हर तरह के रुकावटन के अपना कथ्य के रूप में लेके ना खाली ओहनी से आम आदमी के परिचित करावे के जिम्मेदारी निमाहे के पड़ी बलुक एगो सही मार्ग-दर्शक के भूमिका निमाहे के होखी। भोजपुरी क्षेत्र में अशिक्षा, रूढ़िवादिता आ अंधविश्वास मकड़ी के जाल नियर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फइलल बा। भोजपुरी लघुकथा आदमी के एह मनोभावन पर प्रहार करत एगो स्वस्थ आ विकासशील समाज के पुनर्गठन में योगदान दे सकत बिया ।

भोजपुरी लघुकथा के व्यापक आ लोकोन्मुख बनावे खातिर प्रयोग में आवेवाला दोसर-दोसर विजातीय शब्दन के प्रयोग में ले आके लघुकथा के अभिव्यक्ति-सामर्थ्य के आउर सक्षम बनावे के प्रयास करे के चाहीं ।

लघुकथाकार के शिल्प का देसाई ज्यादा सजग रहे के पड़ी। अखबारी समाचार आ चुटकुला जइसन कुछ लिखके अपना जिम्मेदारी के इतिश्री समझ लेला से लघुकथा निर्जीव आ हास्यास्पद बन जाले। ई पाठकन के अपना ओर खींचहूँ में सक्षम ना हो पावेले। लघुकथाकारन के शिल्प-साधना क के मारक क्षमता पैदा करेवाला लघुकथन के रचना करेके पड़ी। तबे ई आपन असर आम पाठकन पर डालेके उद्देश्य में सफल हो पाई ।

एह तरह भोजपुरी लघुकथा के एकइसवीं शताब्दी के चुनौतियन के सामना करे खातिर भाषा, भाव, शिल्प, कथ्य आदि सब उपादानन में निखार ले आवे के जरूरत पड़ी । सशक्त भाषा, शिल्पगत प्रौढ़ता आ नया कथ्यन से लैश होके समर्पित लघुकथाकारन के हाथे एकइसवीं शताब्दी के लघुकथा अपना जिम्मेदारी के बखूबी निर्वाह करी अइसन उमेद कइल जा सकेला ।

लागत बा कि लघुकथा एकइसवीं सदी में उपन्यास आ कहानी जइसन विधन के काफी पीछा छोड़त साहित्य-रचना के सर्वाधिक लोकप्रिय विधा बन जाई आ एकरा दायरा में जिनगी के हर दर्द, हर साँस हरेक रूप-रंग सोगहग ढंग से समेटाये लागी । एकइसवीं सदी में विज्ञान आ टेकनोलॉजी के आउर तेज विकास होई आ मनई के जिनगी ओह के हर स्तर पर प्रभावित होई । लघुकथा ना केवल भोजपुरी लेखन के केन्द्रीय विधा बनी बलुक, जिनगी के बेधक क्षणांशन के उरेहत एकर स्वरूप आउर मार्मिक बनी ।

-अध्यापक, उच्च विद्यालय, मढ़ौरा- 841418, जिला-सारण (बिहार)

---

1. साहित्यकार - 6 (लघुकथांक), पृ०-58
2. तिरमिरी-सम्पादक, सूर्यदेव पाठक 'पराग' पृष्ठ-96
3. कारखाना-9, सम्पादक रमेशनील कमल, पृष्ठ-15
4. भोजपुरी अकादमी निबंधमाला, दोसरका भाग, प्रधान सम्पादक-डॉ० चितरंजन प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ-77
5. भोजपुरी अकादमी निबंधमाला, दोसरका भाग, प्रधान सम्पादक-डॉ० चितरंजन प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ-87
6. उहे - पृष्ठ-87
7. टुकी-टुकी जिनगी-सम्पादक-प्रो० ब्रजकिशोर, भगवती प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ-4
8. विगुल (त्रैमासिक) सम्पादक-सूर्यदेव पाठक 'पराग', प्रकाशक-साहित्य कला मंच, भिट्ठी (सीवान)
9. तिरमिरी-सम्पादक-सूर्यदेव पाठक 'पराग', प्रकाशक-साहित्य कला मंच, भिट्ठी
10. एक मुट्ठी लाई- (लघु कथा संग्रह), सम्पादक- पाण्डेय कपिल, कृष्णानन्द कृष्ण, पृष्ठ-2
11. भोजपुरी अकादमी निबंधमाला-प्रधान सम्पादक-डॉ० चितरंजन प्रसाद सिन्हा, पृ०-94

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपन्यास

भोजपुरी उपन्यास आ एकइसवीं सदी

❑ रूपश्री

उपन्यास साहित्य के बहुत सशक्त विधा हवे जवना में जिनगी के अनेक रंग-रूप के कईएक चरित्रन का माध्यम से एगो मुकम्मल तस्बीर दिहल जाला। एह में विस्तार के गुंजाइश होला, कवनो घटना के तह तक जाये के आ ओकरा कारनन के समुझे-बूझे के पूरा अवसर भेंटेला, कवनो पात्र के व्यवहार के आ विचार के मनोवैज्ञानिक कसौटी पर कसे के भरपूर अवकाश होला। कथाकार अपना रूचि का मोताबिक कतहीं कथानक का कसाव पर जोर देला त कतहीं चरित्रन के विकास पर, त कतहीं विचारन के विश्लेषण पर। बहुत लेखक एह सभ के सामंजस्य बइठा के चलेलन। उपन्यास के काया छोट होखे या भारी-भरकम ऊ पाठक के मन के अन्त-अन्त ले जतने बन्हले रही, ओतने सफल आ सार्थक मानल जाई। आज के जिनगी बहुते जटिल हो गइल बा। एही से एह जिनगी के सहेजे-बटोरे आ उकेरे खातिर उपन्यासो के शिल्प जटिल हो चुकल बा।

प्रेमचन्द्र जी उपन्यास के मानव-चरित्र के चित्र मनले बाड़न आ एकर मूल तत्त्व का रूप में चरित्र के रहस्य के परत-दर-परत खोले के कला के गनले बाड़न। आजादी का पहिले हिन्दी के कथा-साहित्य में बुद्धिवादी दार्शनिकता, अहंमूलक मनोवैज्ञानिकता आ गैर-साहित्यिक राजनीतिक दबावन के शुष्कता रहे जवना से उबरे खातिर आजादी का बाद आंचलिकता के प्रवृत्ति के विकास भइल आ लोक जीवन, धरती से जुड़ल जिनगी आ लोकभाषा के ताजा-टटका गन्ध से हिन्दी कथासाहित्य के श्रृंगार भइल। चालीस-पचास साल लाग गइल हिन्दी उपन्यास का आपन एगो पहिचान बनावे में। भोजपुरी का जवरे अइसनका संकट ना रहे। ऊ अपना माटी अपना लोग आ अपना संस्कृति के अपना अँकवारी में बन्हलें जब कथा-साहित्य में उतरल त आपन एगो खास पहिचान बनावत, अपना खासियत के रेखांकित करत।

भोजपुरी में उपन्यास छपल शुरू भइल 1956 में श्री रामनाथ पाण्डेय के 'बिन्दिया' से यानी बीसंवी सदी के उत्तरार्द्ध में भोजपुरी उपन्यास के जनम भइल आ पछिला चालीस-पैंतालिस बरिस का भीतरे संख्या का दृष्टि से भले बहुत उपन्यास ना छपल होखे बाकिर कथानक आ शिल्प का दृष्टि से ऊ बहुते पोढ़ हो चुकल बा। भोजपुरी क्षेत्र के लोग के जिनगी में जवन सहजता बा, गरीबी आ अभाव बा, एह सब के चित्रण भोजपुरी उपन्यास में भइल बा। क्षेत्र के रीति-रिवाज, चाल-चलन, आ जीये खातिर कइल जा रहल संघर्ष आपन जगह पवले बा। 'बिन्दिया' (रामनाथ पाण्डेय) से 'अमंगलहारी' (डॉ० विवेकी राय) तक के यात्रा में भोजपुरी उपन्यास आदर्श आ यथार्थ दूनू के भरपूर सहारा लेले बा आ धरती आ जिनगी का साँच के आपन कथ्य बनवले बा।

डा० अरुण मोहन भारवि भोजपुरी उपन्यास के दस गो वर्ग में बँटले बाड़न (1)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सामाजिक, (2) मनोवैज्ञानिक, (3) ऐतिहासिक-पौराणिक, (4) आदर्शवादी, (5) यथार्थवादी, (6) आदर्शोन्मुख यथार्थवादी, (7) आंचलिक, (8) प्रगतिवादी-जनवादी, (9) संस्मरणात्मक आ (10) दार्शनिक उपन्यास । पौराणिक के अलगा कर दीं आ वैज्ञानिक वर्ग जोड़ दीं त ई बारह तरह के हो जाई । हर वर्ग में कईएक उपन्यास आ चुकल बा । एह उपन्यासन के एगो सूची नीचे दिहल जा रहल बा जवन बीसवीं सदी के देन बा आ एकनी पर एक नजर डालिए के एकइसवीं सदी में उपन्यास के दशा-दिशा के अन्दाज लगावल जा सकत बा -

1. बिन्दिया/रामनाथ पाण्डेय
2. थरूहट के बबुआ आ बहुरिया/राम प्रसाद राय
3. जीअन साह/राम नगीना सिंह 'विकल'
4. सेमर के फूल/डॉ० बच्चन पाठक
5. रहनिदार बेटी/जगदीश ओझा सुन्दर
6. एगो सुबह एगो साँझ/विजेन्द्र अनिल
7. डहकत पुरवैया/अरुण मोहन भारवि
8. गाँव के माटी/बालेश्वर राम,
9. भगजोगनी/अंगद मिश्र,
10. सुरमा सगुन विचारे ना/रमेशचन्द्र झा
11. फुलसुँघी/ पाण्डेय कपिल
12. भोर मुसुकाइल/विक्रमा प्रसाद
13. सुन्नर काका/प्राध्यापक अचल
14. घर टोला गाँव/पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह
15. फुलमतिया/योगेन्द्र प्रसाद सिंह
16. खैरात/चौधरी कन्हैया प्र० सिंह
17. जिनगी के राह/रामनाथ पाण्डेय
18. रावण उबाच/गणेशदत्त किरण
19. धूमिल चुनरी/गणेशदत्त किरण
20. सती के सराप/गणेशदत्त किरण
21. दरद के डहर/भगवती प्र० द्विवेदी
22. भगवान परशुराम/ भारवि
23. कवाछ/डॉ० नर्वदेश्वर राय
24. करेज के काँट/अरुण मोहन भारवि
25. राख भउर आग/अरुण मोहन भारवि
26. अछूत/सूर्यदेव पाठक 'पराग'
27. परिणाम/जगन्नाथ पाण्डेय 'विधुर'
28. मुण्डदान/कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'
29. जहाजी भाई/रास बिहारी पाण्डेय
30. कचोट/धर्मनाथ तिवारी
31. महेन्दर मिसिर/ रामनाथ पाण्डेय
32. अँजोर साँच के/राजगुप्त
33. इमिरीतिया काकी/रामनाथ पाण्डेय
34. कमली/नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक'
35. ऊसर के फूल/नरेन्द्र शास्त्री
36. आधे आध/रामनाथ पाण्डेय
37. पपीहरा/नगेन्द्र प्र० कानू
38. अर्जुन/चन्द्रधर पाण्डेय
39. अमंगल हारी/डॉ० विवेकी राय
40. कम्प्यूटर के जंजाल/सभापति कुश.

एकरा अलावा करीब आधा दर्जन उपन्यास पत्र-पत्रिकन में छपल बाड़ेसन जवना के पुस्तकाकार प्रकाशन अबहीं नइखे भइल । एह में दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती जी के 'जिनगी के टेढ़-मेढ़ राह' काफी महत्त्वपूर्ण बा । अनेक पाण्डुलिपि लिखि के पड़ल बा जइसे चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के रमतिया आदि ।

एह उपन्यासन में पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक सरोकार, राजनीतिक द्वन्द्व, मजूरन के संघर्ष, विकास के गाथा, गँवई प्रेम, मानवीय संवेदना आदि के विषयवस्तु बनावल बा । सामाजिक न्याय खातिर छटपटात दलित वर्ग के संघर्ष बा त जीविका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर दूर देश ले जाये के बेबसी के बरननो बा । नक्सली उग्रवाद आपन पहिचान बनवले बा त कतहीं पूरा अंचल साकार होके सोझा आ जात बा । हरेक उपन्यास पर एह लेख में विचार करे के अवसर नइखे बाकिर कथ्य आ शिल्प के मानक का रूप में **फुलसुँघी** (पाण्डेय कपिल), **भोर मुसुकाइल** (विक्रमा प्रसाद), **अमंगलकारी** (डॉ० विवेकी राय), **इमिरीतिया काकी** (रामनाथ पाण्डेय), **ऊसर के फूल** (नरेन्द्र शास्त्री) आ **घर टोला गाँव** (पाण्डेय जगन्नाथ प्र० सिंह) के नाँव लिहल जा सकत बा । बीसवी सदी के अन्त में जे भोजपुरी जन-जीवन के दशा-दिशा बा ओकर पूरा हुलिया सांगोपांग ढंग से अबहीं नइखे उरेहल जा सकल बाकिर घोर अभाव आ उपेक्षा के बादो जे कुछ बन पड़ल बा ऊ संतोष करे लायक बा ।

का आवेवाली एकइसवीं सदी में भोजपुरी उपन्यास के विकास तेजी से होई ? का समय का साथे भोजपुरी समाज में आ रहल बदलाव का तेज बहाव के उपन्यास अपना में समेट पइहें स ? उपन्यास आगहूँ एगो बरियार, मनोरंजक आ प्रभावकारी विधा रह पाई का ? अइसन-अइसन अनेक सवाल आ शंका मन में उठत बा जवना पर एकइसवीं सदी का सन्दर्भ में तनी बात-विचार कर लिहल नीक होई ।

साहित्य सामज के खाली दरपने ना होला बलुक ओकरा के एगो मनचाहा रूप देवे के साधनो होला । यथार्थ के हूबहू सामने राख दिहल ओकर मकसद त हइले ह बाकिर रंग कहवाँ भरला से समाज के तस्वीर शोभनउक लागी-एहू साहित्य पर जिम्मेवारी बा आ एके निबाहे के पड़ेला । साहित्य में सत्य, शिव आ सुन्दर तीनू के समावेश आ सामंजस्य होखे के चाहीं तबे ओकर असर समाज में सन्तुलन पैदा करे के काम कर सकेला । समाज के नीमन-बाउर सभ साहित्य के विषय होला । उपन्यास त जिनगी के असलियत के तह-पर-तह खोलत एह बात पर जोर देला कि कइसे जिनगी के सोगहग रूप में देखल-परखल आ अपनावल जा सकत बा । भोजपुरी उपन्यासन के कोशिश इहे बा ।

आजो भोजपुरी क्षेत्र में घोर दरिद्रता बा । लोग अभाव में जिनगी गुजार रहल बा क्षेत्र पूरा गँवई संस्कृति में रचल-बसल बा । इहवाँ के शहरवो में गाँव बा । पूरा इलाका में कवनो बड़ उद्योग नइखे । एह से औद्योगिक संस्कृति के दोष-गुण अबहीं इहवें पनपले नइखे । खेती-बारी भगवान भरोसे बा । मौसम साथ दिहलस त फसल भइल आ बाढ़-सूखा से बाँचल त दू जून के रोटी के जोगाड़ हो सकल । आबादी तेज रफ्तार से बढ़े में कवनो कोताही नइखे करत । विकास के किरिन ठावाँ-ठाईं सकुचात-लजात पहुँचलि बा । ना सड़क, ना अस्पताल आ ना शिक्षा के पुरहर इन्तजाम । जात-पाँत के जंजाल में फँसल आम जन छटपटात बा । हाथ में काम ना भइला से रोजी-रोटी खातिर लोग का देश का कोना-कोना ले जाये के पड़त ना आ ओजवाँ अपमानो सह के काम करे के पड़त बा, जवना से आपन पेट त चलबे करे गाँव-घर पर रहेवाला परिवारो का दू पइसा के अलम्ब भेंटा सके । अइसनका दीन-हीन हालत पूरा भोजपुरी क्षेत्र के बाटे चाहे ऊ बिहार में होखे, पूरबी उत्तर प्रदेश में होखे भा मध्य प्रदेश में होखे । भ्रष्ट राजनीति में अझुराइल नेता लोग का अपने कोठिला भरे से सवाँस नइखे । ऊ लोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनसमस्या का प्रति आँखि मून के रहेला । एह हालत में जनता जागो त कइसे, ऊहो जाति का जंगल में भटक के बउराह बनल जाति बा । साहित्य का जन जागरण के ई काम अपना हाथ में लेवे के पड़ी, ना त एकइसवीं सदी में भी एह इलाका के हालत खस्ता बनल रही ।

उपन्यास लिखइहें स बाकिर ओमें कल्पना के उड़ान का बदले जिनगी के सच्चाई से रूबरू होखे के पड़ी । मोट-मोट किताबन के पढ़वैया अइसहीं कम बाड़न । भोजपुरी में प्रकाशन आ बिक्री के सुविधा ना भइला से अबहीं ले मोट मोट आ दमगर उपन्यास नइखे आइल । आगहूँ कम-से-कम अगिली सदी के पहिलका चरण में एकर गुंजाइश कम बा । तबहूँ कथा-साहित्य लिखाई, छपाई आ लोग के ध्यानों खींची, एह में सन्देह नइखे ।

अगिली सदी में भोजपुरी समाज में तेज आन्ही खानी बदलाव आई आ ओह में विरासत आ परम्परा से चलल आवत बहुत रीति-रिवाज आ आपुसी पारिवारिक सरोकार के दीवार ढह जाई । परम्परा के तूड़ल सहज होला बाकिर सही दिशा में रचनात्मक डेग बढ़ावल ओतने कठिन होला । बीसवीं सदी का कोख से उपजल हिंसा, अपराधवृत्ति, छल, भ्रष्टाचार आ नफरत के नींव पर कवनो स्वस्थ आ मजबूत भवन के नींबू नइखे डालल जा सकत । भोजपुरी क्षेत्र में विकृति आ नकारात्मक सोच के जवन स्थिति बन रहल बा, ऊ खतरनाक बा । ऊ करोड़न भोजपुरिहा लोगन के जनमानस पर आपन घातक असर डाले जा रहल बा ।

बुद्धिजीवी वर्ग के लोगन का तनी थथम के अपना हर कदम पर विचार करे के होई । अमीरी-गरीबी के जे फरक बढ़ रहल बा आ अपने देश के भीतर एक क्षेत्र के विकास के तेज गति आ भोजपुरी क्षेत्र के मन्थर विकास कवनो भयानक आन्ही के सिरजन करी आ ओह अन्धड़ के सह के बाँचे खातिर साहित्य का आगा बढ़े के पड़ी । कथा-साहित्य का एह में आपन भूमिका निभावे खातिर तइयार होखे के पड़ी । भोजपुरी उपन्यास एह सिरजन का क्षण के गवाहे ना बनी बलुक एकर एगो कारगर हथियारो बनी । हो सकेला एकइसवीं सदी का शुरू में भोजपुरी उपन्यास अपना भूमिका के तलाश कर लेवे आ तब जम के मंजिल किओर डेगरगर बढ़ चले । हमनी का भोजपुरी उपन्यास के ओह क्रान्तिकारी डेग आ स्वरूप के प्रति आश्वस्त रहे के चाहीं, जवन एकइसवीं सदी में भोजपुरी साहित्य आ समाज के सँवारे-बनावे खातिर भविष्य का गर्भ में अकुलाहट भरल आहट के आभास दे रहल बा ।

–रूपश्री प्रकाशन, महेन्द्रू, पटना–6

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध

एकइसवी सदी के विधा : निबन्ध

❑ जीतेन्द्र वर्मा

आधुनिक युग में स्थिति कुछ अइसन बनल बा कि निबन्ध के महत्त्व दिनों-दिन बढ़ते जाता। ई हर भाषा के अनिवार्य विधा बन चुकल बाटे। कवनो भाषा साहित्य के समृद्धि के अंदाज ओह भाषा के निबंधन के देख के लागावल जा सकेला। आधुनिक युग में ई जीवन के सबसे नजदीक बा।

बाकिर हमरा बुझाता कि भोजपुरी एकर अपवाद बिया। काहे कि भोजपुरी के तथाकथित महंथ लोग का अनुसार भोजपुरी त हिंदी, अंग्रेजी जइसन भषन के बहुत पहिले पीछे छोड़ चुकल बिया ! शायदे कवनो अइसन चीज होखे जवन भोजपुरी में ना होखे ! आ खाली हइये नइखे, ऊ सर्वोतम बा ! का कविता, का कहानी, का. ....बाकिर कुछ लोग बा जे एह सब के ना संकारे। जइसे डा० विवेक राय। उहाँ के कहनाम बा कि "भोजपुरी मुद्रा में गंभीर विषय-वस्तु प्रधान निबंध उभरते नइखे। .... भोजपुरी अंचल का समूहमन में भावात्मकता क खानि बा। इहाँ से बुद्धिवादी आयाम के उपटल अबहीं कठिन जनात बा।"

डा० राय ई बात 'भोजपुरी निबंध निकुंज' के संपादकीय में कहले बानी। भोजपुरी निबंध के स्थिति के अंदाज उहाँ के आगे के बात से लगावल जा सकेला-"एह निबंध संग्रह के संपादन करे में बहुत कठिनाई भइल ह। सबसे बड़ कठिनाई त ई रहे कि बढ़िया निबंध ना मिल पाव स। संग्रह में सामिल करे जोग स्थायी मूल्य क रचना क ई अभाव बहुत खटकल। तब जनाइल कि भोजपुरी में जमि के निबंध नइखे लिखाइल...................वर्तमान में त इ दूइ जाना एकर संपादक (सिपाही सिंह श्रीमंत आ हम) बहुत जोर लगावत बानी जा त तैतालिस गो निबंध केहू केहू तरे भेंटात बाड़न स।"

एह पंक्तियन में बतावल स्थिति आज बाइस बरिस बीत गइला का बादो बहुत नइखे बदलल। आज दुनिया भर में उदारीकरण, भूमंडलीकरण, सूचना-क्रांति, मानवाधिकार, नया-नया वैज्ञानिक आविष्कार के धूम मचल बा। सब जगे एह प[illegible] विचार हो रहल बा। ई ठीक बा कि भोजपुरिया लोगो एह सबसे प्रभावित बा। बाकि[illegible] भोजपुरी में भूलाइयो के एह सब पर चरचा ना होला। ई सब गैर-साहित्यिक विषय नूं हवे ! अइसहीं समसमायिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक मुद्दन पर जल्दी कुछ ना लिखाई ! आखिर खांटी साहित्य नूं रचे के बा ! अइसन नइखे कि एह विषयन पर भोजपुरिया लिखवइया नइखन। ऊ लोग हिंदी-अंग्रेजी में एह विषयन पर धड़ल्ले से कलम चला रहल बा बाकिर भोजपुरी में जब लिखी तब सइयां-पियवा के गीते लिखी।

भोजपरी पत्र-पत्रिका में संपादक जी लोग अइसन कुल गैरसाहित्यिक विषयन पर रचना छाप के अपना पत्रिका के शुद्ध साहित्यिक स्वरूप बिगाड़े खातिर थोड़ ही संपादक बनल बा! भलही कुछ लोग कहत रहो कि ई शुद्ध साहित्य के नाम पर जीवन से जुड़ल मुद्दन पर विचार-बहस करे से बच के यथास्थिति बरकरार रखे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साजिश हवे, चाहे राजनीति से अलग रहे के वकालत राजनीति से प्रेरित होला ।

हिंदी-अंग्रेजी भा आउर भषन के संपादक लोग भलही एह सब का फेर में पड़ गइल होखे लोग बाकिर संतोष (!) के बात बा कि भोजपुरी पत्रिकन के संपादक लोग अइसन ना करे के किरिया खइले बा । रउवा कहतानी कि 'कानी गइया के अलगे बथान' त कहत रहीं ओकर कवनो असर संपादक जी लोग पर ना पड़ी । ओह लोग के दृढ़ विश्वास बा कि एक दिन अइसन आई जब हमनी के विचार पूरा दुनिया मानी । सभे कहीं कि रउवा लोगिन अन्हार में दिया के तरह जरनी । सभे बदलता त का हमनियो के बदल जाईं स ! आरे हमनी के कबो शुद्ध साहित्य से नानूं हटब जा !

भोजपुरी निबंध के रउवा कम समृद्ध मत बूझी । एकर शुरूआते अतना जोरदार भइल कि सभे एकर लोहा मान गइल । मौसम परिवर्तन, लोकोक्ति, मुहावरा, आदि पर संस्कृत के श्लोक पर श्लोक देके कथित विद्वता बोकरल प्रारम्भिक भोजपुरी निबधंन के असली चिन्हासी हवे । एह दौर में निबंधकार लोग समय के धार में अप्रासंगिक हो चुकल चीज के सही साबित करे में आपन भड़ास खूब निकालल। आखिर शुद्ध साहित्य नूं रचे के रहे !

एगो निबंधकार महाराज जहाँ-जहाँ जाईं ओजवा चिल्ला चिल्ला के कहीं- "हमरा से बड़का के बा । हमार गाँव-गवई पर लिखल निबंध अंग्रेजी में बतियावे वाला लोग खूब चाव से पढ़ेला । हिंदी अंग्रेजी में लिखे वाला केतना जना मर-बिला गइले केहू जनबो ना कइल । हमार निबंध त लोग खोज खोज के पढ़ेला ।' बातो साँच रहे उँहा के लिखल निबन्ध लोग वइसही पढ़े जइसे जोकर के तमाशा देखत होखे । भोजपुरी के समीक्षक लोग का अनुसार ई भोजपुरी के सबसे बड़हन उपलब्धि हवे। अगर रउवा मन में ई बात आवत होखे कि ऊ लोग गंवारुपन देख के हँसत होई त रउवा आपन रास्ता नापीं, एजवाँ राउर कवनो जरुरत नइखे !

एगो हमार यार भेटइले । ऊ शास्त्री जी (महेन्द्र शास्त्री) के बहुते भला बुरा कहत रहस । अगर जो उहाँ के भेंटा जइतीं त बे मरले ना छोड़ते । ओहू बेचारु के शिकायत कवनो नाजायज नानूं रहे । ऊ कहत रहले-

"बताईं ना शास्त्री जी अपने भोजपुरी के सब पहिलका काम कर गइनी। पहिलकी पत्रिका निकलनी, पहिला निबंध लिख मरनी । हम सोचत रहनी हईं कि लघुकथा लिखीं। नया विधा बा । त मालूम भइल कि उहो उहें का लिख गइल बानी । अब हम कुछ आउर सोचब त मालूम होई कि उहो उहें का भा उहाँ जइसन दोसर केहू लिख गइल बा आ रउवे बताईं कि नया लोग का लिखी ?"

"काहे ?एकरा बादो बहुत चीज लिखा सकत बा । कवनो जरुरी नइखे कि पहिलकी रचना लिखब, तबहीं भोजपुरी में लिखब । ई त खुशी के बात बा कि शास्त्री जी आ उहाँ जइसन कुछ आउर लोग अपना त्याग, तपस्या से काम के शुरुआत कर गइल बा ।"

-हम समझावत कहलीं । हमार बात सुनते ऊ बमक के कहले -

"अरे तू उल्लू के उल्लूए रह जइब । त्याग-तपस्या । हूँऽऽ ! आरे ऊ लोग नाम कमाए खातिरऊई सब कइले बा ।"

तनी रोक के हमरा के प्यार से रहस्य बतवले -

" कवनो विधा में पहिलकी रचना लिखला पर आदमी अमर हो जाला रचना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतनो दब होखे त का ! केहू ओह विधा पर काम करी त ओकरा लिखे के पड़ी - भोजपुरी के पहिलका ......''

× × × ×

आचार्य महेन्द्र शास्त्री भोजपुरी में कई गो चीज के शुरुआत कइनी । 1948 में उहाँ के भोजपुरी के पहिलकी पत्रिका ' भोजपुरी ' निकलनी । एही में उहाँ के 'पानी' शीर्षक से निबंध लिखनी । ई भोजपुरी के पहिलका निबंध मानल जाला ।

भोजपुरी में विषय प्रधान निंबध कमे लिखाइल बावे । एकर मुख्य वजह बावे भोजपुरी पत्र-पत्रिकन के सम- सामयिक घटनन का ओर से आँख मुदले रहे के प्रवृति ।

शुरुआती दौर में स्तरीय निबंध लिखे वालन में प्रमुख रचनाकार रहस – राहुल सांकृत्यायन, मुक्तेश्वर तिवारी बेसुध, कुलदीप नारायण 'झड़प', नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, रघुवंश नारायण सिंह, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, गणेश चौबे, प्रो० चन्द्रभूषण सिन्हा, डा० जितराम पाठक, कमला प्रसाद मिश्र विप्र, ईश्वरचन्द्र सिन्हा, डॉ. विवेकी राय, डा० रसिक बिहारी ओझा निर्भीक, डा० सत्यदेव ओझा, राधामोहन राधेश, महेश्वराचार्य, अविनाशचंद विद्यार्थी, रासबिहारी पाण्डेय, डा० स्वर्णकिरण,डा० चंपादेवी ,डा० विश्वनाथ पाण्डेय, डा० मुरलीधर श्रीवास्तव, डॉ० बसन्त कुमार आदि ।

राहुल सांकृत्यायन के निबंध के ऐतिहासिक महत्त्व बा। उहाँ के लिखल भोजपुरी निबंध 'बानभट्ट आ हरख राजा के भेट' भोजपुरी पत्रिका में छपल रहे । ई वर्णनात्मक निबंध हवे । मुक्तेश्वर तिवारी बेसुध के निबंधकारन में प्रमुख स्थान बावे। इहाँ के निबंधन में सम-सामयिक समस्यन के लेके युग जीवन के विसंगतियन के उपहास उड़ावल गइल बा । जवना में हल्का-फुल्का व्यंग्य बावे । चतुरी चाचा के नाम से प्रसिद्ध बेसुध के निबंध प्रारम्भिक काल में बेजोड़ बावे । गणेश चौबे भोजपुरी के भाषागत समस्या आ लोक साहित्य पर विशेष रूप से लिखले बानी । इहाँ के आपन बात एकदम सरल ढ़ंग से कहले बानी । कहीं बेमतलब के आपन पंडिताई नइखी बघरले । 'भोजपुरी कुछ समस्या आ समाधान' इहाँ के भाषागत समस्यन पर लिखल पाँच गो निबंधन के संग्रह हवे । डॉ० विवेकी राय के निबंध संग्रह 'के कहल चुनरी रंगा ल' भोजपुरी के पहिलका ललित निबंध संग्रह मानल जाला । इहाँ के भोजपुरी के मुहावरा, लोकोक्ति के सटीक प्रयोग से निबंधन के भावपूर्ण बनावे में सिद्धहस्त बानी । डॉ० राय के निबंधन के शैली आ भाषा काव्यमय बा । 'गंगा-यमुना-सरस्वती' में इहाँ के कुछ निबंध संग्रहित बावे । जबकि 'राम झरोखा बइठि के' इहाँ के फीचर संग्रह हवे ।

कुलदीप नारायण झड़प ललित, हास्य-व्यंग्यात्मक, भावात्मक आ समीक्षात्मक निबंध लिखले बानी । इहाँ के सफलता मुख्यत: अनुसंधानात्मक निबंधन में मिलल बा । इतिहास, संस्कृति, साहित्य आ भाषा पर इहाँ के गवेषणापूर्ण आ गंभीर निबंध लिखले बानी । शोध आ अनुसंधान का क्रम में इहाँ के खंडन-मंडन पूर्ण शैली प्रभावपूर्ण बावे । 'बात क बात' इहाँ के बहुचर्चित निबन्ध संग्रह हवे । 'कलमिया नाहीं बस में' सत्यावादी छपरहिया के व्यक्तिगत आ ललित निबंध के संग्रह हवे ।

अइसन बहुते निबंधकार भइले जे भोजपुरी निबंध के नया दिशा दिहल । रामेश्वरनाथ तिवारी के निबंध व्यक्तिनिष्ठ होले सन । जवना में एक बेर फंस गइला पर अंते में छुट्टी मिली । इहाँ के निबंधन में ललित विनोदात्मक प्रवृत्ति अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरमावस्था में मिलो । गंभीर निबंध के लेखन में विंध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव के सफलता मिलल बा । इहाँ के छव गो निबंधन के संग्रह 'मन के मौज' हवे । हरिशंकर वर्मा के निबंधन में चिन्तन के प्रधानता बावे । इहाँ के तीन गो निबंध संग्रह बावे-'जीवन गीता', 'आखरी गीत' आ 'अहं बहुरुपिया । एह में आध्यात्मिक चिन्तन भरल बा । अक्षयवर दीक्षित मुख्य रूप से वर्णनात्मक निबंध लिखले बानी । 'भोजपुरी निबंध' आ 'भोजपुरी के सपूत' इहाँ के निबंध संग्रह बावे ।

पाण्डेय कपिल के निबंधन में आभिजात्य आ लोक जीवन के सहज प्रवाह बावे । भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति, संगठन, आदि पर इहां के निबंध विचारोत्तेजक होला । इहां के भाषा क्षेत्रीय प्रयोग से मुक्त बावे । प्रो० ब्रजकिशोर मुख्यत: संत साहित्य पर शोधपूर्ण निबंध लिखले बानी । एकरा अलावे इहाँ के कुछ समीक्षात्मक, वैचारिक आ वैज्ञानिक निबन्ध स्तरीय बन पड़ल बा ।

दुर्गाशंकर सिंह नाथ, प्रफुल्लचंद ओझा मुक्त, डॉ. अनिल कुमार आंजनेय, रामाधार प्रसाद अंशुमाली, डॉ० गुलाबचन्द प्रसाद अभय आ डॉ० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी जइसन बहुते लेखक लोग भोजपुरी निबंध के भंडार भरल ।

नागेन्द्र प्रसाद सिंह के निबंध सूत्रबद्ध आ व्यवस्थित केन्द्रोन्मुखी होला । ओह में विचार, तर्क आ भाव में तनिको भटकाव नइखे बाकिर कहीं-कहीं भाषाई दुरूहता का वजह से आम पाठक खातिर बोधगम्य ना होला । इहाँ के दूगो निबंध संग्रह प्रकाशित बा-'नवरंग' आ 'सोच विचार' । डा० तैयब हुसैन वैचारिक निबंध लिखले बानी । साहित्य के गंभीर विषय पर इहाँ के विचार स्पष्टता, तर्कपूर्ण चिन्तन आ विचारात्मक आग्रह का संगे कलम चलवले बानी । गजलकार का रूप में चर्चित जगन्नाथ गजल के समीक्षा पर कलम चलवले बानी । 'गजल के शिल्प विधान' आ 'भोजपुरी गजल के इतिहास' इहाँ के पुस्तक बावे । सूर्यदेव पाठक पराग त मूलत: कवि हई बाकिर इहाँ के गद्यो पर कलम चलवले बानी । इहाँ के निबंधन में आदि, मध्य आ अंत के बहुत सटीक संगति रहेला । इहाँ के विषयनिष्ठ आ व्यक्तिनिष्ठ दूनो तरह के निबंध लिखले बानी । कृष्णानंद कृष्ण साहित्यिक समीक्षा पर कलम चलवले बानी । इहाँ के भाषा में सहज सम्प्रेषणीयता बा ।

डॉ० अशोक द्विवेदी के निबंध में आत्माभिव्यक्ति के दर्शना होला । इहाँ के विचारात्मक निबंध में सफलता मिलल बा । डॉ० द्विवेदी के निबंधन में विचार आ भाव के प्रवाह के निरंतरता शुरू से अंत ले बनल रहेला । इहाँ के निबंधन में पुनरूत्थान के स्वर बावे । 'राम जी के सुगना' इहाँ के निबंध संग्रह हवे ।

भगवती प्रसाद द्विवेदी के निबंध विश्लेषणात्मक होला । इहाँ के विषयन के फलक बहुते बड़ बा । कमे अइसन विषय होई जवना पर इहाँ के ना लिखले होईं । बरमेश्वर सिंह के निबंधन में भाषा के लाक्षणिक प्रयोग बड़ा अनूठा बावे, जवन तीखा व्यंग्य का संगे-संगे स्वतंत्र चिन्तनो प्रस्तुत करेला । पाण्डेय रामेश्वरी प्रसाद गंभीर-से-गंभीर विषय के हास्य आ व्यंग्यपूर्ण शैली में परोसिले । इहाँ का निबंधन से गुदगुदी त खूब परेला बाकिर गंभीर विषय भइलो पर गंभीरता के अभाव रहेला ।

आज विश्व भर में नारी मुक्ति के आन्दोलन चल रहल बा । भोजपुरिया समाज एकरा से अछूता नइखे । भोजपुरी में अइसन विषय पर कमे लेखन भइल बा । एह दिशा में डा० आशारानी लाल प्रभावशाली पहल कइले बानी । डा० लाल के निबंध संग्रह 'ए बचवा! फूलऽफरऽ' में नारी के केन्द्र विन्दु बना के कई गो निबंध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखल गइल बा, जवना में 'इया', 'अम्मा', 'मेहरारू', 'सवत' मर्मस्पर्शी बन पड़ल बा । लेखिका का लगे बात कहे के आपन ढ़ंग बा, जवन नारी मुक्ति आन्दोलन में कुछ जगहा होखे वाला छिछला आ सतही नाराबाजी से अलग बा । नारी के संगे होखेवाला भेदभाव के विभिन्न घटनन का माध्यम से धैर्य का संगे राखल गइल बा, जवन थोड़हूं संवेदनशील पाठक के गहिरे बेधे के सामर्थ्य लेले बा । ई सब निबंध कवनो भाषा के श्रेष्ठ निबंध से टक्कर ले सकता ।

करूणा निधान केशव राजनैतिक, सांस्कृतिक घटनन पर कलम चलवले बानी । इहाँ के निबंध संग्रह 'नइया बीच भंवर में' भोजपुरी में अपना तरह के एकलौता पुस्तक बावे। एकर स्वर पुनरूत्थान के बावे । डा० प्रभुनाथ सिंह अपना निबंधन में समस्या के गहराई में जाके ओकरा अंतर्विरोध के विनोदपूर्ण ढ़ंग से रेखांकित कइले बानी । 'हमार गाँव हमार घर' इहाँ के निबंध संग्रहित बावे ।

राजेश्वरी शांडिल्य भाषा, धर्म, संस्कृति, साहित्य आदि विषयन पर कलम चलवले बानी । इहाँ के विवेचन में विस्तार त बावे बाकिर गहराई नइखे । 'सदानीरा' इहाँ के निबंध संग्रह हवे । शैलजा कुमारी श्रीवास्तव के, 'चिन्तन कुसुम' विचारात्मक आ विवरणात्मक निबन्धन के नीमन संग्रह बाके ।

समकालीन विषयन पर भोजपुरी में बहुते कम लिखाइल बा । कारगिल प्रसंग एगो अइसन हादसा रहल जे सऊँसे देश के झकझोर दिहलस । पाँच गो महिला निबन्धकार लोगिन का निबन्धन के एगो संग्रह 'कारगिल आ ओकर सबक' 1999 का सितम्बर में भोजपुरी साहित्य संस्थान से प्रकाशित भइल बा । एकर संपादन रूपश्री जी कइले बानीं । रूचिका रंजन, दीप्ति, सुप्रिया तृप्ति, रूपश्री आ उमा वर्मा - पाँचो लेखिका लोगिन के निबन्ध उत्तम कोटि के बा ।

पत्र-पत्रिका के योगदान

कवनो भाषा के निबंध के उद्‌भव आ विकास में पत्र-पत्रिकन के महत्त्वपूर्ण भूमिका होला । रघुवंश नारायण सिंह के संपादन में 'भोजपुरी' पत्रिका 1952 से 1974 ले आ पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय का संपादन में 'अंजोर' 1960 से 1979 ले निकलल । एह पत्रिकन के प्रकाशन से निबंध लेखन के प्रोत्साहन मिलल ।

'उरेह' (पाण्डेय कपिल) में छपे वाला निबंध आकार में छोटे भइला का बावजूद विचारोत्तेजक बावे । भोजपुरी निबंधन के गति देवे में 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के शानदार भूमिका रहल बा। 'भोजपुरी वार्त्ता' एगो अइसन पत्रिका बिया जवन साहित्यिक पत्रिका कहाये के चक्कर में सम-सामयिक घटनन से मुँह ना मोड़लस । विनोद कुमार देव का संपादन में एह में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, कृषि आदि विषयन पर जम के लिखाई भइल । 'पाती' (डॉ० अशोक द्विवेदी) समकालीन विषय पर प्रकाशित होत रहेला । 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' (डॉ० अरुणेश नीरना) के प्रकाशन से निबंध लेखन के गति में तेजी आइल बा । एह पत्रिका का माध्यम से आधुनिक चेतना से संपृक्त निबंध सामने आ रहल बा । दैनिक 'आज'(पटना) में भोजपुरी निबंध साप्ताहिक रूप से प्रकाशित हो रहल बा । एह में समकालीन विषयन पर स्तरीय निबंध प्रकाश में आ रहल बा ।

युवा लेखन

नयका पीढ़ी के रचनाकार अपार संभावना ले के सामने आ रहल बाड़े । भाव, भाषा, भंगिमा-सब में एह लोग के निबंध कवनो भाषा के मुकाबला में खड़ा हो सकता । बिहार के नया निबंधकारन में प्रमुख बाड़े- आनन्द संधिदूत, प्रकाश उदय,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलभद्र, सुनील कुमार पाठक, भगवान सिंह भास्कर, चन्द्रदेव यादव, राकेश प्रवीर, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, रामनिहाल गुंजन, दीप्ति, अनीश श्रीवास्तव, विष्णुदेव तिवारी, जयकांत सिंह जय, अनिरूद्ध त्रिपाठी अशेष, लक्ष्मीकांत मुकुल, सुप्रिया तृप्ति, रुचिका रंजन आदि ।

आनन्द संधिदूत के निबंधन में युग जीवन में आ रहल जटिलता आ बौद्धिकता के समावेश बा । गाँव-गँवई के प्रतीक, बिम्ब का माध्यम से भी इहाँ के आपन बात सफलतापूर्वक कहले बानी ।

प्रकाश उदय के निबंध यथार्थता आ व्यंजकता से सराबोर बा । जीवन के अर्न्तविरोध पर अइसन सूक्ष्म बाकिर अचूक व्यंग्य इहाँ के निबंधन में भइल बा कि व्यंग्य के पात्र ना चहलो पर मुस्कुराये खातिर विवश होला । बलभद्र हास-परिहास के शैली में युग के विसंगति, विद्रूपता पर व्यंग कइले बानी । लोक जीवन से जुड़ल घटनन, शब्दावली के माध्यम से बौद्धिक विषयन के राखल इहाँ के निबंधन के मुख्य विशेषता हवे । इहाँ के वाक्य विन्यास में लय रहेला । सुनील कुमार पाठक साहित्य के प्रवृति शैली आ काव्यगत विशेषता पर कलम चलवले बानी । इहाँ के निबंध विचारात्मक होले स ।

एकइसवीं शताब्दी में भोजपुरी निबंध

धीरे-धीरे भोजपुरी में सम-सामयिकता के दबाव बढ़ रहल बा । इक्कीसवीं शताब्दी निबंध के होई । इहे लेखन के मुख्य विधा बनी । निबंध के विषयन में भारी परिवर्तन होई । नयका शताब्दी में भोजपुरिया समाज में विज्ञान के प्रभाव आउर बढ़ी। यद्यपि एकरा के रोके खातिर पोगापंथी लोग उठा ना धरी । बाकिर ऊ लोग अन्ततः पराजित होई । विज्ञान के नया-नया आविष्कार से जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन होई । एही का अनुसार विषय के निर्धारण होई । भोजपुरी निबंध कथित शुद्ध साहित्य के दीवार फान जाई । जीवन के आवश्यकता के अनुसार छोट-छोट लउके वाला विषयन पर निबंध लिखाई । जइसे अचार बनावे के विधि, रोजगार प्राप्त करे के तरीका, सौन्दर्य कइसे बढ़ी एह विषयन पर निबंध तेजी से लिखाई । अपेक्षाकृत उपदेश, प्रवचन जीवन के भौतिक जरूरत निबंध के मुख्य विषय बनी ।

आवे वाला शताब्दी में निबंध के शिल्प आ शैली में आमूल-चूल बदलाव होई । सरल ढंग से बात कहे के प्रवृत्ति बढ़ी । जीवन में व्यस्तता आ आत्मकेन्द्रित होखे के प्रवृत्ति आउर बढ़ते जाई । एकर भारी असर निबंध पर पड़ी । निबंध में आवश्यक बात ही रह पाई । बात सीधे-सीधे मूल विन्दु पर होई ।

नयका शताब्दी में इलेक्ट्रोनिक मीडिया के प्रभाव तेजी से बढ़ी । प्रिन्ट मीडिया खत्म ना होई बाकिर एकरा उपयोग के अवसर कम होई । दूनो एक सीमा ले एक दोसरा के पूरक भी बनी । इलेक्ट्रानिक मीडिया आ प्रिन्ट मीडिया साधन भर हवे । असली महत्व साध्य के बावे । निबंध इलेक्ट्रानिक मीडिया का माध्यम से भी सामने आई । एकरा खातिर निबंध के शिल्प में आवश्यक परिवर्तन करे के होई ।

इक्कीसवी शताब्दी में भोजपुरी निबंध के स्थिति बतावल कवनो भविष्यवाणी ना हवे । ई एगो अनुमान हवे जवन अबले भइल परिवर्तन पर आधारित बावे ।

-वर्मा ट्रांन्सपोर्ट, राजेन्द्र पथ, सीवान-841226

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविता

एकइसवीं सदी में भोजपुरी कविता

□ दीप्ति

आजकल बार-बार एह बात के दोहरावल जा रहल बा कि विज्ञान आ कम्प्यूटर का एह जबाना में जब आदमी खुदे मशीन बन गइल बा त भला साहित्य के उपयोगिता कहाँ बँच जाता ! दिमाग हृदय पर हावी बा । हर काम में बुद्धि आ तर्क के कसौटी बन चुकल बा, जहवाँ लाभ-हानि का रूप में विचार कइल जात बा । बीसवी सदी के अन्त मानवीय मूल्यन के अन्त आ मानवीय संवेदना के खातमा का जवरे हो रहल बा। साहित्य के मूल तत्त्व प्रेम, करुणा, सद्‌भाव जइसन शब्द आपन चमक खो चुकल बा आ आदमी हर तरह से राजनीति आ अर्थतंत्र के गुलाम बन चुकल बा । आज आदमी-आदमी का बीच के रिश्ता कवनो राग, लगाव आ स्नेह के भावना से पोढ़ नइखे होत बलुक लाभ-हानि के शुद्ध आर्थिक ढाँचा में ढर के तय होत बा । अइसनका माहौल में जब 'हृदय' के कवनो महत्त्व नइखे रह गइल साहित्य अपना पारम्परिक अर्थ में प्रासंगिक कइसे रह सकत बा ! ओहू में कविता त सुभावे से कोमल होले आ ओकरा पले-बढ़े खातिर बहुत नाजुक वातावरण जरूरी होला । एही से लोग का मन में ई शंका जड़ जमा चुकलि बा कि कविता के अब कवनो भविष्य नइखे आ एक तरह से कविता मर-बिला जाये खातिर अभिशापित हो चुकल बिआ ।

जब विश्व-साहित्य का सन्दर्भ में कविता का एह भविष्य के अन्हरिया के लोग देख रहल बा त भला हाले में बोली से भाषा बनल भोजपुरी में कविता के भविष्य अँजोर से भरल कइसे हो सकत बा ! बीसवीं सदी जात-जात मानव-मन के जवन पीड़ा, हिंसा, अनाचार, कुंठा आ अपराधबोध के दान दे चुकलि बा, ओकरा पृष्ठभूमि में निराश होके लोग अइसन सोचत बा ।

मनई के जे मन बा, उहे आशा के किरिन बा । मन ऊर्जा के रूप हवे आ जबले ई बा एकर मायाजाल भी बा आ एकर एहसासो बा । मन का रहते भाव खतम नइखे हो सकत । आ भावना का रहते साहित्य आ कला कबहूँ नइखे मर सकत कविता के फूल मन के भाव-भूमि में खिलेला आ हृदय के रस ओकरा के सुन्नर आ रसगर बनावेला। मन के गंगोत्री से कविता के गंगा निकलेगी आ जिनगी के उबड़-खाबड़ भूमि पर धारा बनिके मनई के पवित्तर करेली, रस-सिक्त बनावेली ।

बीसवीं सदी जल्दिए खतम होके अतीत बन जाई । एकइसवीं सदी अब त दरवाजा पर दस्तक देके प्रवेश करे के इजाजत चाहति बा । ओकरा के मना कइल हमनी का बस में नइखे । समय के प्रवाह केहू खातिर रूके ना; ना केहू के बाट जोहेला । हमनी चाहीं तब, आ ना चाहीं तबो एकइसवीं सदी अपना ठीक समय पर एको पल के विलम्ब बिना कइले आ धमकी । बीसवीं सदी में हमनी का जे कुछ हासिल भइल बा, ओकरे सँगे हमनी एकइसवीं सदी में चल जाएब आ एगो आउर यात्रा शुरू हो जाई।

बीसवीं सदी में हमनी का आजादी मिलल । आज भारत आजाद बा, संसार के सबसे बड़ लोकतंत्र बा जहवाँ वयस्क मताधिकार से जनता आपन सरकार चुनेले । हमनी का बोले के आज़ादी बा, लिखे के आजादी बा, काम करे के आजादी बा । एह आजादी के उपयोग करके लोग खूब बोल रहल बा, चीख-चिल्ला रहल बा, शोर मचा रहल बा, लूट-पाट कर रहल बा । हिंसा, अपराध, भ्रष्टाचार, बलात्कार, घोटाला सभ के उम्मीद से बहुत ज्यादा बढ़न्ती हो चुकल बा । ना रहे के घर, ना खाये के अन्न, ना पीये के पानी, ना पेन्हे के कपड़ा आ ना हाथ का काम । एही सब सौगात के सँहेजबटोर के भारत का, आ ओकरा सँगे भोजपुरी बोले वाला विशाल क्षेत्र का एकइसवीं सदी में प्रवेश करे के बा । एह सभ के बढ़न्ती जतना तेजी से भइल बा, ओतना तेजी से साहित्य एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबके बिम्ब अपना भीतर नइखे उतार सकल। कवि लोग के इलजाम बा कि जब दरपने दरक गइल बा त समाज अपना छवि के कहाँ निहारो; हिन्दी भा भोजपुरी साहित्य जमाना का सँगे दउड़े के कोशिश कर रहल बा, हाँफियो रहल बा बाकिर भागम-भाग में पिछड़ रहल बा। एही से आलोचक लोग साहित्य के जिन्दादिली पर शक कर रहल बा। कविता बेचारी बीसवीं सदी का सौगातन के अँकवार में भरे के जतना भर कोशिश कइले बिआ ओतने से ओकर रूप-रंग बिगड़ चुकल बा आ लोग मुँह बिजुका के फतवा दे रहल बा कि कविता खतम हो गइल, मर गइल। बाकिर कविता मरे वाली चीज ना ह। हिन्दी कविता में नीमन-बाउर के पहिचान भले खतम हो गइल होखे, भोजपुरी कविता अपना खासियत के बनवले, अपना जमीन से जुड़ल, आ आधुनिक भावबोध के अभिव्यक्ति देत एकइसवीं सदी का दहलीज पर ठाढ़ बिआ!

पछिला पचासेक साल में भोजपुरी कविता अपना कथ्य, शिल्प, तेवर आ बुनावट-कसावट के निखार लेले बिआ। लोकरागिनी से ऊ कटल नइखे बाकिर खाली अपना माटी के गन्ध भर से तिरपित होके रह जाये के ओकर विवशता अब खतम हो चुकल बा। गीत, गजल, नवगीत, कविता, मुक्तछन्द सबमें अनेक नया क्षितिज खुल चुकल बा। ई कुल्हि कवनो हिन्दी भा अँग्रेजी का नकल में नइखे भइल बलुक एगो सहज विकास-क्रम में भइल बा। भाव आ भाषा दूनू का स्तर पर भोजपुरी कविता काफी पोढ़ होके एकइसवीं सदी में जाये खातिर तइयार बिआ। रास्ता के सब बाधा के लांघत-फानत आ अपमान-उपेक्षा के जहर पीअत चले के संकल्प बा ओकर -

बा कहाँ ठहराव, चलहीं के परी
राह के काँटा कुचलहीं के परी। - (पीयूष)

ओकरा बिसवास बा कि -

काल्ह मंजिल मिली, मन बनवले रहीं
डेग मुसकात हरदम बढ़वले रहीं। - (पीयूष)

कविता के भविष्य ओकरा एह चुनौती से उजागर होत बा -

के कहत बा कि पत्थर कठिन बा तुरल
बस कि मूठी हथउरा बनवले रहीं। - (पीयूष)

भोजपुरी कवि अपनी माटी से रस ग्रहण करत बाड़न, अपना आस-पास के हवा आ ऊपर आकाश से प्राण-शक्ति ले रहल बाड़न। एह से उनकर गीत-गजल-कविता समय का पाँख पर सवार होके उड़त रही। अशान्त-वसन्त-अनिरूद्ध-मोती का गीत के परम्परा बनल रही; पाण्डेय कपिल-जगन्नाथ-कृष्णानन्द कृष्ण-अरुण-सरल-विश्वरंजन-उमाकान्त के लड़ ना टूटी; पाण्डेय सुरेन्द्र-ब्रजकिशोर-पी० चन्द्रविनोद- लक्ष्मण शाहाबादी-अशोक द्विवेदी-भगवती प्रसाद द्विवेदी-दीप्ति-सन्ध्या के प्रयोग जारी रही आ जारी रही गणेश दत्त किरण-विमलानन्द सरस्वती-चन्द्रशेखर मिश्र- अविनाश चन्द्र विद्यार्थी आदि के प्रबन्धकाव्य परम्परा भी। एकइसवीं सदी में भोजपुरी क्षेत्र के विकास-संघर्ष में भोजपुरी कविता का हथियार के काम करे के बा काहें कि **'कविता मेहनतकश के लाठी ह!'**

बीसवीं सदी का अन्त में बहुत बिषम परिस्थितियन से आदमी का जूझे के पड़त बा आ एही से ओकरा संवेदना का आँच सहे के बा। मनस्वी मनई के तेजस्वी मन काल से टकरा के भी अपना अभिव्यक्ति के राह के निबाध बना के रखी एह में सन्देह नइखे। भोजपुरी कविता के भविष्य बहुते उज्जवल बा आ एकइसवीं सदी में बेशक ओकर तेज दप-दप करी। काहे कि -

पोखरा के जमकल पानी में, मछरी बा उतराइल
मुउवत का गड़हा में उजबुज, जिनुगी आज घेराइल
बँसुरी उगिले जहर हिया में, डँस-डँस जाला काल
काल से टकराइल मन! - ('निशान्त')

-दीप ट्रेडिंग एजेन्सी, आनन्दपुरी, बोरिंग रोड, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दलित-साहित्य

अगिली सदी में दलित साहित्य मुख्यधारा बनी

❑ उर्मा वमा

बीसवीं शताब्दी में भोजपुरी के मुख्यधारा में दलित साहित्य के स्थान ना मिल पावल। अइसन नइखे कि भोजपुरी में दलित साहित्य लिखाइले ना होखे। हीरा डोम के चर्चित कविता 'अछूत की शिकायत' (जवना के हिन्दी में कुछ लोग दलित साहित्य के पहिलकी रचना मानता) भोजपुरीए में लिखाइल बावे। एह कविता पर हिंदी में जम के विचार भइल बावे।

दलित साहित्य के मुख्यधारा में स्थान ना मिल पावे के पीछे कई गो वजह बा। दलित साहित्यकार लोग 'साहित्य रचे' खातिर साहित्य ना लिखल। ओह लोग के लिखल रचना अपने समाज ले रह गइल, ऊहो स्थानीय स्तर पर ही छपल बहुते कम आ जवन छपबो कइल ओकर व्यापक प्रचार-प्रसार ना हो सकल। एह सब का पीछे परिस्थिति के लमहर हाथ बा।

एकरा अलावे एगो बड़हन वजह बा। भोजपुरी साहित्य के पतवार अबले जेकरा हाथ में बा ओकर मानसिकता एकरा के स्वीकार करे के नइखे, भले नाव डूबो त डूबो! सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक संरचना में आ रहल परिवर्तन का फलस्वरूप एकरा के स्थान देवे के दबाव निरंतर बढ़ रहल बा। भोजपुरी जगत में एह पर छिटपुट चर्चा होखे लागल बा। कुछ-कुछ ओइसने जइसे विध् ओरवावल जात होखे! भोजपुरी के खेवनहार लोग एकरा के रोके खातिर वइसहीं जी-तोड़ प्रयास कर रहल बाड़े, जइसे कलयुग के रोके खातिर धर्मात्मा लोग करेला।

दलित साहित्य के जवन परिभाषा मराठी आ हिंदी में मान्य हो चुकल बा, उहे परिभाषा (डा० अम्बेदकर के विचारधारा के अनुसार रचल साहित्य) भोजपुरी में भी मान्य होई।

खाली दलित के केन्द्रविन्दु बना के लिखले से कवनो रचना दलित साहित्य नइखे हो सकत। साहित्य में शब्द के शाब्दिक से अधिक महत्त्व विभिन्न कारण से प्रचलित अर्थ के होला। इहे वजह बा कि 'प्रगतिशील' 'जनवादी'जइसन कतना शब्द अपना शाब्दिक अर्थ के बदले मार्क्सवादी साहित्य के पर्याय बन गइल। एही तरे नयी कविता, नयी कहानी, प्रयोगवादी कविता, अकविता, समकालीनता जइसन बहुते शब्द अपना शाब्दिक अर्थ का जगे ,खास अर्थ में प्रयुक्त होला।

एकइसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब दलित साहित्य के उठान होई तब कुछ दलित साहित्य के विरोधी लोग आपन रणनीति बदली। ऊ लोग सियार खानी रंग बदल के दलित साहित्यकार बने के प्रयास करी। एकर मूल उद्देश्य होई कि दलित साहित्य के डा० अम्बेदकर के विचार से भटकावल जाव बाकिर ई लोग सफल ना होई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रचना में दलित के चित्रण बा– एतने भर से कवनो रचना दलित साहित्य नइखे हो सकत । कुछ लेखक लोग दलित पर लिखे के बहाने ई संदेश देला लोग कि 'ओकरा भाग्य में दुःख भगवाने लिखले बाड़े,कथित सवर्ण लोग के सेवा कइल ओकर धर्म हवे, एही से ओकर मुक्ति होई, सामाजिक समरसता के नाम पर चुपचाप लात–जूता खात रहे के चाही, दलित लोग मूर्ख,चोर,दुष्ट,स्वभाव के होला, संस्कार भगवाने बनावेले इत्यादि । अइसन रचनन के दलित साहित्य माने के कवनो कारण नइखे । ई सब त दलितविरोधी रचना हवे ।

कई गो लेखक लोग अपना अपना रचनन में दलित के प्रति बड़ी हिम्मत कके ठीक ओइसने उदारता देखावेला जइसे सड़क पर जात कवनो कुत्ता के भूखाइल बूझ के केहू कूड़ा में फेके वाला रोटी ओकरा आगा फेक देव । अइसन लेखक लोग के जब ई बूझाला कि दलित वर्ग आँख मे आँख डाल के बराबरी करे के प्रयास करतारे त एह करूणा के सागर लोग के खून खउले लागेला–"ई बहुत मनबढुआ हो गइल बाड़े सन । हमनी के पुरनिया ठीके कहले बाडे कि बड़ जात बतियवले आ नान जात लतिअवले ।"

एह दूनों के अलावे तीसर तरह के रचनाकार भी बाड़े जेकरा रचनन में दलित जागरण के आदर्शवादी आ काल्पनिक स्वर मुखर भइल बा । अइसन रचनन में दलित उत्थान के चाहत त बावे बाकिर उत्थान खातिर जवना तरह के संघर्ष के जरूरत बा ओकरा के ना बता के जादू मन्तर वाला राह बतावल बा ।

सूर्यदेव पाठक पराग के उपन्यास 'अछूत' अइसने रचना बावे । एह में दलित समस्या केन्द्र में बावे । दलित वर्ग के उत्थान खातिर शिक्षा पर सर्वाधिक जोर दिहल बा । शिक्षा के महत्त्व महामना ज्योतिबा फूले ,डा० अम्बेदकर सहित सब दलित उद्धारक लोग स्वीकार कइले बा । फूले के अनुसार त शिक्षा के अभावे दलित दुर्दशा के मूल कारण बा –

"विद्या बिना मति गई
मति बिना नीति गई
नीति बिना गति गई
गति बिना वित्त गया
वित्त बिना शूद्र टूटे
इतने अनर्थ
एक अविद्या ने किये ।"

बाकिर पराग के 'अछूत' में दलित लोग के शिक्षा प्राप्त करे खातिर कोरा काल्पनिक स्थिति बतावल बा । केहू ब्राह्मण जाति के, ओहू में सरकारी मास्टर जबरदस्ती दलित लड़िकन के पकड़–पकड़ के पढ़ाई, सोना पर सुहागा ई कि सउसे गॉव के कथित सवर्ण लोग दलितन के ना पढ़े देवे खातिर एक गोड़ पर खड़ा बाड़े।

जवना समाज में दलित वर्ग के शिक्षा ना देवे खातिर मोट–मोट पोथा लिखाइल होखे, शिक्षा पा लेला पर कान में पिघलल सीसा डाले, जहवाँ–गर्दन काटे से लेके बल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में हार गइला पर छल से अंगूठा कटवा लेहले 'धर्म'होखे–ओजवाँ पराग के कल्पना अपवादे हो सकता। अइसन कल्पना से त दलित वर्ग के भाग्यवादी बने के प्रेरणा मिली। फूले आ अम्बेदकर जइसन लोग के शिक्षा प्राप्त करे खातिर जवन दुःख उठावे के पड़ल ओकरा शतांश के चित्रण से भी दलित वर्ग के सही राह मिलित।

एह अपन्यास में दलित उत्थान जादू मंतर खानी हो जाता। अधिकार केहू थरिया में परोस के ना मिले, ओकरा खातिर संघर्ष अनिवार्य बा; नया के निर्माण खातिर पुरान के विध्वंस आवश्यक बा।

जबले जाति व्यवस्था रही, तबले ऊँच–नीच के भेदभाव रही, चाहे आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक स्थिति में केतनो परिवर्तन हो जाव। जाति व्यवस्था तूड़े के सबसे कारगर उपाय अन्र्जातीय विवाह बा। अछूत उपन्यास में एकरा के घटित होत देखावल जाता बाकिर एकरा खातिर जवन पृष्ठभूमि चाही ऊ नादारद बा।

योगेन्द्र प्रसाद सिंह सिंह के उपन्यास, 'फुलमतिया' में दिखावल यथार्थ, संघर्ष आ तेवर 'अछूते' अइसन बा।

अबही बहुते कम दलित लेखक प्रकाश में आइल बाड़े। जे कुछ प्रकाश में आइल बाड़े ओह में अरूण भोजपुरी के स्वर सबसे प्रखर बा। इहाँ के महाकाव्य 'सर्वहारा के शिव'(भोजपुरी वार्त्ता में धारावाहिक रूप में प्रकाशित) आ नाटक 'संत रैदास' प्रकाशित बा। भोजपुरी के रचनन में स्पष्ट विचार आभिव्यक्ति के आक्रामक तेवर बा। इहाँ के कवितन में दलित आक्रोश के जुझारू स्वर साफे सुनाला–

"कल्पित कपोल करनी, गा गा जे सुनावल
उहे लोग महापंडित ज्ञानी मुनि कहावल
पाप–पुण्य,पुनर्जन्म, स्वर्ग, नरक
पचरा में पड़ि के बहुते दिन बीतावल"

दलित लेखक में दोसर नाँव बा– विक्रमा प्रसाद के जेकर उपन्यास 'भोर मुसकाइल' भोजपुरी में एगो मील के पत्थर अस मानल जाला। एह उपन्यास में दलित समाज के स्थिति, ओकरा उत्थान के मार्ग में आवे वाली बाधा, संघर्ष के दिशा ओकर तेवर आदि सब पर नजर दउड़ावल बा।

एक बेर विवेकानंद कहले रहस कि अगिला शताब्दी(बीसवी शताब्दी) शूद्र लोग के होई। जवन साँच भइल। साहित्य के दुनिया में एकइसवी शताब्दी दलित साहित्य के होई। इहे साहित्य के मुख्यधारा बनी।

दलित लेखक सुगबुगा रहल बाड़न, गवें–गवें आगा बढ़ रहल बाड़े आ दलित साहित्य आपन जगह बना रहल बा। दलित के बात दलित द्वारा दलित का भविष्य खातिर लिखाय आ दलित में प्रचारित–प्रसारित होय, दलित साहित्य तबे सही अर्थ में समृद्ध होई, सार्थक होई।

–वर्मा ट्रान्सपोर्ट, सीवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकइसवी शताब्दी आ भोजपुरिहा समाज

□ राकेश प्रवीर

कवनो समाज आ समुदाय के अपन एगो खास पहिचान भा विशेषता होला। ओह समाज के रहन-सहन, रीति-रिवाज, चाल-चलन, बोल-चाल, उठन-बैठन सबके अपन अंदाज होला। ई सब बात ओकरा लोकसाहित्य आ परम्परागत संस्कृति में समाहित होला जवन माटी के गन्ध से सराबोर रहेला। भोजपुरिया समाज के पहिचान त ओकर जिन्दादिली आ अखड़पन ह। समाज एगो संश्लिष्ट इकाई ह। समाज वर्ग आ वर्ण में बंटल रहेला। हर समाज के अपन ऐतिहासिक, राजनैतिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होला, जवन श्रृंखला, परम्परा, रीति-रिवाज, संस्कार, पारिवारिक सामाजिक संरचना, पहनावा, खान-पान, धर्म, लोकाचार आदि के आधार पर पहिचानल जाला।

सामाजिक बदलाव त काल-प्रवाह में स्वाभाविक आ लाजिमी होला बाकिर एके समुझे-बुझे ला समाज के उ अन्तर्क्रिया आ विधि विशिष्ट के पड़ताल जरूरी ह जवना से समूचा बदलाव आ परिवर्त्तन होखेला। ए कुली बात के क्रम में एगो मानदंड आ दर्पण के जरूरत होला। हमरा ख्याल से भोजपुरिया समाज के विकास क्रम आ बदलाव प्रक्रिया के मूलत: तीन गो आधार पर बाँट के समुझल जा सकत बा। पहिला आधार त सामाजिक तानाबाना आ रच-बुनाव होला, ओकरा बाद आर्थिक आधार आ तब सांस्कृतिक दृष्टि जरूरी बा।

एह सब बातन के स्पष्ट करेला काल के निर्धारण भी जरूरी बा। अपना बात के रखे खातिर हम बीसवीं सदी के मोटा-मोटी दू भाग में बांटल चाहत बानीं। पहिला हिस्सा आजादी के पहिले के आ दूसरका आजादी के बाद से लेके एह सदी के समाप्ति तक के हो सकत बा। एह कालखंड के समुझले बिना एकइसवीं सदी के संभावित बदलाव आ परिवर्त्तन के समुझे में कठिनाई होई। एह बात से केकरो असहमति नइखे हो सकत कि काल एगो स्वीकृत आयाम ह, जवन स्वयं परिवर्त्तनशील, गतिमान आ विकासोन्मुख होला।

बीसवीं सदी के शुरूआती दिन से लेके आजादी मिलला तक भोजपुरिहा समाज एक तरे से अपना अस्तित्व-रक्षा से जुझत रहे। एह समय में छोट-बड़ बदलाव खातिर घटित होखे वाली घटनन के श्रृंखला के बीच ए समाज के लोग भी आन्दोलित रहे। एह लमहर कालखंड के अधिकाधिक हिस्सा त आजादी के लड़ाई में होम हो गइल।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सामाजिक बदलाव के प्रक्रिया भी जारी रहे जवना पर गांधी के विभिन्न रचनात्मक अभियान सबके भरपूर असर रहे। ओह समय आउर भारतीय समाज के लेखा भोजपुरिहा समाज भी अशिक्षा, गरीबी, अन्धविश्वास आ अनेक प्रकारन के सामाजिक कुरीतिअन के नागफांस में जकड़ल रहे। बाल-बिआह, कन्या-वध, विधवा-दाह, छुआ-छूत, जमीनदारन के अत्याचार, शोषण आ उत्पीड़न के अजगरी जकड़न से छुटकारा के कवनो राह ना सुझत रहे बाकिर आजादी के संग्राम के साथे-साथ सब कुरीतिअन आ विकृतिअन पर भी प्रहार होखे लागल। गांधी बाबा के ग्रामोत्थान आउर आत्मोदय आन्दोलन के प्रभाव से भाजपुरिहा समाज भी अछूता ना रह सकल। आजादी के लड़ाई में त एह समाज के भरपूर योगदान शुरुए से रहले रहे बाकिर एकरा साथे चलेवाला रचनात्मक आन्दोलनों के एह समाज पर ढेरे असर पड़ल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाधा के प्रभाव के पहिलहीं एह क्षेत्र में फिरंगी दासता से मुक्ति के छटपटाहट शुरू हो गइल रहे। वीर बांकुड़ा बाबू कुंवर सिंह के संग्राम के बेरा त ई पूरा इलाका अंगरेजी हुकूमत के खिलाफ लामबंद हो गइल रहे। बाबू कुंवर सिंह जी के संग्राम के गहिरा असर इहां के लोगन आ समाज पर पड़ल। एह संग्राम के कुचला गइला के बादो ले एह क्षेत्र में विद्रोह के चिंगारी सुलगत रहल। समय-समय पर ई चिंगारी धधोर भी बनत रहल।

इहां हमार अभिष्ट आजादी के लड़ाई के इतिहास लिखल नइखे, बाकिर सामाजिक बदलाव के आँके खातिर एकर चरचा इहाँ प्रासंगिक बा। आजादी के पहिले कईगो अइसन प्राकृतिक आफत-बिपत आइल जवना से एह क्षेत्र में जान-माल के भारी क्षति भइल आ आर्थिक स्थितियो लचर हो गइल। सन् 1914 के भीषण अकाल आ सन् 1934 के भूकम्प के साथे ही साल दर साल आवे वाला बाढ़ आ बीच-बीच के सुखाड़ से एह कालखंड में भोजपुरिहा समाज के माली हालत हरमेशा खस्ता बनल रहल। ई अइसन समय रहे जब भूख से बेहाल होके भोजपुरिहा समाज के हजारों-लाखों लोग रोजी-रोटी ला परदेश के शरण लिहलस। खेतीबारी आ अपन गांव-घर छोड़-छाड़ के लोग कलकत्ता के चटकल आ आसाम के चायबगान में चाकरी करे चल गइल। एकर कइ लेखा से भोजपुरिहा समाज पर असर पड़ल। एक ओरिया जहां खेती-बारी आ घर-गांव उजाड़ हो गइल ओतहीं भोजपुरिहा समाज के परिचय बाहरी दुनिया से भी भइल। इहां के लोगन के आर्थिक स्थिति पर त एकर असर पड़बे कइल एकरा साथे ही सामाजिक आचार-व्यवहार, रहन-सहन, खान-पान, पहनावा-पोशाक पर भी प्रभाव पड़ल। नइकी रोशनी से पहिचान भइला के बाद जहां नोकरिहा आ परदेशी मजूर लोगन का शोषण आ अत्याचार समुझ में आवे लागल ओतहीं आर्थिक गुलामी से ओ लोगल में मुक्ति के छटपटाहटो शुरू भइल। वोह लोगल का अपना गांव के जमीनदार आ साहूकार के चालाकी समुझ में आवे लागल आउर उ गाहे-बेगाहे बिना ऑहओंच के गलत बात के विरोध भी करे लगलन। एह सब बात के समाज पर गहिर असर पड़ल। इहे ऊ कालखंड ह जब भोजपुरिहा समाज वर्णाश्रित सनातन समाज व्यवस्था आ रूढ़िवादी धार्मिक कर्मकाण्डी व्यवस्था से छुटकारा पावेला हाथ-पांव मारे लागल। लोगन का ई बात समुझ में आवे लागल कि दुनिया से कदम से कदम मिला के चले खातिर शिक्षा जरूरी बा।

आजादी मिलला के बाद जहवां आर्थिक विकास के गति तेज भइल ओतहीं सामाजिक बदलाव के प्रक्रिया में भी तेजी आइल। शिक्षा के साथे-साथ नोकरिहा लोगन के संख्या बढ़ल। लोग-बाग बाहर आवे-जाये लागल। आवाजाही ला सवारी के सुविस्ता बढ़ गइला के कारण रोजी-रोजगार के मौका भी बढ़ल। शिक्षा व रोशनी के कारण समाज में नारी के स्थिति में सुधार आइल। बंगाल में आजादी के पहिले जे नवजागरण आन्दोलन चलल रहे ओकर प्रभाव आजादी के बाद बिहार के भोजपुरिहा समाज में साफ-साफ लउके लागल। समाज में विकास के नइकी चेतना जागल। बाल-बिआह आ बेमेल बिआह आउर विधवा-दाह जइसन कुप्रथा पर रोक लागल। बाकिर दहेज में काफी कुछ बटोरे के होड़ें एही समय में शुरू हो गइल। आर्थिक स्थितिअन में सुधार के बादो भूमि विवाद आ मजूरी के लेके भूमिपति आ मजूर लोगन में टकराव शुरू हो गइल। मध्य बिहार के भोजपुरिहा क्षेत्र एकर पहिलका निशाना बनल। एकरा बाद त एह समाज में वर्ग आ वर्ण के बाद जात-पांत के झमेला-बखेड़ा खड़ा हो गइल। ई बखेड़ा अइसन फसाद के रूप धर लेहलक कि खून-खराबा के कवनो ओर-छोर नइखे लउकत। एक तरे से कहीं त सगरो कोहराम मचल बा। पानी से भी सास्ता खून हो गइल बा। एह लड़ाई फसाद में त समूचा सामाजिक तानाबाना ही ढहे लागल बा। ऐसे भोजपुरिहा समाज के मेल-मिलाप आ समरसता त प्रभावित होइए रहल बा आपसी भाईचारा आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेटा-राटा के सम्बन्ध आ रिश्ता दरक रहल बा । भोजपुरिहा समाज ला एक एह शताब्दी के आखिरी दसक के सबसे बड़का अभिशाप कहल जा सकता । हर लेखा विकास के राह पर चलला के बादो भोजपुरिहा समाज आजो हिंसा के कारण इतिहास के बर्बर युग में फंस गइल बा ।

भोजपुरिहा संस्कृति शुरूए से अपना दामन में मिल्लत आ सदभाव, सहअस्तित्व आ सहयोग के मूल भावना समेटले बा । उमेद कइल जा सकत बा कि एकइसवीं सदी में ई सांस्कृतिक विरासत आउर मजबूत होई । आपसी मनमुटाव आ दूराव दूर होई । एकइसवीं सदी सामाजिक तानाबाना के लिहाज से महत्वपूर्ण हो सकता । चरमारात पारिवारिक व्यवस्था आ सुख-सम्पति के लोभ में आज-काल्ह जे सगरो मतभेद आ कलह खून-खराबो के हद तक चहुँप गइल बा एह पर रोक लागावल जरूरी बा ।

अगिली सदी भोजपुरिहा समाज के उत्कर्ष आ विकास के स्वर्णकाल साबित होई। एह बात के सपना जोगावल जा सकत बा। नोकरी-चाकरी आ खेती-बारी के समुचित विकास के लाभ से समाज के हर तबका में खुशहाली आ सकत बा, बाकिर एकरा ला पहिलका शर्त अमन-चैन आ शान्ति होई । शान्ति के गोद में ही कवनो भी नीमन आ नेक काम हो सकत बा ।

अगिली सदी में भोजपुरिहा समाज नइकी रोशनी से ही लबालब ना रही बलुक इहां पश्चिमी रंग-ढंग आ चमक-दमक भी बहुतायात में लउकी। एह क्षेत्र के खान-पान, रहन-सहन, पहनवो-पोशाक में बदलाव त अइबे करी, एकरा साथ साथ लोगन के सोचे-विचारे आ अभिव्यक्ति के तौर-तरीका भी आधुनिक से आधुनिकतम हो जाई ।

आर्थिक विकास के प्रक्रिया आउर तेज आ गांव का ओरिआ रही, जवना के चलते बदहाली आ दुर्दशा में गुजर-बसर कर रहल गांव के लोगन के जिनिगी में सुख आ समृद्धि आई । आर्थिक विकास तक ले त बात समुझ में आ रहल बा बाकिर एकर दाम लोगन का कई लेखा चुकता करे के पड़ी । आर्थिक समृद्धि से जहवां लोगन के रहन-सहन में बदलाव आ जाई ओतहीं लोग अपना मूल संस्कृति आ सांस्कृतिक विरासत से भी कटत चल जाई । सामाजिक आ पारिवारिक रिश्ता अब आर्थिक दबाव आ एकल परिवार के अवधारणा के विकास के साथे ही रिसे लागल बा। एकइसवीं सदी में त ई प्रक्रिया आउर विभत्स रूप में ही सामने आई ।

रिश्ता के रिसाव के एह बात से समुझल जा सकल जाला कि आज के नइकी पीढ़ी के धीया-पुता सब अपना बाप-महतारी के छोड़ के दादा-दादी आ चाचा-चाची तक के पहिचान ना पावत बा। आजु से तीन-बार दसक पहिले लइका अपना बाप के भाई के "छोटका बाबूजी" आ "बड़का बाबूजी" आ अपना चाची के "बड़की माई" आ "छोटकी माई" कह के पुकारे । बाकिर जब से ई रिश्ता सब 'अंकल' आ "आंटी" बनल ह ना खाली रिश्ता के मिठास खतम हो गइल ह बलुक अपनापन के भावबोध कपूर लेखा उड़ गइल ह । अगिला सदी में भोजपुरिया समाज का ई दुखद स्थिति से ना खाली निबटे के पड़ी बलुक एकर खामियाजा भी भुगते के पड़ी। रिश्ता के खटास के असर इकाई से समूह पर भी पड़ेला । सामाजिक तानाबाना भी एसे दरकी ।

शहर में बसे के होड़ भइला के कारण भोजपुरिहा समाज के एगो बड़का तबका अगिली सदी में गांव से अपरिचित रही । एकर नतीजा कई लेखा से भयावह होई । अगिला सदी में नइकी पीढ़ी के लइकन सबका धान आ गेहूँ के झार चीन्हे में दिकत होई । इहो हो सकत बा कि ओह लोगन का ई ना मालूम रहे कि दलहन आ तेलहन आ आउर सब अनाज खेत में उपजे ला कि फैक्ट्री में बनेला ।

सैकड़न-हजारन बरिस से जोगावल संजोअल संस्कृति के अस्तित्व रक्षा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवालन स भी आगिला सदी में जुझ के पड़ी । संस्कृति से पलायन के कारण लोग अपना संस्कार के भी भूलले जा रहल बा । संस्कार उ चीज ह जवन कवनो आदमी के ओकरा जड़ से पकड़ के रखेला । संस्कार खोवला के सीधा मतलब होई कि लोग तमाम सम्पन्नता के बीच दलिदर बन के रह जाई । ई चिंता के बात होई कि लोग संस्कार गीत, रीति-रिवाज, रस्म, परम्परा आ प्रथा के भूलल जात बा ।

शहरीकण आ उद्योग-धंधा के फइलाव-विकास के कारण गांव में छोटहन स्तर पर चले वाला कुटीर उद्योग ना खाली खतम हो जाई बलुक कम पूँजी आ सीमित संसाधन से जीविकोपार्जन करेवाला लोगन के सामने रोजी-रोटी के समस्या खड़ा हो जाई । गांव-गिरावं में मल्टीनेशनल्स कम्पनी सबके बड़का-बड़का डिपार्टमेन्टल स्टोर्स के खुल गइला से गांव के हाट-पेठिया सब गदहा के माथे से सिंग लेखा गायब हो जाई । नइकी मोटरकार सबके भरमार रही । प्राइवेट बस में भाड़ा दे के कोचा-कोचा के सफर करेवाला लोग भी चमचमात सीएलो, मारुति, आ हुडइई कार पर सवार हो के सट से भिरि से निकल जाई । वीडियो, वी. सी. आर. आ टेलीविजन टेलीफोन तबले भोजपुरिहा समाज ला पुरान हो गइल रही । वीडियोफोन, इंटरनेट, ई-मेल, सेटेलाइट स्क्रीन विजुअल, सेल्युलर मोबाइल आ माइक्रोविजुअल नयका फैशन आ चलन में रही ।

भौतिक सुख-सुविधा त खुबे रही बाकिर एकरे साथे-साथ लोग तनाव, अवसाद आ मनोरोग के शिकारो खूब रही। नयका जुग के नइकी बेमारी आ रोग सें लोग बेहाल रही । हाइपरटेंशन, न्यूरो प्रोब्लेम, बोनसर्क, डिप्रेशन आ एड्स जइसन जानलेवा बेमारिअन का चपेट में लोग रही । लोग का लगे पइसा बहुते रही बाकिर रोजमरा के सामान स के दाम आसमान छुअत रही । थैला में भरके लोग रूपइया ले जाई आ जेबी में सामान ले आई । दवा-दारू सभका बस के बात ना रही । गरीब लोगन के जिनिगी जिअल मोसकिल हो जाई । अमीर लोग जहवां आउर अमीर हो जाई ओतहीं गरीबन के तादात बहुते बढ़ जाई ।

तामसी प्रवृत्ति के चलते हिंसा के तांडव होत रही । पानी से सास्ता खून हो जाई आ नून अतना महंगा हो जाई कि गरीब-गुरबा लोगन का चहुँप से दूर रही । लूट-मार, खून-खराबा से डरल-सहमल लोग अपना घरो में अपना के सुरक्षित महसूस ना करिहन आ हरमेशा अपना के आतंकित पइहन ।

ई कवनो जरूरी नइखे कि अगिला सदी हम जइसन सोचत बानी ओइसने होखे, हमर सोच नाकारात्मक हो सकत बा । बड़-बुजुर्ग के कहल ह कि आवेवाला काल के हरमेशा नीक माने के चाहीं । बाकिर ऐमे हमार कवनो दोष नइखे । उगत सूरज के देख के दिन कइसन होई एकर अंदाज लगावल जा सकत बा। आज के निरिख के काल्ह का बारे में आंकल जा सकत बा। एकरा बादो भगवान करस कि हमर सोच गलत होखे आ अगिली सदी भोजपुरिहा समाज ला सुख-समृद्धि से भरल-पुरल मंगलमय होखे !

—फीचर सम्पादक, 'आज' हिन्दी दैनिक, फ्रेजर रोड, पटना-1

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकइसवीं सदी में भोजपुरी समाज, नैतिकता आ साहित्य

❑ रूचिका रंजन

उत्तरआधुनिकतावादी चिन्तक फ्रान्सिस फूकोयामा जब 'इतिहास के अन्त' नाँव के पुस्तक लिखले तब सउँसे दुनिया में एगो तहलका मच गइल रहे। फूकोयामा के घोषणा के माने रहे इतिहास-बोध के अप्रासंगिक हो गइल, आ भौतिकवादी चिन्तन-मुद्रा के अन्त, आज के तकनीकी क्रान्ति से एगो अइसन उत्तरऔद्योगिक समाज के उदय जवना में सभ तरह के पुरान सोच आपन अर्थ आ संन्दर्भ से कट जाई। सोवियत संघ के टूट के बिखर गइला से पूँजीवादी उदार गणतंत्र के मार्क्सवादी गणतंत्र पर जीत दर्ज हो गइल आ दुनू विचारधारा का बीच हो रहल संघर्ष के अन्त हो गइल। ई तथ्य एगो गंभीर बहस के विषय रहे । एह पर गंभीर बहस चलबो कइल। मार्क्सवादी विचारक लोग का ई बात मानल बहुत हेठी बुझाइल कि सोवियत संघ के बिखराव का जवरे मार्क्सवादी विचारधारा के दीवाला निकल गइल। पहिले एह तथ्य के हँसी-ठाठा में उड़ा देवे के कोशिश भइल आ एकरा के अमेरिकी मक्कारी के नमूना के रूप में पेश कइल गइल। 'नव मार्क्सवाद' आ 'उत्तर मार्क्सवादी चिन्तन' के परिकल्पना भइल। बाकिर बात ना बनल। बहुराष्ट्रीय निगम, सूचना क्रान्ति, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावादी समाज-संस्कृति, स्वच्छन्द यौनवाद, मस्त शरीरवाद आ बेलगाम इन्द्रिय-लिप्सावाद के अइसन ना आँधी बहल कि पुरान लोक-मान्यता, सोच-समझ, परम्परावादी चिन्तर सभ हवा हो गइल।

1992 के अपना 'इतिहास के अन्त' में फूकोयामा "नव पूँजीवाद के ...क्तितंत्र के अधिकार क्षेत्र" के उजागर कइलन आ 'मनी, माइण्ड आ मसल' का ...र से पुरनकी मूल्य-व्यवस्था के दीवार भहराये लागल। फूकोयामा अपना एही ...पना के आउर तार्किक आ तेवरदार बना के परोसले बाड़न हाल में छपल पुस्तक ...प्न विघटन' (ग्रेट डिसरस्पन) नाँव के किताब में । उत्तर औद्योगिक युग अब ...ा-औद्योगिकी के क्रान्ति-युग में प्रवेश कर रहल बा जवना का दौरान एक-एक ...क मानदण्ड खण्ड-खण्ड होके टूट आ बिखर रहल बा। उत्तर औद्योगिक युग ...क क्षेत्रन में विकास तेज करे के जतना वरदान देले बा ओहू से ढेर सामाजिक ...तेक व्यवस्था के पतनशील करे के अभिशापो देले बा। आज आदमी अइसन ...जिनगी जीये खातिर विवश बा, जहाँ नैतिक मूल्यन के कवनो जगह नइखे रह गइल। बेकाबू हो गइल उपभोक्तावाद मनई के सनका देले बा। बीसवीं सदी का अन्त में एह स्थिति-परिस्थिति के नतीजा बा- आज के मानव-समाज में गहिराई ले जड़ जमा चुकल अपराधवृत्ति, हिंसा-हत्या, परिवार के छीजन, नशीला पदार्थन के सेवन, विवाहेत्तर-रिश्ता के चलन, घर-घर में कलह, तलाक, अकेलापन के दंश, आत्महत्या के बढ़त मनोवृत्ति, टैक्स के चोरी, कालाधन के लोभ, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार, बेईमानी आदि ।

आज हर स्तर पर अमीर-गरीब के बीच दूरी बढ़त जा रहल बा। अमीर देश के अमीरी बढ़ल जाता आ गरीब देश आउर दीन-हीन भइल जाता। मार्क्सवादी चिन्तन एह खाई के पाटे के कवनो ठोस उपाय ना दे सकल। फूकोयामा एह सामाजिक अव्यवस्था के कारण पुरुष वर्ग के मनले बाड़न जवना के शोषण-वृत्ति का चलते औरत का मजबूरन घर से निकल के नौकरी करे खातिर मजबूर होखे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़त बा आ फल होता परिवार के विघटन आ घरेलू रागात्मक सम्बन्धन के छीजन। पश्चिमी दुनिया में त एकर पीड़ा बहुते महसूस कइल जात बा, जहवाँ व्यक्तिवाद चरम पर बा आ खाली अपने खातिर जीयें के ललक सामूहिक भावना के नाश कर देले बा। जब बचपन माई-बाप केहू एकेजन का देखरेख में कूदत-चिढ़त बीती त मन में राग के गुंजाइश बचबे कइसे करी! हिंसा आ अपराध के वृत्ति पलबे-बढ़वे करी। पश्चिमी देशन में बेकारी आ अशान्ति के दोसर कारण बा बहुसंस्कृतिवाद आ धर्म में अनास्था। धर्म आदमी के बेहतर बनावेला, समूह से जुड़े के सीखावेला। धर्म ना त कर्मकांड हवे, ना कठमुल्लापन। धर्म त जिनगी जीये के आ एकर रस लेवे के कला ह। एह से करूणा, दया, रक्षा, ममता, पवित्रता, शुभता आ समरमता पैदा होला। मार्क्सवाद धर्म के गलत रूप लेके जे नफरत पसरवलस आ खाली नीरस बुद्धिवाद का चक्कर में धर्म का ओह गुण के बिसरा दिहलस कि धर्म सामाजिक नियंत्रण के एगो महत्वपूर्ण माध्यम होला। धर्म अकसरूआपन के निराशा के तूड़ेला आ सही अर्थ में पारस्परिकता आ सामाजिकता के विकास करेला। धर्म समरसता अउर आस्था के वरदान देला, प्रेम आ अपनापन के राग मन में पैदा करेला। भारतीय दर्शन धर्म का एही स्वरूप के सकरले बा।

परिवार आ समाज के जवन दुरगति पश्चिमी दुनिया में हो चुकल बा, ऊ जिनगी के सँवारे वाला नइखे, बल्कि तबाही देवे वाला बा। भौतिक समृद्धि सुख के कारण नइखे हो सकत। बीसवीं सदी के आखिर ले ई बात साफ हो चुकल बा कि सत्ता का शिखर पर बइठल नेता लोग, चाहे ऊ कवनो देश के होखें, जनता के तबाही ढेर देले बा, सुकून आ सुख बहुते कम। ऊ लोग कवनो सही दिशाबोध नइखे दे सकल। ई दिशाहीनता आदमी में भ्रम पैदा कइले बा, एगो मूढ़ता के भाव जनमवले बा। नतीजा भइल बा सभ तरह के नैतिक मूल्यन के पतन। एह पतन का मूल में बा महतारी से बच्चा के दूर हो गइल। जइसे-जइसे तकनीकी क्रान्ति बढ़त जाई, विश्व में समस्या-पर-समस्या पैदा होत जाई आ आदमी के जीअल मोहाल हो जाई। अमरीकी समाज के भीतरी पीड़ा, बेचैनी, अकेलापन, हिंसा आदि का पीछे नैतिव मूल्यन के खतम हो गइल बा। जइसे-जइसे नारी के दुनिया 'घर' से ज्यादा बाहर काम में बसत जाई ओइसे-ओइसे समाज में हिंसा, सेक्स, अलगाव, निर्ममता ब जाई आ रागात्मक सम्बन्धन का छीजन से आदमी भीतर से खंखर होत जाई, बं धरती बनत जाई। 'प्रगति', प्राप्ति, आ विकास के मायावी राक्षस-लीला आदमी लीलत चल जाई। आज के ई संकेत बहुत भयावह बा। भविष्य में ई राक्षस-ली बहुते दुर्दान्त बन जाई आ तब 'मनुष्य' के अन्त हो जाई। जब मनुष्यता मानव पहिचानें ना रहि जाई तब मनुष्य कइसे बाँची ? यदि अगिली सदी में आ ओकरा ब 'मनुष्य के अन्त' से बचे के बा त हमनी का पुरनकी सामाजिक व्यवस्था, नैतिक धर्मव्यवस्था का ओर लवटे के होई। एह वापसी के अर्थ विकास आ प्रगति के उलट देवे के ना, बलुक अइसन सोच पैदा करे के बा जवन विकास आ पारिवारिकता दुनू के एक जवरे लेके चल सके। परिवारे समाज आ समूह के धुरी हवे आ जब धुरीए नष्ट हो जाई तब जिनगी के रथ कइसे चली। एकइसवीं सदी के सबसे बड़ समस्या होई परिवार के बचावल आ ओकरा के फेर से मजबूती आ प्रतिष्ठा प्रदान कइल। पश्चिमी देशन के संस्कृति आ सभ्यता का अन्धाधुन्ध नकल में भारत जइसन देशो का एह भयावह स्थिति के सामना करे के पड़ी आ एही से एहूजा ई सोचल बहुते जरूरी बा कि परिवार अपना पूरा गरिमा का संगे कइसे बाँचो

महतारी के सन्तान का प्रति जे ममता, राग, नेह आ दर्द होला ऊ गवें-गवें तिरोहित होत जा रहल बा। पछिम के अन्धानुकरण नारी के मातृत्व, ममता, करुणा आ ओकरा मने के ना बलुक देश के मन, चिन्तन आ चरित्र के बिगाड़े पर लाग गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा। उपभोक्तावाद के बढ़त आकर्षण का कारण भारतीय नारी के सनातन मातृभाव कमजोर पड़त जात बा। माई के पहिचान मेंटत जाता बा आ बोतल के पहिचान बनल जात बा। गोद भुलाइल जाता आ खेलवना के संगत बढ़त जाता। जरूरी बा कि जे पूज्या रहल बा ओकरा के निहित स्वार्थवश भोग्या बना के मत छोड़ल जाव। राजनीतिक, सामजिक, आर्थिक आ व्यवस्था में आइल विकृतियन के दूर कइल जाव बाकिर एगो फोड़ा खातिर देह के टुकड़ा-टुकड़ा करके बिगल मत जाव।

सौभाग्य से विकास में पिछड़ गइला से औद्योगिक संस्कृति के ना पनपला का ओजे से भोजपुरी क्षेत्र में माता आ नारी के गरिमा ओतना तेजी से इनखे घटल, जेतना तेजी से देश के दोसरा भागवन में घटल बा। एही से संयुक्त परिवार एह क्षेत्र में टूट-बिखर त रहल बा बाकिर एकर गति अतना तेज नइखे कि चाहल जाय त एह विघटन के प्रक्रिया के रोकल ना जा सके। बीसवीं सदी एह विघटन का कगार पर भोजपुरी समाज के लाके ठाढ़ जरूर कर देले बिआ बाकिर अगिली सदी में पूरा के पूरा सामाजिक ढाँचा भहरा मत जाय, एह खातिर परिवार के ढाँचा के मजबूत बना के राखे के उतजोग करे के पड़ी। एकर एगो बहुते कारगर साधन होई साहित्य।

साहित्य शक्ति हवे। समाज में मल्यन के स्थापित करे के भा विस्थापित करे के एगो कारगर उपकरण के काम करेला साहित्य। साहित्य सामाजिक बदलाव के माध्यम होला। एह में चेतना के उत्कर्ष प्रकट होला बशर्त्ते ई एगो साधना के रूप में विकसित होखे। एह सदी में आइल चुनौतियन के सामना अपना जमीने पर पाँव रख व्यक्ति के साहित्य पोढ़ बनावेला। साहित्य का लगे अदम्य प्रतिरोध के शक्ति होला। घोर उपेक्षा आ अपना लोग के उदासीनता का बीच में भी साहित्य के फूल खिलेला आ आसपास में एगो वैचारिक सुगन्ध भर देला। साहित्य सत्य, शिव आ सुन्दर तीनों के समेकित रूप हवे। साहित्य के जे सच होला ऊ समय आ समाजे का सच के एगो हिस्सा होला। बीसवीं सदी में दुनिया भर के साहित्य एक-दूसरा का अतना नियरा आइल बा, जतना पहिले कबहीं ना आइल रहल ह। एक देश के ाहित्य भा एक भाषा के साहित्य दोसरा देश आ भाषा का लगे सहजता से पहुँचल आ, '-वसुधैव कुटुम्बकम्' के भावना के मजबूत कइले बा। लेखक लोगन आ तियन के आवाजाही एक जगह से दोसरा जगह खूबे भइल आ एह से विचार आ न्दोलन के भी यात्रा जम के संभव हो सकल बा। हर भाषा के साहित्य आपन द बनवले बा आ फेर अपनहीं ओह सरहद के अतिक्रमण करके दोसर-दोसरा इदन में प्रवेश कइले बा। राजनीति आ अर्थनीति सऊँसे संसार के होला के रख बा बाकिर साहित्य के प्रतिरोध-शक्ति अतना प्रबल होला कि ओकरा से सत्ता अधिकार पालतू ना बना सके। तत्काल के लाभ के लोभ आ प्रलोभन के तजके साहित्य अपना दूरगामी प्रभाव का प्रति लगातार सजग रहल बा। जब कबही केहू एह सदी के विचार, आतंक आ चिन्ता के आकलन करी त ओह में साहित्य का भीतर से जे साक्ष्य मिली ऊ बहुते प्रामाणिक आ विश्वसनीय सिद्ध होई। साहित्य एह सदी का रणभूति का बीच में पूरा धीरज का जबरे रहल बा आ ओह में जवन सच उजागर भइल बा ऊ मनुष्य के भोगल सच बा। साहित्य हर मोकाम पर आ हर समय मनुष्य का सँगे रहल बा।

बीसवीं सदी दुनिया भर में आजादी के लहर फइलवस त साहित्य एह आजादी के गाथा बन के सोझा आइल। भोजपुरी में साहित्य के सृजन एह शताब्दी का उत्तरार्द्ध में गति पकड़लसि बाकिर अतने अवधि में ऊ अपना जन आ माटी से गाढ़ नाता जोड़के सोझा आइल। एह में आदर्श आ यथार्थ के गंगा-जमुनी संगम ओही सहजता से भइल बा, जवन सहजता भोजपुरिया लोक के खासियत हवे। छलांक पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छलांग लगावत भोजपुरी साहित्य आज संसार के समृद्ध आ विकसित भषन का सोझा अपना वैचारिकता के आत्मविश्वास से भरल-पूरल माथ ऊँचा कइले ठाढ़ बा ।

अगिला सदी में कई एक तरह के चुनौती आई । आज जनसंख्या घटावे के हर संभव उपाय कइल जात बा यानी जन्मदर कम से कम रही। चिकित्सा-सुविधा के चलते लोग के औसत आयु बढ़ जाई यानी मृत्युदर घट जाई । एह से साफ बा कि अगिला पचीस-तीस साल में समाज में लड़िकन के संख्या कम रही आ बूढ़वन के संख्या बढ़त जाई । लड़िका कम यानी कि जवानो कम होइहें त श्रम-शक्ति घटी आ सरकारी बजटो पर एकर असर पड़ी काहे कि टैक्सदाता कम होइहें बाकिर पेन्सन पावेवाला ढेर । बीसवीं सदी नाभकीय परिवार के चलन चलवस त एकइसवीं सदी में एकरो लोप हो जाई काहे कि एकरो मूल में इहे भाव बा कि स्त्री आर्थिक दृष्टि से मर्द पर निर्भर करी आ विवाह जरूरी होई बाकिर विज्ञान त ई संभव कर दिहलस कि बच्चा खातिर विवाह-सम्बन्ध जरूरी नइखे आ ना स्त्री-पुरुष के जरूरत बा । पूरुष आ नारी के समानता भी समय के मांग बा । नारी के परतंत्रता खतम होत जाई । आ, सीमित परिवार के अवधारणा भी ध्वस्त होत जाई । ई वजह बनी पूरा सामाजिक व्यवस्था के छिन्न-भिन्न कर देवे के । मनुष्य के सामाजिक सरोकार के खातमा के मतलब होई मनुष्यता के लोप ।

दोसर भयानक बात ई होई कि अमीर लगातार अमीर बनत जाई आ गरीब आउर गरीब । बीसवीं सदी साबित कर देले बा कि अमीर में करुणा नइखे त गरीब में कर्मठता के अभाव बा । एकइसवीं सदी में अमीर-गरीब के खाई चौड़ा होत जाई जवना के माने होई करुणा आ कर्मठता दूनू के घोर अभाव । तब आदमी का लगे बाँची का ? आदमियत गुम हो जाई । यदि अइसन हो गइल त फेर साहित्य के का होई जे संवेदना के अभिव्यक्ति मानल जाला ? यदि अइसनका भय साँच हो जाई तबो भोजपुरी क्षेत्र खतरा से बाहर रहीं काहें कि पिछड़ला का ओजे से एजवाँ अमीरी नइखे यानी भोजपुरिहा के करुणा शेष रही । अइसहीं एजवाँ गरीबी त खूब बा बाकिर लोग कतहूँ जाके जीविका कमा लेबे के परम्परा चलावे में कोताही नइखे कइले या लोग में कर्मठता के भी पूरा-पूरी लोप ना होई । कहे के आशय ई बा कि भोज साहित्य का सोझा कवनो खतरा ना आई आ संवेदना आ कर्मठता के बाँचल-खु अंश ओकर सम्बर्द्धन करत रही । हम एह बात के हँसी भा व्यंग्य खातिर नइ कहत ।

राजनीति जिनगी से नैतिकता कम कर दिहलस आ जवना व्यवस्था के क खातिर ओकरा के महत्त्व दिहल गइल ओकरे के तूड़-ताड़ के फेंक दिहलस । बी सदी आदमी के राजनीतिक आजादी दिहलस बाकिर आज के रवैया जदि जारी र त एकइसवीं सदी सबका ला आर्थिक गुलामी लेके आई, कम से कम तीसरकी दुनिय के देशन खातिर त जरूरे । साहित्य का वैचारिक संघर्ष खातिर ई एगो नया आयाम मिली ।

विज्ञान वरदान बन सकत रहे बाकिर ओकर इश्तेमाल विकास का बदले विनाश खातिर जयादा हो रहल बा आ लाख चेतावनी का बादो एह इश्तेमाल का घटे के लक्षण नइखे बुझात । बीसवीं सदी के अन्त ले विज्ञान आपन सही भूमिका छोड़े-छोड़े लउकत बा बाकिर अगिली सदी में ऊ जरूरे वरदानी भूमिका से मुँह मोड़ ली, अगर साहित्य अपना ज़िद्द पर अड़ल रही त शायद ऊ आपन सही भूमिका निभा सकी आ मानवीय मूल्यन के पुनर्स्थापित करके मनुष्य आ समाज के आपन तलाश जारी राखी ।

–श्री भवन, महेन्द्रू, पटना–800 006

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिक्षा

एकइसवीं सदी गवाह बनी

☐ सुप्रिया तृप्ति

आजादी का पहिले गाँव-गँवई में बहुते स्कूल खुलले सन । मास्टर साहब खद्दर के धोती-कुरता पेन्हले आ टोपी लगवले जब गाँव से गुजरस त छोट-बड़ सभे नमस्कार करे, उनका के आदर-सम्मान से बइठावे आ उनुकर बात ध्यान से सुने । गाँव भर के लोग मिल के स्कूल के दीवार खड़ा कर दिहल, छप्पर छा दिहलस आ लड़िका इकट्ठा हो गइले । ठीक समय पर मास्टर साहब स्कूल में हाजिर आ पढ़ाई शुरू । पढ़े खातिर लड़िकन के ऊ समुझावस, डाँटस आ जरूरत पड़े त छड़ियो के इस्तेमाल करस । केहू उनका के ना रोके, ना टोके । ऊ गुरुजी रहले, ग्यान सिखावे वाला गुरुजी आ गुरु के मान त भगवान के समान मानल जाव । गुरुजी का कुछ नगद ना भेंटाय बाकिर उनका काम में नागा ना होखे । तब स्कूल गाँव के रहे आ पढ़ावल-सिखावल देश के सेवा रहे, आजादी के लड़ाई के एगो हिस्सा रहे ।

आजादी आइल । सभे खुश भइल । गाँव-गाँव से जुलूस निकलल । झंडा फहरल । अंगरेज गइले स । अपना लोग के सरकार बनल । बहुत उमेद रहे लोग का। सभे कवनो जादू-मंतर के उमेद करत रहे । आजादी मिलते जइसे जिनगी के सब दुख बिला जाई, कतहीं कवनो तकलीफ ना रह जाई । बाकिर कतहीं कवनो चमत्कार ना भइल । जे लोग आजादी के लड़ाई में पाछा रहे, ऊ आगे आ गइल, नेता बन गइल । मोह भंग होत गइल । निश्छल, ईमानदार लोग धकियावल गइल आ तिकड़मी लोग अगिला पाँति में ठाढ़ होत गइल । स्कूल के छप्पर खतम भइल आ दीवार ढह गइल । केहू आगे ना बढ़ल; गाँव के लोग जुटल ना काहे कि स्कूल अब गाँव के ना रहे, सरकार के रहे ।

मास्टर साहब अब कवनो सेवा-भाव से ना पढ़ावस । अब ऊ सरकारी कर्मचारी हवन । स्कूल कवनो गाछ तर चलेला । लड़िका आवेलन स पढ़े आ खेले लेसन, झगड़े लेसन, मारपीट करे लेसन । मास्टर साहब लोग का जब घर का काम से फुरसत होला त कवनो बेरा स्कूल आ जाला, बइठ के आपुस में गपशप कर लेला आ सँकराहे छुट्टी दके घरे चल जाला काहे कि बर-बाजार करे के होला भा माल-जाल के सानी-पानी करे के होला । गाँव के लोग कुछ ना पूछे, कुछ ना कहे, काहे कि स्कूल सरकार के हवे आ मास्टर साहब सरकारी हवन । आजादी का पचास बरिस बाद शिक्षा के मन्दिर दूकान बन गइले स भा गोशाला । मास्टर लोग लड़िकन के डँटे-मारे ना काहे कि ओकरा गारजियन से खुदे ठोका जाये के भय बनल रहेला ।

ई हाल खाली गाँवे के स्कूलन के नइखे-शहरों में सरकारी स्कूल अइसहीं बाड़ेसन, अइसहीं चलत बाड़ेसन । का प्राइमरी स्कूल होखे, हाई स्कूल होखे भा कालेज होखे । लड़िका बाड़ेसन, नाँव लिखाइल बा, पढ़ाई हो रहलि बा, परीक्षो लिआति बा आ रिजल्टो हो जात बा । सबकुछ अपने आप हो रहल बा । कतहीं कवनो बाधा नइखे । डिग्री नोंकरी खातिर जरूरी बा त डिग्री मिल जाता । नोंकरी कइसे मिली त ओकर बहुते रास्ता बा । जे रास्ता जानत बा ऊ उपाय कर लेत बा आ जे नइखे जानत ऊ टापत रह जाता । शिक्षा के ई हाल बा । भोजपुरी क्षेत्र में साक्षरता के प्रतिशत बढ़ल बा कागज में, सँचहूँ के ना ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिक्षा का अभाव मे जे हो सकत बा, उहे हालत बन गइल बा भोजपुरी समाज के। अधजल गगरी छलकत जाय। जे डिग्री पा लेले बा, ऊ श्रम के काम खातिर नाकाबिल हो गइल बा। गाँव ओकरा भावत नइखे आ गाँव में रह के एगो खेती पर ऊ कतना बोझ डालो। जीविका खातिर ऊ शहर किओर भागत बा। गाँव में रह जात बा ऊहे जे कतहीं नइखे जा सकत। ना सड़क बा, ना अस्पताल, ना पीये के पानी बा आ ना करे के काम। हँ, गाँवा-गाईं शराब के पाउच जरूर पहुँच गइल बा। राजनीति आपन रंग दिखा रहलि बा। लोग नफरत करे सीख गइल बा। घर-परिवार टूट के बिखर चुकल बा। ना ऊ खेत-खरिहान बा, ना कजरी-बिरहा-झूमर के तान। परब-तेवहार आवेला आ नोंह जँतले खसक जाला। पनरह अगस्त आ छबीस जनवरी के राष्ट्रीय पर्व भी स्कूलिहा-कवलेजिया लड़िका मना लेलन, सरकार भाषण दे देले, मंत्री आ नेता झंडा फहरा देलन-फेर सब कुछ शान्त।

लोग कहत बा कि देश के सोझा चरित्र के संकट विकट होके ठाढ़ बा। 'जस जस सुरसा बदन बढ़ावा, तस दुगुन कपि रूप दिखावा।' छल-प्रपंच आ भरनठ आचरण गरस लेले बा सउँसे समाज के। हिंसा, अपराध राजनीति के धरम हो गइल बा आ बेबसी में टुकुर-टुकुर ताकत रहे के जनता के धरम। लोग दरिद्र हो गइल बा - मन से दरिद्र। बीसंवी सदी का अन्त में लोग सीख चुकल बा कि लोकतंत्र में सब काम सरकार का जिम्मे बा आ सरकारो समझ लेले बिआ कि ओकरा कुछ नइखे करे के खाली भाषण आ आश्वासन देवे का अलावा। गाँव आपन पहिचान खो चुकल बा, लोग आपन चरित्र खो चुकल बा आ इहो तब जब कि सरकारी विकास के आन्ही गाँव तक अबहीं बतासो बन के नइखे पहुँचल। एही हालत में भोजपुरी समाज का एकइसवीं सदी में जाये के बा; जाहीं के पड़ी काहे कि बिना गइले कवनो चारा भी त नइखे।

त का एकइसवीं सदी में कवनो क्रान्ति हो जाई कि सभ क्षेत्र में पछुआइल भोजपुरी समाज एके हाली छलांग लगा के भारत के ओह क्षेत्र का लोगन का कदम-से-कदम मिला के चले लागी जहवाँ उद्योग, कृषि, शिक्षा आ स्वास्थ्य आदि के विकास तेज भइल बा ? लच्छन त नइखे लउकत बाकिर जिनगी उमेदे पर नू चलेले।

एकइसवीं सदी दुआर पर आ गइलि बा। हमनी का एकरा स्वागत खाति तइयार होखे के बा। अब समय नइखे कि हमनी ढेर तइयारी कर सकीं। भोजपुरी समाज एह भौतिक युग में गरीबी में, घोर गरीबी में साँस ले रहल बा बाकिर एगो ध[illegible] त बा एकरा लगे, जवन आउर केहू का लगे नइखे - बड़लो बा त ओतना नइखे जतन[illegible] हमनी का लगे बा। ई बा हमनी के सहजता, सहनशक्ति आ मुसीबत आ गइला प[illegible] ओकरा से लड़े के ताकत। ई बाँचल बा अबहीं। भोजपुरी माटी तप के, त्याग के आ[illegible] अनासक्ति के भूईं रहलि बा। बचल-खुचल विरासत जे कुछ हमनी का लगे बा ओकरा के सहेज-बटोर के हमनी का मन से एगो संकल्प लेवे के बा। ई संकल्प हमनी के विचार दी आ विचार के शक्तिपुंज क्रान्ति के पृष्ठभूमि दी। सद् विचार आचार के सँवारेला आ आचार व्यक्तित्व के निखारेला। देश के भटकाव से बचा के आगे बढ़ावे खातिर दिशा देवे के काम एही भोजपुरी समाज आ संस्कृति के निश्च्छल सहजता का भीतर से सम्पन्न होई। एह क्रान्ति के मशाल भोजपुरी साहित्य के समग्र विकास का तेल से जरी आ एकइसवीं सदी निस्सन्देह एह बात के गवाह बनी। एह सदी में सहज विश्वास के शक्ति जवन हियाव हमनी कं दी, उहे शिखर तक पहुँचे क्रे मार्ग प्रशस्त करी।

-गायत्री मन्दिर रोड, कंकड़बाग, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संगठन

एकइसवीं सदी में भोजपुरी संगठन, समाज आ साहित्य

□ ई॰ रंजन कुमार

सुप्रसिद्ध चिन्तक डॉ॰ रामविलास शर्मा जी हिन्दी के आज के दुरगति के कारणन पर विचार करत बतवलें बानीं कि (i) हिन्दी के लेखकन के कवनो मजबूत संगठन नइखे, (ii) हिन्दी भाषी लोग के मन में हिन्दी के प्रति लगाव नइखे, (iii) हिन्दीभाषी क्षेत्र अनेक राज्यन में बँटले बा जेसे एह में एकता के अभाव बा, (iv) हिन्दी क्षेत्र में पढ़े-गुने के आदम नइखे बन सकल, (v) हिन्दी आ ओकरा बोलियन का बीच में दुराव आ गइल बा, आदि । हालतक भोजपुरी, मैथिली, मगही, अवधी, ब्रजभाषा वगैरह के हिन्दी के बोली का रूप में मानल जाता रहल ह हालाँकि आज के हिन्दी भाषा आ एह बोलियन के भाषागत विशेषता आ प्रकृति में बहुत अन्तर रहल बा । शुरू में हिन्दी एह सभी लोकभाषा सबका साहित्य के अपनवलस, ओह से आपन भंडार भरलस बाकिर बीसवीं सदी का शुरूए से दूरी बढ़त गइल आ आज त हिन्दी के लोगन का इहो पता नइखे कि एह भषन में का लिखा रहल बा । आजादी का बाद गँवे-गँवे एह लोकभाषा सब में साहित्य-सृजन तेजी से होखे लागल आ एह सदी का अन्त में ई सभ स्वतंत्र भाषा का रूप में विकसित हो चुकल बा । एक ही भाषा-परिवार के सदस्य भइला का नाते आ देवनागरी लिपि अपना लेला का चलते हिन्दी से एकनी के अन्तर के नजरअन्दाज भले कर दिआव बाकिर अन्तर त बड़ले बा आ शायद आवे वाली सदी में बेशक ई अन्तर अउर साफ हो जाई ।

भोजपुरी अब एगो बोली भर नइखे रह गइल । एह में आजादी का बाद से [लग]ातार शिष्ट साहित्य के रचना हो रहल बा । उपन्यास, कविता, कहानी, [नि]बन्ध, लघुकथा, ललित निबन्ध, समीक्षा आदि हर विधा में काफी कुछ लिखाइल [...] आ पुस्तकन के प्रकाशन हो चुकल बा । प्रकाशन आ बिक्री के व्यवस्था ना रहला [...] आ घोर सरकारी उपेक्षा के कारण जतना कुछ लिखा चुकल बा ओकर बीस [प्र]तिशत से भी कम पुस्तक रूप में छपि के सोझा आ सकल बा । जेतने छपल बा ओकर मात्रा आ गुणवत्ता दुनू अइसन बा कि अब भोजपुरी के भाषा ना मानल जिद्द, अन्याय आ बेईमानी कइला का अलावा आउर कुछ ना कहल जाई ।

भोजपुरी भाषा अपना पाँव पर ठाढ़ होके चले लागलि बा । हिन्दी से एकरा कवनो विरोध नइखे । अबहीं तक भोजपुरी के कवनो साहित्यिक संगठन कवनो मंच से राष्ट्रभाषा हिन्दी का विरोध के स्वर नइखे उठवले बलुक एह क्षेत्र के लेखकन के अतना बड़ समूह हिन्दी के समृद्धि में लगातार लागल रहल बा कि अगर ओह कतार के निकाल दिहल जाव त सचहूँ हिन्दी के भंडार खाली-खाली लउके लागी । दक्षिण भारत में हिन्दी के जे विरोध हो रहल बा ऊ शुद्ध राजनीतिक कारण से बा आ राष्ट्रभाषा का रूप में हिन्दी प्रतिष्ठित नइखे हो पावत ई हिन्दी के विद्वान लोगन के संकुचित दृष्टिकोण, नेता लोग के उपेक्षा आ नौकरशाही के निहित स्वार्थ का कारण बा । भोजपुरी आदि भाषा सबके समुचित विकास ना केवल हिन्दी के समृद्धि आ मजबूती खातिर जरूरी बा, बलुक दक्षिण में एकरा विरोध के स्वर के कुन्द करे खातिर भी आवश्यक बा । हिन्दी विद्वानन के भोजपुरी विरोध जारी रही त शायद अगिली सदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में दूनू का बीचे नफरत आ विरोध के दीवार मत बन जाय । डॉ० शिवप्रसाद सिंह बातेबात सकरले रहस कि हमनी माई के धन से मउसी के घर भर रहल बानी । भरीं; बाकिर अइसन ना होखे कि सब धन देके माई भिखइन हो जाय आ अपना बहिने किहाँ ओकरा लउँड़ी बनके रह जाये के पड़े । बस, एही बात का अनेसा से तनी मन अकुलात बा आ अगर हिन्दी विद्वान लोग समय रहते एह तरफ ध्यान ना दी त फेर 'पीछे पछताये होत का जब चिड़िया चुग गई खेत ।'

भोजपुरी के विकास का राह में ऊहे सभ कारण रोड़ा बन के बिछल बा जवना के गिनती डॉ० शर्मा जी हिन्दी के दुरगति खातिर कइले बानीं । भोजपुरी एगो विशाल क्षेत्र में बोलल जाले । ई क्षेत्र बिहार, उत्तर प्रदेश, आ मध्य प्रदेश में फइलल बा । देश का विभिन्न नगरन आ महानगरन में जे लाखन भोजपुरीभाषी गरीब लोग आपन जीविका कमाये खातिर रह-बस गइल बा ओह लोग के छोड़ियो दिहल जाय त एह तीनू राज्यन में भोजपुरी भाषी लोग स्थायी रूप से निवास कर रहल बा आ जब कभी 'भोजपुरी राज्य' के स्थापना करे के बात उठी त एह तीनू राजयन पर एकर असर पड़ी । अइसे त बिहार, उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश तीनू 'बिमारू' राज्य गिनल जाला आ इहवाँ विकास के गति बहुते मन्द बा बाकि तीनू में समाहित 'भोजपुरी क्षेत्र' त घोर उपेक्षा आ अन्याय के शिकार रहल बा । नतीजा बा कि एह क्षेत्र में गरीबी ना घोर दरिद्रता बा । ना सड़क बा चले लायक, ना पानी बा पीये लायक, ना स्कूल बा पढ़े लायक, ना अस्पताल बा दवाई लायक; बस अभावे अभाव बा । ना उद्योग के विकास, ना खेती के विकास । गहिराई से सोचल जाय त एकरा पीछे बा अपना भाषा के तिरस्कार, मातृभाषा के अनादर । भारतेन्दु जी के कहनाम बा –

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल !"

जब जड़े ना रही तब फुलंगी आ फर के उमेद कइसे कइल जाई । भाषा का प्रति प्रेम जगावे खातिर, भोजपुरी साहित्य के लेखन-प्रकाशन खातिर एगो मजबूत संगठन के जरूरत महसूस होत रहे । आजादी का बाद छोट-बड़ अनेक संगठन बनले स आ काम कइल शुरू कइले स । सारन, चम्पारन, आरा, बलिया, बनारस सभ जगे सुगबुगी भइल । अंचल आ जिला स्तर पर संगठन के काम होखे लागल, भोजपुरी कवि सम्मेलनन के आयोजन होखे लागल । पत्र-पत्रिकन के प्रकाशन शु[illegible] भइल । 1973 में 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के गठन भइ[illegible] । एकर खूब शानदार स्वागत भइल । सगरो उछाह नजर आइल । एकर अधिवेश[illegible] बिहार, उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश में होत रहल बा । ई संगठन अपना के राजनी[illegible] से दूर रखलस आ नेता लोग से अलगे रह के सृजन के काम के आगे बढ़ावे पर जो[illegible] दिहलस । शुद्ध साहित्यिक आ सांस्कृतिक चेतना के विस्तार एकर उद्देश्य रहल । [illegible] अध्यक्ष रूप में डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय, डॉ० उदय नारायण तिवारी, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, डॉ० विवेकी राय जइसन लोग के आसीरबाद पवलस । लेखन-प्रकाशन के होश आ ज़ोश जागल । बिहार में भोजपुरी अकादमी स्थापित भइल । बिहार में बी० ए० आनर्स आ एम० ए० स्तर तक भोजपुरी के पढ़ाई होखे लागल । एकर अधिवेशन-स्थल भोजपुरी लेखकन के मिले-जुले आ संकल्प लेवे खातिर कुम्भ अइसन माहौल पैदा कइलस। शिकायतो पैदा भइल आ वर्चस्व के सवाल पर एगो अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन के अलग गठन भइल । फेर उत्तर प्रदेश में 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद' बनल आ एने कुछ साल पहिले 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' के स्थापना भइल । यानी भोजपुरी भाषा के आन्दोलन में एकता ना रहि गइल । आज अखिल भारतीय स्तर के तीन गो आ विश्वस्तर के दूगो संगठन बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोटा-मोटी सबके काम बा साल-दू साल पर एगो सालाना जलसा कइल आ कुछ प्रस्ताव पारित करके जहाँ-तहाँ भेज दिहल । चूँकि विश्व भोजपुरी सम्मेलन के मूल संस्था 'सेतु' (बम्बई) प्रभावशाली नौकरशाह लोग का हाथ में बा, एह से राज्य सरकार आ केन्द्रीय सरकार से ऊ लोग कुछ आर्थिक सहायता पवले बा । बाकिर दोसर कवनो संस्था एको पइसा के सरकारी अनुदान ना त पवले बा आ ना पावे के अबले कोशिश कइले बा । कुछ लोग सक्रिय होके सम्मेलन चलावत बा आ मतभेद भइला पर दोसर संस्था खोल के बइठ जात बा । एह में से केहू जनता तक नइखे पहुँचल । छोट-छोट दर्जनन संस्था भइला का बादो भोजपुरी आन्दोलन के संगठन कमजोर आ शिथिल बा । जबले ई जनसहयोग के व्यापक स्तर पर हासिल ना करी, तबले सही आन्दोलन के रूप में खड़ा ना होई ।

अधिकांश संस्थन के कवनो पहुँच राजनीति का गलियारा में नइखे । सब शुद्ध साहित्यिक आ सात्त्विक उद्देश्य के सँगे आगा बढ़ रहिल बा । एह में व्यक्तिगत वर्चस्व आ महत्त्वाकांक्षा का चलते बिखराव दिखाई देत बा । ई घातक बा । सबसे ढेर सक्रियता बिहार में अवस्थित भोजपुरी क्षेत्र में बा आ कुछ कामो इहाँ लउकत बा। उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश एह दिसाईं काफी पीछे बा । बहुत पहिले एक हाली स्व० सभापति सिंह का चलते बिहार के चालीस-पचास विधानसभासद लोग एकट्ठा भइल रहे आ भोजपुरी का बारे में दू तीन घंटा बइठ के विचार कइले रहे । ओकरा बाद एह दिशा में कुछ ना हो सकल । रोजी-रोटी से ना जुड़ला से भोजपुरी जनसाधारण के आकर्षित नइखे करत आ 'वोट के राजनीति' के मुद्दा ना बनला से कवनो दल के राजनेता लोग एकरा खातिर सक्रिय नइखे होत । एह खातिर एगो अइसन मजबूत संगठन के जरूरत बा जे साहित्यिक सृजन के गति बढ़ा के ओकरा के जनता तक पहुँचावे आ राजनेता लोग पर एगो दबाव गुट का रूप में काम करके ओह लोग के विवश करके भोजपुरी के जायज हक दिलवावे । बेशक ई काम जनसहयोगे से पूरा होई आ अलग-अलग संगठन चलावे वाला लोग एकवट के प्रयास करी त निश्चित सफलता मिली ।

बीसवीं सदी का अन्त में भोजपुरी संगठन के जे दिशाहीनता बा, ऊ एकइसवीं सदी में दूर हो जाई आ जनता का भी अपना अस्मिताबोध के महसूस करके आगे बढ़े के पड़ी । अपना हित आ अपना हक से बेखबर जनता भी खबरदार होई तबे जाके राजनीति के खेलाड़ी लोग एने ध्यान दी । भोजपुरी क्षेत्र देश के पहिलका राष्ट्रपति दिहलस, दू गो प्रधान मंत्री दिहलस, बिहार में महामाया बाबू से लेके राबड़ी देवी तक आधा दर्जन से ढेर मुख्यमंत्री दिहलस बाकिर पूरा क्षेत्र पिछड़ल के पिछड़ल रह गइल। व्यापक राष्ट्रीय सन्दर्भ में क्षेत्रीय समस्यन के घोर उपेक्षा भइल आ नतीजा भइल कि पन्द्रह करोड़ से ढेर लोग भूखल-पियासल अधनंगा होके जीये-मरे खातिर विवश बना दिहल गइल । एकइसवीं सदी में ई ना चली ।

भोजपुरी इलाका मूलरूप से ठेठ गाँवन के इलाका ह । आजादी का बाद गाँव के स्वरूप बहुते बदल चुकल बा । लोगन में बदलाव आ गइल बा । पहिनावा बदल चुकल बा । आपुसी रिश्ता में खटास आ गइल बा । अगिला-पछिला के झंझट गाँव के समरसता तूड़ दिहलस । शोषण में कमी आइल होखे, अइसन ना कहल जा सके। हँ; शोषक के जगह बदल गइल बा । नवधनिक वर्ग चाहे ऊ कवनो जाति के होखे आपन व्यवहार पहिले के जमीन्दार लोग का सुभाव से भी ढेर कठोर आ छलपूर्ण बना लेले बा । जब-जब चुनाव आवेला, जाति-भावना के आउर मजबूत बना जाला । देश के राजनीतिक दल, चाहे ऊ राष्ट्रीय होखे, क्षेत्रीय होखे या राज्यस्तरीय होखे हर क्षेत्र से ओही जाति के उम्मीदवार बनावेला जवना जाति के प्रतिशत उहवाँ ढेर होला। एह से जाति-पाँति के घेरा तूड़ल कठिन हो गइल बा । नेता लोग जीत के चल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाला आ क्षेत्र में रह जाला आपुस में जाति-पाँति का नाँव पर लड़े-झगड़े आ खून-खराबा करे वाला जनसमूह । भोजपुरी क्षेत्र के लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी दल-विहीन राजनीति के वकालत कइले रहीं । एकइसवीं सदी में मजबूर होके एह दिसाईं सोचे के पड़ी आ मूल्यविहीन सिद्धान्तहीन राजनीति के सबक सिखावे के पड़ी।

भोजपुरी सुभाव में सहजता अबहियों बा । मिजाज में सामन्तवादी प्रवृति के ज़ोर घटल बा बाकिर तेवर अबहियों अर्द्धसामन्ती बा । ई सामन्त जरूरी नइखे कि केहू ऊँचे जाति के आदमी होखे । ई कवनो जाति के दबंग आ आर्थिक दृष्टि से मजबूत सदस्य हो सकत बा, केहू नौकरशाह हो सकत बा, भा केहू अपराधी हो सकत बा । लोग के रोजी-रोटी खातिर दोसरा राज्यन में भागे के पड़त बा । गाँव में अब बिआहो-शादी का बेरा पहिले के लोकगीतन के धुन नइखे सुनात । सोहर, झूमर, कजरी, बिरहा, निरगुन, गावे वाला लोग नइखे लउकत । होली गवात नइखे। रीति-रिवाज आ परब-तेवहार त औरत लोग केहुंग जोगा रहल बा । बेटा बाप पर तरनात बा, नवही बूढ़वन के गूरेरत बाड़न आ भाई भाई के हक मारे में लागल बा। परिवार टूट रहल बा । कमासुत लोग के बीबी हुकुम चलावति बा । पढ़ल-लिखल लोग शहर धरत बा, बरियार अपढ़ लोग मजूरी करे पंजाब भागत बा । गाँव में जे बाँचल रह जाता, ऊहो कए तरह का मीन-मेख में पड़ल बा । भोजपुरी समाज बदल रहल बा, तेजी से बदल रहल बा बाकिर बदलाव दिशाहीन बा, रचनात्मक नइखे ।

एह हालत में समाज के बनावे-सँवारे के जिम्मेदारी साहित्य के होला । विचारक लोग, सन्त-महात्मा लोग का तप-त्याग से एह दिशा मे लागे के पड़ी । भोजपुरी क्षेत्र सन्तन के क्षेत्र रहल बा । वैदिक युग से आज ले एगो परम्परा चलल आइल बा । आजो लोग बा । एह लोग का हिम्मत दिखावे के पड़ी । लेखक-कलाकार लोगन का आगे बढ़के एह दिशाहीनता किओर अग्रसर समुदाय के पहिले दिशाबोध देवे के पड़ी । नया सन्दर्भ से जुट के काम करे के पड़ी । साहित्य-मनीषि लोगन का नैतिक मूल्यन के स्थापित करे खातिर लिखे के पड़ी आ अपना बात के जन-जन तक ले जाये के पड़ी । साहित्य समाज के खाली दरपन ना हवे, साहित्य समाज के नियामक ह, निर्माता ह । एकइसवीं सदी में भोजपुरी साहित्य अपना एही भूमिका के तलाश ली आ भोजपुरी समाज अपना तेवर-मिजाज के विकास का सँगे जोड़े में सफल होई ।

समाज के निचला तबका अपना भाषा आ संस्कृति के सच्चा वाहक होला । उच्च वर्ग त अपना मिजाज के नीति के ऊपर बूझेला । मध्यम वर्ग नकलची हवे आ अनुकरण आन्हर खानी करके तोष पावेला । ई निम्न वर्ग के लोग गाँव में रहे, देश का कवनो कोना में कमाये जाव भा मारिशस, सूरीनाम में जाके मजूरी करे बाकिर अपना बोली, संस्कृति आ सुभाव के जोगवले रहेला । एही वर्ग के जगावे के काम होई अगिली सदी में । भोजपुरी साहित्य के सृजन एही वर्ग के ध्यान में रख के होई आ ओकर पाठको इहे वर्ग होई । उच्च वर्ग आ मध्यम वर्ग के अधिकांश भाग विदेशी विकास का चकाचौंध में रही बाकिर निम्नवर्ग आ मेहनतकश लोग भोजपुरी के झंडा लहराई काहे कि ई ओकरा अस्मिता आ हक के सही पहिचान बनी ।

– कुमार एण्ड कुमार पब्लिशर्स (प्रा०) लि०

76, सी० एच० बी० एस०, थर्ड लेआउट,

विजयनगर, बंगलोर- 560040

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.